देखल-परेखल

देखल-परेखल

(संकलित लेख)

कीर्तिनाथ झा

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-42-0

देखल-परेखल

© कीर्तिनाथ झा

पहिल संस्करण (सजिल्द): 2022

मूल्य : 300.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फोन : +91-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : वंदना तोमर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

DEKHAL-PAREKHAL (A Collection of essays in Maithili)
by Kirtinath Jha
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 300.00

'कीर्तिनाथक आत्मालाप'क ओहि परिचित/अपरिचित
पाठक लोकनिक हेतु, जे हमर 'ब्लॉग' पढ़ि
हमरा निरंतर प्रेरित करैत छथि।

'ब्लॉग' आ 'ब्लॉग'क संकलनक औचित्य

संवाद मनुष्यक मूलभूत प्रवृत्ति थिकैक। परिवार वा समाज सँ मनुष्यक निरंतर संवाद स्वाभाविक थिक। मुदा, मनुष्य जखन एसगरो रहैत अछि दिन-दुनियाक घटनाक प्रति ओकर मन मे एकांत संवाद चलिते रहैछ। संवादक ई दोसर आयाम मनकथा कहबैछ। मुदा, एहि मनकथाक विषय मे लोक वृहत्तर समाज सँ कोना संवाद स्थापित करत? इंटरनेटक युग मे 'ब्लॉग' नामक एकटा एहन सार्वजनिक आ विश्वव्यापी विधाक जन्म भेल जकर माध्यम सँ बिना किछु व्यय केने, केओ अपन विचार केँ इंटरनेटक अपन व्यक्तिगत पटल- ब्लॉग- पर अपन सुविधा आ समयानुसार, व्यक्त कय सकैछ। एहि ले ने पत्र -पत्रिकाक आवश्यकता आ ने संपादकक द्वारा लेख अस्वीकार हेबाक भय। विषय-वस्तु आ लेख जँ नीक हेतैक, तँ, विश्व भरिक पाठक अनेरे पढ़त। लेख जँ पाठक केँ आकृष्ट नहि केलकैक तँ सेहो बुझब कठिन नहि। हमरो हेतु 'कीर्तिनाथक आत्मालाप' (kirtinath.blogspot.com) नामक 'ब्लॉग्स्पॉट' एहने व्यक्तिगत माध्यम थिक, जाहि पर पछिला दस वर्ष मे हम विभिन्न विषयक डेढ़ सौ सँ बेसी लेख लीखि कय प्रकाशित केने छी। हमरा आश्चर्य आ हर्ष दुनू अछि, जे एखन धरि एहि ब्लॉग केर लेख सबहक पन्ना केँ पाठक लोकनि करीब 89000 बेर उनटौलनि-ए! किछु लेख पढ़ि पाठक लोकनि प्रशंसा सेहो केलनि, बहुतो लेख विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशितो भ' गेल। एहि लेख सब केँ पढ़निहार बहुतो पाठक भारतीय छथि। मुदा, ओहि सँ कतेको गुणा बेसी पाठक समुद्रपारक छथि। ईहो आश्चर्यक विषय थिक। हम तँ एतबे सँ प्रसन्न छलहुँ। किन्तु, मित्र केदार कानन एतबे सँ संतुष्ट नहि भेलाह। अस्तु, हुनके प्रेरणा स्वरुप ई पोथी अहाँक आगाँ अछि। एहि मे संकलित लेख, 'जखन जे फुरल'—जकाँ लिखल गेल अछि। तें, ई लेख सब अहाँलोकनि केँ नीक लागत वा नहि हमरा तकर एको रत्ती भाँज नहि; हम तँ प्रवृत्तिए लिखैत छी। मुदा, छपल पोथीक प्रशंसा ककरा नीक नहि लगतैक! तथापि, 'कीर्तिनाथक आत्मालाप' सँ संकलित हमर लेख सबहक ई पोथी जँ अहाँ सब केँ नीक लागल तँ तकर श्रेय श्री केदार काननक थिकनि, कारण पुस्तक प्रकाशनक प्रेरक वएह थिकाह। प्रकाशनोक भार वएह लेलनि, तेँ ओ धन्यवादक पात्र सेहो थिकाह। मुदा, लेख सब मे व्यक्त विचारक, आ प्रस्तुत सामग्रीक सबहक, दायित्व निश्चय हमर थिक। पाठकक प्रतिक्रिया हमरा प्रेरणा दैछ, तेँ, ओकर प्रतीक्षा तँ रहबे करत। एतद्धि।

03 जनवरी 2021 **कीर्तिनाथ झा**

पांडिचेरी

अनुक्रम

'ब्लॉग' आ 'ब्लॉग'क संकलनक औचित्य VII

परिवर्तन जीवनक रस थिक 11
बाबा, सोहारी क्या होता है? 17
मिथिलांचलक रामलीला 22
अहाँ बिल गेट्स नहि थिकहुँ! 27
आयल फोन, हेड़ायल मनुक्ख 30
सोशलमीडिया आ साहित्य 33
ओझा-गुणी, भगता आ भाव 35
चिट्ठी इतिहास भए गेल 38
मैथिली केँ जियाकय कोना राखब 40
प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थिति 46
मैथिली मे लिखबाक औचित्य 50
मैथिलीक पोथीक बिक्रीक समस्या 54
पोथी पकवान नहि छियैक 58
मैथिली आ तमिलक बीच भाषिक सेतुक निर्माण 60
पत्र-पत्रिका आ सम्पादकीय दायित्व 62
पत्रकारिताक लक्ष्मणरेखा 65
साहित्य आ शिष्टाचार 67
समालोचना आ पाठकीय दृष्टि 70
भूमिका लिखबाक दिन 73
वर्तमान सामाजिक परिदृश्य मे विद्यापतिक प्रासंगिकता 78
विद्यापतिक पुरुष परीक्षा सँ दू गोट रोचक कथा 81
तिरुवल्लुवर आ किरणजी 84

किरणजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक अपरिचित पक्ष 87
मधुपजी हमरा किएक मन पड़ैत छथि 91
निनानबेक पूर वयस मे 'शब्द-संधान'
लिखबाक योजना करैत गोविन्द झा 93
दू टा विन्दु, दू टा विचार 96
डा. उमेश झाक भोजपुरी 'गीता भाव प्रकाश' 99
माताक अविस्मरणीय स्पर्श 103
हमर पिता स्व. तारानाथ झा : साधारण लोक, असाधारण विचार 105
नेनपनक स्मृति 107
हमरा गाम किएक मन पड़ैत अछि 109
मिथिलांचलक शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त अछि 112
हमर गाम-अवाम, आ आम 116
गुरुवर स्व. जीव नारायण दास 121
लंगूर नहितन! 123
फेसबुक फिजिशियन 127

परिवर्तन जीवनक रस थिक

गाम छोड़ला हमरा लगभग आधा शताब्दी भ' गेल। एहि बीच मे हमरा-सन अनेको प्रवासी केँ गाम मे रुचि जगलनि-ए। कतेको लेखक लोकनि गामक संबंधी अपन संस्मरण आ गाम केहन होअय ताहि पर विचार प्रस्तुत केलनि-ए। हमरा यद्यपि गाम छोड़ला बहुत दिन अवश्य भ' गेल किन्तु, हम मोटा-मोटी प्रतिवर्ष गाम जाइते छी। तथापि, एहि बेरुक यात्रा मे हमरा अचानक अनेक एहन परिवर्तन देखबा मे आयल अछि, जे प्राय: चारिओ-पाँच वर्ष पूर्व नहि रहैक। कहैत छैक, 'Change is the salt of life' अर्थात्, परिवर्तन जीवनक नोन थिक! परिवर्तनक बिना जीवन की! अस्तु, एहि लेख मे गामक परिवर्तन केँ यथावत् प्रस्तुत करैत छी। देखल यथार्थक विवेचना जकरा जेना नीक लागनि, करथि। ने सब परिवर्तन नीक, ने सब परिवर्तन बेजाय। तेँ, देखी कोन परिवर्तन सँ समाज सबल भेल आ कोन परिवर्तन सँ नागरिकक जीवन कठिन भेलैये।

एखन शरद ऋतु अछि, मौसम अनुकूल छैक। हथिया नक्षत्र मे बरखा नहि भेला सँ जँ एक दिस धान-पानिक नोकसान भेलैये, तँ दोसर दिस एहि सँ, दुर्गापूजाक अवधि मे गाम थाल-खीच-कादो सँ बंचल अछि। तथापि, हथिया सँ पहिलुका बरखा सँ खेत-खरिहान आ गाछ वृक्ष मे हरियरी छैक। काल्हिए नेयार कयल जे भोरे 4.30 बजे टहलान ले जाइ। शिबू भाइ संग हेताह। हमर आवास सँ करीब 200 मीटर पर शिबू भाइक घर छनि। शिबू भाइ हमर लड़कपनक अवधिक सामाजिक गार्जियन, आ संगी दुनू थिकाह; ओहि युग मे परिवार आ सामाजिक परिधि पैघ होइत छलैक; विद्यार्थी पर परिवारक सदस्य सँ इतर, वयस आ सामाजिक संबंध मे पैघ पड़ोसिया लोकनिक गार्जियनी सामाजिक दायित्व बूझल जाइत छलैक। पुरान सामाजिक संबंध हमरा लोकनिक बीचक आत्मीयता केँ एखनहुँ जोगा कय रखने अछि। अत:, आइ हमरा लोकनि दुनू गोटे संगे मॉर्निंग-वाक पर विदा भेल छी। एखन पौ नहि फाटल

छैक। किन्तु, प्रत्येक गली-कूचा मे कंक्रीटक सड़क भेने खाधि मे खसबाक भय नहि। अनेरुआ कुकूर खेहारि सकैत अछि। ताहि लेल सावधान छीहे। किन्तु, मशीनीकरण आ बदलैत जीवन पद्धतिक कारण ब्लड-प्रेशर, डायबिटीज आ मोटापा-सन life style diseaseक कारण लोक सजग भेल। तैँ, आब गाम मे ततेक लोक ने भोर मे टहलब शुरू केलक अछि, जे लोकक आबाजाही कुकूर सब लेल रेहल खेहल भ' गेलैये! आब समाजक अभिजात्य वर्ग मे नारि लोकनिक घर सँ बहरेबाक पहिलुक वर्जना सेहो नहि छैक। अस्तु, पहिलुक परिपाटीक विपरीत, आब जकरा रुचि आ आवश्यकता छैक, भोरुका टहलान पर बहराइत अछि। हँ, भोरे उठि विदेश्वर स्थान जयबावलाक संख्या मे कमी अवश्य भेलैये। अर्थात्, पहिने भोरे-भोर विदेश्वरक दर्शन जे मॉर्निंग-वाकक व्याज छलैक ताहि मे ह्रास भेलैये।

अवामक पुबारिटोल, मदनपुर। ग्रामदेवता, लक्ष्मीनारायणक परिसरक समीप प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्रिक आयोजन होइत अछि; ई हमरा गामक दू टा समानान्तर पूजा मे सँ दोसर थिक। हमरालोकनि एतय पहुँचलहुँ-ए। भोरक करीब पौने पाँच बाजल छैक। लक्ष्मीनारायणक पट खुजबा मे एखन विलम्ब छैक। दुर्गाक पट सेहो बंदे छनि। किन्तु, रंगमंच पर हिंदी-मैथिली-भोजपुरी गीत-संगीत-नाटकक रंगारंग कार्यक्रम चालू अछि। मंचक आगाँ भूमि पर गोटेक सौ दर्शक- नारि, पुरुष आ नेनासब। बहुतो अपना संग आनल पटिया, चटिया, बोरा वा चद्दरि पर पटोटन देने निभेर निन्न छथि। कलाकार लोकनि मे केवल पुरुष। बजनियाँ-गायक, नर्तक, अभिनेता आ अभिनेत्रीक सामूहिक दल। दर्शक लोकनि मे प्राय: वएह वर्ग जे एखन धरि टेलीविजन आ मोबाइल फोनपर सिनेमा देखबा सँ वंचित अछि। एहू गाम मे मजदूर वर्गक खढ़ सँ छारल घर पर कुम्हड़-कदीमाक लत्तीक बीच डिश टीवीक ऐन्टेना आ बिजुलीक कनेक्सनक लेड पाइप कोनो अजगुत नहि। तैँ, जाहि गति सँ टीवी आ मोबाइल फोनक प्रसार भ' रहल छैक, अगिला समय मे एहू नाच-गानक की गति हेतैक, कहब मुश्किल। गाम मे, स्कूल-कालेज मे पढ़ैत विद्यार्थी लोकनि गाम मे आब कोनो नाटक-रंगमंचक आयोजन नहिए करैत छथि। किन्तु, मजदूर वर्गक दवाबपर नचनियाँ लोकनिक ई दल सब दुर्गा पूजा मे एखन धरि बजाओल जाइत छथि। लक्ष्मीनारायण मन्दिरक समीप वयसाहु, किन्तु, शरीरें युवक, सौ-दू सौ साल पुरान पीपरक गाछ लगक जाहि फुलवारी मे पहिने रामलीला होइत छलैक आ स्कूलक विद्यार्थी सब करिया-झुम्मरि, रुमाल चोर, आ बुढ़िया कबड्डी खेलाइत छल, ओतय बरखाक पानि भरल छैक। बामा कात जटही पोखरिक पानि ओहने शान्त अछि जेहन अहल भोर

मे हेबाक चाहियैक। हमरा सबहक नेनपन मे जटही पोखरि भय आ आतंकक केन्द्र छल। स्कूलक विद्यार्थीसब बिसरियो कय जटही पोखरि मे पयर नहि दैत छल। धीया-पूता लोकनिक बीच किंवदन्ती रहैक जे जटही मे गोहि नेना सबहक पयर पकड़ि पानि मे झीकि लैत छैक! सुनल अछि, कोनो समय मे अकाल सँ मारल जाट सब एहि गाओं मे आयल छल। भूखल मजदूर केँ मजदूरीक अवसर दए मनुखक प्राण रक्षा ओहि समय मे पुण्य बूझल जाइत छलैक। अकाल सँ मारल जाट लोकनि द्वारा खुनल वएह पोखरि, जटही पोखरि थिक।

पोखरि सँ आगू हमरा लोकनि अवाम आ पोखरिभिंडा गामक बीचक बाध मे पहुँचैत छी। एतय एखनहुँ अन्हारे छैक। सम्पूर्ण इलाका धानक बाधक उपर घनीभूत धोन्हि मे रहस्यमय प्रतीत होइत अछि। किन्तु, सड़कपर टहलान कयनिहारक बढ़िया आबाजाही। ताहि मे नारि, पुरुष, स्कूलक कन्या सब सेहो। ई एहि इलाका मे भयमुक्तताक द्योतक थिक। हमरा ताहि सँ गौरव आ संतोष, दुनूक बोध होइछ।

पछिला कतेक वर्ष सँ जखन हम दुर्गापूजा-दसमीक बीच गाम मे रहैत छी, अपने दरबज्जापर एक कोठली मे आँखिक रोगी सब केँ नि:शुल्क चिकित्सा करैत छियनि। आइ भोर मे गामक पसारी -व्यवसाय सँ हजाम- महेश्वर ठाकुर अपन रोगक जाँच लेल अयलाह। नेनपने सँ महेश्वरक आँखि खराब छनि; बहुत दिन पूर्व अलीगढ़ मे जाँच भेल रहनि। हमर अयबाक खबरि भेलनि, तँ, एकबेर सलाह लेब उचित बुझलनि। रोग पुरान छनि, आ आँखिक स्नायु दुर्बल। तेँ कोनो औषध वा चश्मा मे फेर-बदलकेर आवश्यकता नहि। महेश्वर ठाकुर पचपनक धक्का मे छथि। ई वयस मे जहिना प्रौढ़ तहिना विचार मे परिपक्व आ अभिव्यक्ति मे निधोख छथि, से गप्प सप्प मे बुझना गेल। हिनक गप्प करबाक भाषा आ शैली हमरा आकृष्ट केलक। आइ एतय ई असगरे रोगी छथि। अस्तु, हम हिनका संग गप्प करय लगैत छी। गप्प क्रम मे महेश्वर स्वत: कतेक गप्प कहलनि, 'एहिबेर पुबारिटोल लग खतबेटोलीक एक टा लड़कीक बभनटोलीक एक टा छौड़ाक संग दोस्ती भ' गेलैक। छौड़ी केँ की भेलैक, की नहि। दुनू गोटे विदेश्वर स्थान मे एक दोसरा केँ माला पहिरा विवाह करबा लेल पहुँचि गेल छल। मुदा, बाभन लोकनिक धुरफंदी तँ बुझिते छियैक, ओ सब पुलिस बजा लेलकै। लड़िका-लड़की नाबालिग रहै। दुनू पकड़ल गेल आ जहल मे अछि।'

'जहलेक डरे अहूँक टोलक नथुनिया सेहो मास-डेढ़-मास गाम सँ भागल छल।' हम पुछलियनि, 'से की? नथुनिया तँ हमरा संगे लक्ष्मीनारायण स्थान मे एके क्लास मे पढ़ैत छल। काल्हि तँ भेंट करय आयलो छल। कहाँ किछु कहलक।'

'की कहत। ओ तँ बचि गेल। नथुनियाक बेटा आ घुरनाक बेटी हैदराबाद मे कोर्ट मे बियाह क' लेलकै। नथुनिया केँ दान-दहेज तँ की भेटितैक, उलटे घुरना कस्ती क' देलकैक, जे, नथुनियाक बेटा हमर बेटी केँ भगाक' ल' गेल। लैड़िकी बैंक मे काज करै छलैक। बस, नथुनिया पतनुकान ल' लेलक। सुनै छियै बेटा कहबो केलकैक, तोरा भगैक कोन काज। मुदा, पुलिसक डर तँ बुझिते छियैक। पछाति, कनिया-वर गाम आयल आ सकतपुर थाना मे अपन विवाहक दस्तावेज देखौलकै तँ हारि कय दुनू गोटे समधि मिलान केलक।'

हम पुछलियनि, 'अहाँ कहैत छी दुनू अमाते थिक, तखन विवाह मे कोन बाधा?'

'बात से नहि ने छैक, लड़की बैंक मे कमाइ छैक, आ नथुनियाक बेटा के एखन नियामिकी किछु छैक नहि।'

हम पुछलियनि, 'एखने टहलिक' अबैत रही तँ अहाँ लोकनिक दालानपर गोड़ चारिएक-पाँचेक लड़िका-लड़की केँ किताब-कॉपी लेने बैसल देखलियैक। एक टा कन्या तँ कहलक नौंवा वर्ग मे झंझारपुरक टिबड़ेवाल स्कूल मे पढ़ैत अछि। हमरा तँ गौरवक बोध भेल। हमहूँ टिबड़ेवाल स्कूल मे पढ़ने छी। तहिया तँ एहि गामक कोनो कन्या पढ़बा लेल झंझारपुर नहि जाइत छल। हमर जेठि बहिन पाँचवाँ सँ आगू नहि पढ़ि सकलीह। कारण छठा वर्गक पढ़ाइ उजान मे छलैक। आ उजान कुटुंब लोकनिक गाम रहै। ओतय जैतथि से परिवार मे विचार नहि भेलै।'

महेश्वर ठाकुर एहि पर आओर खुजलाह, 'डाक्टर साहेब, ओ हमर दालान कहाँ छी। हम तँ सोनारक घर लग घर बनौने छी। ओ तँ, परमेश्वर साहू नहि रहै, सूबेलालक बेटा, तकर दालान छियै। ओकरे सार, अपन गाम सँ भागल तँ झंझारपुर मे रहैए, तँ, एतय पढ़बइ ले अबैये।'

'गाम सँ भागल?'

'तँ। भागत नहि तँ करत की। बियाह आन जाति मे केलक। तँ घर-परिवार, दर दियाद कहलकै, 'जाति सँ बाहरे भ' गेलैं, तँ, एतय जगह नहि भेटतउ। हारिक' बहिन-बहिनोइ सँ भात-पानि रखने अछि।'

एहि सँ एतबा तँ बुझबा मे आबय लागल जे जाति-पांतिक देबाल ढहि रहल छैक, किन्तु,जाति-पांतिक सीमा रेखा एखनहुँ माटि नहि मिललैये। ततबे नहि, ढहइत देबाल तर दबल लोक एखनहुँ समाज मे घायल-जकाँ जीबाक त्रासदी भोगि रहल अछि। सत्यत:, परम्परा आ रूढ़िक जड़ि समाज मे बहुत तर धरि जाइत छैक, जकरा सहजहि उकन्नन करब सम्भव नहि।

महेश्वर ठाकुरक रोग slow degenerative disease* थिकनि। एहि मे

* एहन रोग अनायास मंद-मंद बढ़ैत जाइछ।

सुधारक कोनो आशा नहि। किन्तु, तुरते आँखिक रोग चल जेतनि तेहनो नहि। तैँ भयभीत भेला सँ की लाभ। असत्य भरोस देब सेहो डाक्टरी अनुशासनक विरुद्ध। अस्तु, जे चश्मा छनि, उपयोग करथु आ स्वस्थ जीवन पद्धति अपनाबथु। बीड़ी-सिकरेट, शराब-दारू नहि पिबैत छथि, से नीक गप्प। हिनक दू टा बेटा बम्बई मे सैलून चलबैत छनि। ओकर सबहक परिवार एत्तहि छैक। ओएह सब अपन कमाइ सँ कोठा-सोफा बन्हलक-ए। आब जेहो पौनी-पसारी गाम मे अछि, तकरो गृहस्थ सबहक घर सँ वार्षिक कमाइ भेटब बन्न भ' गेलैये। मदनपुरक दू चारि घर सँ किछु भेटि जाइत छनि। बेसी लोक नगदीए द' कय केश-दाढ़ी कटबैत अछि। महेश्वर ठाकुर केश-दाढ़ी कटयबाक फिक्स रेट नहि रखने छथि। जे जतबा दए देलक, ल' लेलनि। किन्तु, तेसर बेटा गामक पसिखाना मे सैलून खोलने छनि। दिन मे हजार-पाँच सौ कमा लैत अछि। तैँ, खुशी छथि। कहलनि, 'हमरा लोकनि बरही लोकनि सँ नीक हालत मे छी। पसार, हर-हराठक कारबार तँ बन्ने छैक। तखन केओ-केओ किछु-किछु लकड़ीक कारबार करइए।' ठीके। हमहू देखैत छियैक, हमर पड़ोसी आ बाल-संगी राजेन्द्र ठाकुरक धीया-पुता पढ़ि-लीखि गाओं आ पारंपरिक व्यवसाय सँ दूर भ' गेल छनि।

आब दिन उठि गेलैये। किछु रोगी सब सामने ठाढ़ अछि। महेश्वर ठाकुर सेहो जेबा ले उठलाह। दोसर रोगी आबि कय सामने बैसि गेलै। अस्तु, पुनः।

परिवर्तन जीवनक रस थिक। किन्तु, परिवर्तन केँ जीवन केँ बेरस करबाक शक्ति सेहो छैक। हम गाम प्रति वर्ष अबैत छी। आ एतुका कोनो परिवर्तन एके दिन मे नहि भेलैये। किन्तु, एतेक वर्ष मे हम आइ पहिले बेर परिवर्तनक लेखा-जोखा करबाले बैसलहुँ-ए।

अद्‌भुत लागत। आब गाम घरक सबसँ परिचित चिड़ै बगड़ा निपत्ता भ' गेल अछि। मैना तकलो पर नहि भेटल। गमैया कौआ बहुत कम। अद्‌भुत सुन्दर कलगी बाली कठखोधी कतय पाबी! गिद्ध विलुप्त भेलैये। किन्तु, तकर अनुमान घरक आसपास नहि भेटत। कारण, बस्तीक भीतर गिद्धक आयब पहिनो नहि रहैक। अकस्मात् जँ गिद्ध घर पर बैसि जाइत छलैक तँ परम विपत्ति। लोकक बाड़ी झाड़ी मे कतहु आलू-कोबी-टमाटरक खेती नहि देखैत छियैक। टोल-पड़ोस मे गाछपर वा खढ़क चारपर घेरा-सजमनि-कदीमा-कुम्हड़क लत्ती देखि सकैत छी। बस, ततबे। ई प्रायः वासभूमिक अभावक द्योतक थिक। वासभूमिक कमी भेलैये आ तैँ वासभूमिक दाम आकाश पहुँचि गेलैये। फलस्वरूप, लोक डबरा-चभच्चा धरि केँ भरि वास भूमि बना रहल अछि, तखन बाड़ी-झाड़ी कतय पाबी! गाम मे एक टा अओर अद्‌भुत-अजगुत देखबा मे अबैत अछि- बड़का-बड़का पुरान कलमबाग मे,

गाछक त'र, धानक जजात। देखि आश्चर्य चकित हयब सहजे।

बाहरक कमाइ सँ आयल संपत्ति आ प्रत्येक गली-कूचा मे कंक्रीटक सड़कक सहयोग सँ गाम मे मोटर वाहनक - मोटर कार, मोटर साइकिल, टेम्पो, ट्रैक्टरक-संख्या मे अभूतपूर्व वृद्धि भेलैये। एहि सँ जँ एक दिस जयबा-अयबा मे सुविधा भेलैये, तँ, दोसर दिस गामक शांति सेहो भंग भेलैये आ प्रदूषणक दानव आब शहर सँ गामो दिस अपन हाथ-पयर पसारैत देखबा मे आबि रहल अछि।

गाम मे वृद्ध आ बूढ़ पुरान लोकक बहुलताक अछैतो गाम मे ने हेल्थ सेंटर अछि आ ने हफ्ता मे एकोबेर सरकारी डाक्टर एतय अबैत छथि। राष्ट्रिय अन्धता निवारण अभियान (National Program for Control of Blindness) जे दक्षिण भारत मे सराहनीय काज करैत अछि तकर गतिविधि तँ एतय शून्ये अछि। अस्तु, आँखिक इलाज चाहे लोक प्राइवेट डॉक्टर सँ करबैत अछि, वा नेपाल मे लाहन, धरान, वा विराटनगर जाइत अछि। ग्लानिक गप्प थिक, नेपाल विश्वक न्यूनतम विकसित देशक श्रेणी मे परिगणित अछि! स्वास्थ्य सुविधाक अभाव गामक एहन समस्या थिक जाहि मे परिवर्तनक आस लोक केँ वर्षहु सँ छैक।

बदलैत समय मे गामक जैव विविधता घटल अछि। हमरा सबहक परिसर मे, जतय पहिने कम सँ कम आठ-दस प्रकारक नेबो, विविध प्रकारक लताम, हौरसा, करौनाक संग बड़हड़-सन जंगली फल अजस्र फड़ैत छल से आइ निर्मूल अछि। शरीफा आब गाम मे कतहु नहि भेटत। गरीब लोकक भोजन आ दक्षिण भारतक विशिष्ट अन्न मड़ुआ, गाम सँ तेना विलुप्त अछि, जे जितिया पाबनि लेल हमर पत्नी पांडिचेरी सँ मड़ुआक चिक्कस पटना ल' गेल छलीह। ज्ञातव्य थिक, मड़ुआक पौष्टिक प्राकृतिक कारण दक्षिण भारतक ग्रामीण इलाका मे परसौती केँ प्रसूतिक पछाति मड़ुआ-एक पातर हलुआ (कुड़) पथ्य मे देल जाइत छैक।

भगवान धर्म प्राण लोकक सहारा आ दबंग लोकक सहयोगी दुनू छथि। कतहुक जमीन दखल करबाक हो महावीरजीक झंडा गाड़ि दिऔक। हमरा लोकनिक स्मरण मे सादतनि सँ सोनपुरक फील्ड एहि इलाकाक एकमात्र फील्ड छल, जतय नहि जानि कतेको पीढ़ीक नेना आ युवक लोकनि फुटबौल सिखने आ खेलने हेताह। आब एहि फील्डक परिधि पर एकदिस एक टा पक्का मंदिर आ सामने दोसर दिस रंगमंच आ तेसर कोन पर सरकारी पानी-टंकी बनि चुकल अछि। माने, एहि ऐतिहासिक फुटबौल फील्डक हाथीक नाक मे चुट्टी लागि चुकल अछि। मानि कय चलू शीघ्रहि सोनपुर फील्ड सेहो परिवर्तनक पीड़ीपर बलि चढ़ि जायत आ क्रमश: सोनपुर फील्ड मोबाइल फोनपर फुटबौल खेलाइत पीढ़ीक स्मरण सँ विलीन भ' जायत।

बाबा, सोहारी क्या होता है?

एहि बेर अप्रैल मास मे गाम छोड़ना 44 वर्ष भ' जायत। मुदा मोटा-मोटी प्रतिवर्ष दसमी-दुर्गापूजा मे गाम जाइ छी। संयोग सँ एहि बेर दसमी-दुर्गापूजा मे गाम मे बेस जुटान भेल रहै। एकदिन भोरुक पहर, माँझ आँगन मे, धीया-पुता लोकनि जलखै ले जुटल रहथि। हम किनको जानिकय पुछलियनि, 'बाउ, अहाँ आओर सोहारी लेब?' उत्तर प्रत्यासिते भेटल, 'बाबा,सोहारी क्या होता है?'

संभव छैक, गाओं घर मे 'सोहारी' शब्द विलुप्त भ' गेल होइ, वा मिथिला सँ बाहर, हमर लम्बा प्रवासक अवधि मे गामक मैथिली हमर युगक मैथिली सँ भिन्न भ' गेल होइ। मुदा हमरा लोकनिक धीया-पुता मैथिली बाजब किएक छोड़ने जा रहल अछि? वा हमरा लोकनि धीयापुता सँ मैथिली मे बाजब किएक बन्न केने जाइत छी? की सोहारिए शब्द जकाँ क्रमश: मैथिली सेहो विलुप्त भ' जायत? ई प्रश्न हमरा लोकनि मे सँ कतेको केँ खेहारैत अछि, आ एहि प्रश्न पर अनेको विद्वान लोकनि अपन-अपन मत देने छथि। तथापि, मिथिलांचल सँ बाहर आ मिथिलांचलक भीतर,पढ़ल लिखल परिवार मे बोल-चाल मे मैथिलीक सिकुड़इत परिधिक कारण आ मैथिलीक भविष्यपर ओकर प्रतिकूल प्रभावपर एहि लेख मे विचार करब हमर इष्ट अछि। संगहि,एहि लेख मे हमर किछु व्यक्तिगत विचार सेहो भेटत।

मैथिलक ओ पीढ़ी जे मिथिलांचल मे पलल-बढ़ल अछि ओ मैथिली भले नहि बजैत हो मुदा, मैथिली जनैत नहि हयत से असंभव। तखन ई लोकनि मैथिली किएक नहि बजैत छथि? किछु गोटे तर्क देताह, पोथी तँ हिंदीए मे छैक। धीया-पुता केँ हिंदीक नीक ज्ञान हयब आवश्यक छैक। तेँ हिंदीए बाजय दियौक, हिंदी सिखबा मे सुविधा हेतैक। एक गोटे, मधुबनी मे कहलनि, 'समाज मे रहबाक अछि तँ हिंदी सिखहि पड़त।' एहि मे कोनो संदेह नहि जे, जँ स्कूली शिक्षा मातृभाषा मे होइतैक तँ मैथिलीक प्रयोग केँ बल भेटितैक आ मैथिली भाषी केँ एतेक प्रतिकूल परिस्थितिक सामना नहि करय पड़ितैक। मुदा मिथिलांचल मे मातृभाषा मैथिली मे शिक्षाक व्यवस्था हयत तकर एखन कोनो सम्भावना देखबा मे नहि अबैछ। किन्तु,

अपन घर-आँगन मे मैथिली बजबा मे कोन बाधा? मैथिली नहि बजबाक पाछू, प्राय:, अपन भाषाक प्रति हीन भावना निहित छैक। मैथिली बजला सँ अहाँ देहाती भुच्च बूझल जायब। हिंदी बजला सँ लोक शहरुआ बूझत, आ अंग्रेजी बजला सँ अहाँ 'कूल (cool)' कहायब। ततबे टा। मैथिली बजला सँ हिंदीक शुद्ध प्रयोग पर कोनो प्रतिकूल असर पड़ैत छैक से हम नहि मानैत छी। मैथिली बाजब सँ कोनो आन भाषा सिखबा मे कथमपि बाधा नहि होइछ। अशुद्ध भाषा दोषपूर्ण शिक्षा पद्धतिक प्रतिबिम्ब थिक। दोषपूर्ण शिक्षा-पद्धतिएक कारण उत्तर प्रदेश सन हिंदी-भाषी प्रदेशहुँ मे लिखित भाषा मे शुद्ध हिंदीक प्रयोग तकनहि भेटत।

बोलचाल मे मैथिली सँ विमुख मैथिल लोकनिक दोसर तर्क छनि, धीयापुताक सुविधा। माने, धीया-पुता कतेक भाषा सिखत? असल मे, अनुभव आ भाषा वैज्ञानिक लोकनिक मत मानी तँ, मातृभाषाक सीखब अनायास होइछ। संगहि, धीया-पुता मे नव-नव भाषा सिखबाक अद्‌भुत क्षमता होइत छैक; ई अनुभूत सत्य अछि। भारतीय सेना मे अपन नौकरीक 25 वर्षक अवधि मे हमरा मिथिलांचल तँ दूर, बिहारहु मे कहियो सेवाक अवसर नहि भेटल। मुदा, हमरा लोकनि घर-परिवार मे मैथिली छोड़ि आन कोनो भाषाक प्रयोगक आवश्यकता अनुभव नहि कयल। संगहि, इहो देखने छी जे मलयालम भाषी दम्पतिक अबोध नेनासब नेपाल मे ओहने सहजता सँ नेपाली बाजब सीखि लैछ, जेना नेपाली लोकनि। हँ, वयस्क मलयाली वा हिंदी भाषी लेल ई असंभव छनि। हमर अपने परिवार मे, अमेरिका मे जनमल, बरख तीनेक हमर दौहित्र, जहिना -तहिना, माय संगे मैथिली मे, पिताक संग हिंदी मे, अंग्रेजी भाषीक संग अंग्रेजी मे बजैक प्रयास करैत छलाह से देखल-सुनल अछि। हँ, समय-समय पर अंग्रेजी मे स्पेनिश भाषाक शब्द सेहो मिझरा जाइत छलनि। कारण, अमेरिका मे 'क्रेश' केर परिचारिका लोकनि नेना सबहक संगे स्पेनिश मे बजैत जाइत छलीह। अर्थात्, आरंभिक वर्ष मे भाषाक सीखब अनायास होइछ। ओहि लेल व्याकरण आ पोथीक काज नहि पड़ैत छैक। तँ नेनाक भाषा शिक्षा सहजता सँ होमय दियउ, मुदा, घर मे मैथिली अवश्य बाजू। अहाँ चकित भले होइ, नेना एकहि संग सब भाषा सीखि लेत।

मुदा, मैथिली किएक बाजू? सत्ते गप्प। मैथिली बजने कोन लाभ? असल मे, सब किछु मे सद्य: लाभ ताकब ने उचित, आ ने संभव। हमरा जनैत, मातृभाषा एक टा परिचय थिक। हमरा अपन भाषा अछि, सएह हमरा गौरवक बोध दैछ। एकर विपरीत, हमरा अपन भाषा अछि, मुदा, ओकर लिपि नहि छैक ताहि सँ हमरा हीनताक बोध अवश्य होइछ। कतेक केँ बुझेबैक, मैथिली केँ लिपि छलैक, मुदा, हमरा लोकनि ओकरा बोहा देल। मुदा, जे धन बोहा गेल, से बोहा गेल। मुदा ई विषयांतर भेल।

हमर अपन धीया-पुता जखन स्कूल -कालेज मे रहथि, कहथि, 'अपना भाइ-बहिन मे मैथिली मे गप्प केने हमरा लोकनि अप्पन गप्प अनका बूझय नहि दैत छियैक'! तेँ, हुनका लोकनि केँ अपन मातृभाषाक सद्यः लाभ बूझि पड़नि।

कतेक गोटे तर्क देताह। मैथिली कतेक गोटे बूझत। असल मे इहो एक टा भ्रान्ति थिक। मिथिला सँ आसाम, वा दरभंगा सँ दिल्ली चल जाउ। उत्तर मे नेपाल जाउ वा दक्षिणपूर्व मे कलकत्ता वा भुवनेश्वर दिस जाउ, मैथिली बुझनिहारक कमी नहि छैक। दिल्लीक कनाटप्लेस मे वा हरिनगर मे, वा चंडीगढ़ मे जँ अजस्र रिक्सा-रेड़ीबला मैथिल छथि तँ बंगलोर केर सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री आ तमिलनाडुकेर स्कूल कॉलेज सँ ल' कय भवन निर्माण धरिक क्षेत्र मे अजस्र मैथिल भेटताह। जे जतहि छथि, मैथिली बाजथि तँ मैथिली जीबैत रहतीह। अन्यथा, एखनुक वैश्वीकरणक बिहाड़ि मे प्रतिदिन अनेको भाषा उकन्नन भेल जा रहल अछि। मैथिलीक दुश्मनक तँ कमी नहि छैक, मैथिली केँ निर्मूल हेबा सँ मैथिली भाषिये बचा सकैत छी, अनका कोन गरज छैक। मैथिली बाजब तँ प्रायः आनो मैथिली बुझबाक प्रयास करत, बुझबाले बाध्यताक अनुभव करत। एहि सँ भाषाक समृद्धि संभव छैक। कारण, जँ-जँ लोक बुझत जे मैथिली भाषी गहिंकीक संख्या पैघ छैक, अपना बेगरतें, विभिन्न व्यवसाय सँ जुड़ल आनो व्यक्ति सब मैथिली बुझबाक प्रयास करत। मनाली जाउ, होटलक नाम बांग्ला मे लिखल भेटत, गुजराती भोजनक प्रचारक बैनर देखबैक। उदाहरणक कमी नहि छैक। चेन्नई मे जाउ लोक हिंदी केँ स्वीकार नहि करत। मुदा, सुदूर दक्षिण मे रामेश्वरम् (रामनाथपुरम्) चल जाउ, सब पंडा-पुरोहित हिंदी बजैत भेटत; पैसा दो, विभूति लो। माने, आन भाषा सिखने जीविका चलत, तँ अवश्य सीखब। हमरा लोकनि भाषा छोड़ैत चलब तँ के गुदानत। भाषाक प्रयोगें मैथिलक रूपें हमरा लोकनिक परिचय बनत; पैघ, सबल समूहक सबठाम आदर होइत छैक।

भिन्न-भिन्न प्रदेशक लोकक संग मैथिल लोकनिक विवाह-दानक चलनसारि सेहो बोल-चाल मे मैथिलीक घटैत प्रयोगक एक कारण भ' सकैत अछि। मुदा, ई भाषा केँ छोड़बाक उचित कारण नहि थिक। हमर पितामहीक मातृभाषा भोजपुरी रहनि। मुदा, मिथिलांचल मे आबि ओ मैथिलीओ सीखलनि आ हुनकर संतान लोकनि- हमर पिता, पित्ती लोकनि-भोजपुरियो सिखने छलाह; हमर पित्ती स्वर्गीय डा. उमेश झा केँ तँ भोजपुरी मे एहन दक्षता रहनि जे ओ भोजपुरी मे भगवद्गीताक पद्यानुवाद सेहो छपओलनि। हमरा लोकनिक परिवार मे दू भाषाक संयोग सँ दुनू भाषाक समृद्धि भेलै।

संभव अछि, किछु गोटे हिंदी आ अंग्रेजी बाजब केँ अपन प्रगतिगामी हयबाक प्रमाण मानैत होथि। मुदा, प्रत्येक प्रगतिगामी समाज अपन भाषाक समृद्धि लेल सन्नद्ध

रहल अछि। नहि तँ, अंग्रेजी भारत मे कोना जड़ि जमबैत, दक्षिण अमेरिका मे यूरोपीय भाषा कोना स्थानीय भाषा केँ समूल नष्ट कए दैत। हमरा लोकनिक पड़ोसे मे नेपाल मे देसी-भाषा फलि फूलि रहल अछि। तँ, शिक्षाक माध्यमक रूपें भलहि जाहि भाषाक प्रयोग करी, घर आँगन मे, धीयापुताक संग, चिट्ठी-पत्री मे मैथिली केँ नहि बिसरू। मातृभाषा अपन अस्मिता थिक, परिचय थिक, गौरव थिक । अंग्रेजी सीखब बाजब निर्विवाद बाध्यता थिक। हमरा ताहि सँ कोनो विरोध नहि। अंग्रेजी, हिंदी, वा आन जे कोनो भाषा आवश्यक हो सीखू, मुदा मातृभाषा केँ मरय नहि दियौक। संविधानक आठम अनुसूचीक स्थान वा साहित्य अकादेमीक पुरस्कार सरकारी सोंङर थिकैक, जनसाधारण द्वारा भाषाक प्रयोग भाषाक संजीवनी थिकैक। संजीवनीक श्रोत सुखयला सँ भाषा जीबैत रहत? जँ पुष्पित-पल्लवित मैथिली जीबैत रहती तँ हमरो लोकनि ओकर सघन छाया मे संतुष्टिक अनुभव करब। जँ मैथिली मरि गेलीह तँ, सरकारी मान्यता रहत, लोक केँ पुरस्कार भेटतैक, मुदा, मातृभाषा मैथिलीक सुख विलुप्त भ' जायत। सरकारी मान्यता तँ संस्कृतहु केँ छैक। मुदा, संस्कृत शास्त्र-पुराण धरि सीमित भ' चुकल अछि। विद्वान लोकनि पढ़ैत लिखैत छथि। मुदा संस्कृत आब ककर मातृभाषा थिक? आब ओकर गौरव केर गीत कतबो गाबी, पोखरिक जाठि सँ सघन छाहरिक आस असंगत थिक। मैथिली बाजू। मैथिली लीखू। हँ, अपन राज्य मे मैथिली मे प्राथमिक शिक्षा लेल प्रयास जारी रहबाक चाही। आइ ने काल्हि हमरा लोकनि सफल हेबे करब जँ सम्पूर्ण मैथिल समुदाय केँ जाति, धर्म, सम्प्रदाय आ राजनीति सँ दूर, मातृभाषाक प्रति गौरवक बोध होइनि।

मैथिलीक विपत्तिक लेल मैथिलीक पोथी, मैथिली सिनेमा, आ रेडियोपर मैथिली मे युगानुकूल प्रसारणक अभावक योगदान अवश्य छैक। मुदा, उपाय। हम मैथिली पोथी किनबा लेल उद्यत रहैत छी। मुदा भेटत कतय? 'फ्लिपकार्ट' आ 'एमेजोन' सन ऑनलाइन व्यावसायिक प्रतिष्ठान अंग्रेजीक पोथी दू दिन सँ सात दिन धरि मे द्वारि पर पहुँचा दैत अछि। किन्तु, मैथिली पोथी तकनो नहि भेटत। की ई संभव नहि, मैथिली लेखक लोकनि सेहो 'फ्लिपकार्ट' आ 'एमेजोन'क माध्यम सँ पोथी बेचथि? किननिहार अवश्य पोथी किनताह। हम एक डेग आओरो आगू जायब। मैथिली पोथीक सॉफ्ट-कॉपीक सेहो वितरण हेबाक चाही। आखिर, विदेश मे टेबलेट कम्प्यूटर आ 'किंडल' पर पोथी पढ़निहार पाठक केँ अमेरिका आ ऑस्ट्रेलिया मे के पोथी पहुँचओतनि! पढ़निहारक कमी नहि छैक। संगहि, पोथीक सॉफ्टकॉपी उपलब्ध भेला सँ कोनो नोकसान नहि। 'न्यूयार्क टाइम्स' सँ जुड़ल प्रसिद्ध पत्रकार आ लेखक थॉमस फ्रेडमैन कहैत छथि, इन्टरनेट पर पोथीक उपलब्ध भेला पर हुनक प्रसिद्ध पुस्तक ' The World is Flat ' केर बिक्री मे अप्रत्यासित वृद्धि भेल छलनि।

विदेश मे बसल मैथिल लोकनिक बीच मैथिली पढ़निहार संख्या थोड़ नहि अछि। थोड़ अछि मैथिली मे रुचिगर सामग्री । हमर एहि धारणाक मूल मे अछि हमर अपन अनुभव। हम अपन ब्लॉग-स्पॉट-कीर्तिनाथक आत्मालाप-पर यदा-कदा किछु-किछु लिखैत छी। विगत अनेक वर्ष मे हजारो पाठक हमर कृति पढ़ने छथि। मुदा, आश्चर्यजनक गप्प ई जे पढ़निहार मे अधिकतर उत्तरी अमेरिकाक अनाम पाठक लोकनि छथि! ब्लॉग स्पेसक रीडरशिप एहि गप्पक प्रमाण थिक जे लोक मैथिली केँ तकैत अवश्य छैक। तेँ, मैथिली बजबा मे धखाउ नहि। नेना-भुटकाक संग मैथिलीए मे बाजू। अहाँ मधुबनी मे छी वा सहरसा मे, धनुषा वा झारखण्ड मे, अहाँक भाषा मैथिली थिक तँ बाजू, पढ़ू, सुनू। नेना केँ 'मैक-बर्गर' आ सोहारी दुनू खाय दियौ। अंग्रेजी-हिंदी सिखबियउ, मुदा, गप्प सप्प मे मैथिलिए बाजू । नहि तँ अपने घर मे हमरा लोकनि अनभोआर भ' जायब। हमरे लोकनिक भाषापर हमर संतति लोकनि हँसत।

मिथिलांचलक रामलीला

साठिक दसक मे मिथिलांचल मे रामलीला शब्द सुपरिचित रहैक। रामलीलाक मंडली वा नाटक-कम्पनी जहिया कोनो गाम अबै सब ठाम ओकरे गप्प। गाम मे पेपर-अखबार तँ अबैत नहि छलैक। समाचार आ खबरि सब टा गमैया होइत छलैक। कमाऊ, कलकतिया-श्रमिकलोकनि जखन गाम आबथि तँ संगे 'कैलकत्ता'क खबरि आनथि। मुदा, से तँ पाबनिए-तिहार; दसमी-दुर्गापूजा, छठि-चौरचन मे ने। अनदिना तँ लोक केँ अपने एक-दोसराक चाड़ि रहैत छलैक। लोक पोखरि-इनार,खेत-खरिहान मे गामहिक गप्प करैत छल—मुंगियाक गाय बिअयलैइये; पुरनी पोखरि मे मछहर भेलैये; अमुक टोल मे राति मे डकैती भेलै,परसू फल्लांक पुतहु ट्रेन मे कटिकय मरि गेलैक। इएह सब गप्प तँ लोक दलानपर, घूड़ लग, पोखरिक मोहार पर, कीर्तन-मंडलीक मंडप पर, स्कूलपर करैत छल। मुदा, जखन रामलीलाक कम्पनी अबैत छलैक तँ सब गप्प त'र पड़ि जाइत छलैक। तखन माउगि-मेहर, धीया-पुता, हरबाह-चरबाहसब रामलीलाएक गप्प करैत—'एह, हरियरका नुआवाली (नर्तकीक रोल मे पुरुष-पात्र) जे नचइये! गे दाई, केहन छैक, मेंथरा (मंथरा), कुटनी बुढ़िया; आगि लगाओन! कहै छियनि, दाइ, एखनो तँ झगड़ लगाओन लोक होइते छैक। जखन भगमाने के नहि छोड़लकनि, तखन...।' महिस पर बैसल-बैसल महिसबार सब कहितैक, 'हलुमानजी जे छरपै छैक। मर बहिं, राम-लछुमन दुनू भाइ केँ एके संग कान्हपर बैसाकय जे कुदै छौ!' आदि, आदि।

रामायणक कथानकक क्रमबद्ध अभिनय मे नाटक कंपनी केँ मास दिन सँ बेसी लागि जाइक। रामायणक कथा-क्रमक समाप्तिक पछाति गौआं लोकनिक आग्रहपर नाटक कंपनी दू-चारि टा लोकप्रिय नाटक वा फिल्मक नाट्य रूपान्तर सेहो प्रस्तुत करैत छल। नाटक सब मे बहुधा तहियाक प्रचलित नाटक जेना, सत्य हरिश्चंद्र, वनदेवी, सुल्ताना डाकूक नाटकक मंचन होइत छलैक। मोन अछि, एकबेर हमर गाम मे लोकप्रिय पारिवारिक फिल्म 'धूल का फूल'क मंचन सेहो भेल छल। रामलीलाक कम्पनी तीस-चालीस गोटेक। कम्पनी मे अभिनेता विदूषक सँ ल' कय

गबैया-तबलची, भनसिया-खबास सब रहैत छलाह। एहि सब ग्रुप मे स्पेशलाइजेशन (विशेषज्ञता) सँ बेसी मल्टीटास्किंग (बहुधन्धी वृत्ति) क प्रथा छलैक। सब गोटे मिलि कय दिनभरि भोजन-भात, हिसाब-किताब, आराम-विश्रामक व्यवस्था करैत छलाह आ राति मे मेक-अप, लाइटिंग सँ ल' कय गाना-बजाना, नृत्य-नाटक आ हँसी-विनोद धरि पार लगबैत छलाह। नाटक-मंडली मे खेतिहर-किसान आ कलाकार सब रहथि। किछु गोटे रोपनी-कटनीक मास मे अपन खेत-खरिहान देखथि, शुद्ध-बाधक समय सर-कुटुमैती करथि आ रुख-सुख मे नाटक खेलाथि, रामलीला करथि। नाटकक ग्रुप मे एक व्यक्तिक नित्तह, एके भूमिकाक कारण, गाम मे कलाकार लोकनि केँ लोकसब रामायणक पात्रहिक नाम सँ चिन्हनि, जेना, रामचन्द्रजी, लछुमनजी, हनुमानजी। असली नाम बुझबाक ककरो जिज्ञासाओ नहि होइक। किछु व्यक्ति जे बहुधा विदूषक केर रोल मे उतरथि से अपन नाटकीय छविक अनुरूपे अपन नाम राखथि। एकबेरुक दल मे विदूषक छलाह, सुपाड़ीलाल! नटुआ, गीतकार, गायक, बजनिया आ विदूषक दृश्य परिवर्तनक बीच-बीच, मंच-सज्जा बदलबाक समय मे, 'फिलर्स' सँ लोकक मनोविनोद करैत छलाह आ आइ-माइ, भाइ बन्धुक प्रशंसाक पात्र बनैत छलाह। रामलीला कम्पनी सब बहुधा अगहनीक पछाति- प्राय: स्व. 'किरणजी'क प्रिय ऋतु हेमंत मे- गाम सब मे अबैक। लोग धनकटनी दाउन-दोगाउन सँ निश्चिंत रहैत छल। ऋतु अनुकूल। ने जाड़, ने 'रौद-घटा पुरिबा-ठनका'। अगहनीक पछाति घर मे खयबाक जोग अन्न होइते छलै। तैँ नाटक कम्पनीक प्रतिदिनक बुतादक जोगाड़ गौआं लोकनि केँ सुलभ होइत छलैक। नाटक कम्पनीक प्रतिदिनक बुताद (राशन-पानीक) व्यवस्था कोना होइत छलै से रोचक गप्प छै, कनेक सेहो गप्प भइये जाय। राशन-पानि लेल गौआं सँ, जकरा जे जुरैक, से योगदान कय गौरवक बोध करैत छल। जकरा नहि जुरैक से अपन भाग्य केँ दोख दैत यथासाध्य गौआं सबहक सम्मिलित प्रयास मे जोर लगाबय। मुदा, ई प्रकरण विस्तार सँ पछाति। रामायणक सम्पूर्णक कथाक मंचन मे मास दिन सँ बेसी समय लागि जाइत छलैक। कथानकक मुख्य-मुख्य प्रसंग केँ एक-एक राति मे, तीन-चारि घंटाक एपिसोड मे, मंचित कयल जाइत छलैक। मुदा, प्रसंग कोनो होइ, रामायणक कथा-नायक रामचंद्र, प्रतिदिन कोनो-ने-कोनो रूप मे : 'ठुमुकि चलत रामचंद्र, बाजत पैजनियाँ' वा विश्वामित्रक आश्रम मे शिष्य-जकाँ, अथवा धनुर्धर योद्धा-जकाँ, मंच पर अबिते छलाह। एकर अतिरिक्त, प्रत्येक राति एकबेर सुसज्जित राम-लक्ष्मण केँ, समारोहपूर्वक मंचपर बैसाओले जाइत छलनि। ओहि समय मे नेपथ्य मे तँ मंच-सज्जाक आन ओरियाओन तँ चलैत रहै छलै, मुदा, मंचक आगाँ दर्शक मे एक टा अद्‌भुत रहस्य आ अनिश्चयक वातावरण व्याप्त रहैत छलैक। कि, तँ, आइ देखी

तँ, माला के उठाओत! अर्थात ओहि राति, मंचपर, दोसर दिस राखल माला उठा कय जे व्यक्ति वा समूह रामचन्द्रजीक गरदनि मे माला पहिरओतनि ओएह अगिला दिन, नाटक-कम्पनीक भोजन-साजनक भार उठाओत। माला उठलाक पछाति, माला उठोनिहारक नाम नाटक-कम्पनीक मैनेजर मंचपर सँ प्रसारित करथि। श्रोतागण ओहि गौरवशाली व्यक्तिक आ हुनकर परिवारक जय-जयकार करथि आ मन सँ आशीर्वाद देथि। मुदा, माला उठबा मे दर्शकक जिज्ञासाक दू कारण होइत छलैक। एक, तँ, जे माला उठओताह से सामाजिक गौरवक पात्र हेताह; दोसर, जे लोकनि माला उठेबा मे अक्षम होथि—ओहि युग मे गरीबक संख्या बेसी रहैक—से अपन भाग्य केँ दोष दैत हाहि कटताह, आ माला उठओनिहारक परिपोख खिधांस क' कय मनक भड़ास निकालताह। माउगि-मेहर लोकनिक गप्प तँ फूटे। गप्प किछु एना होइ: 'सैह देखियौ, हिम्मत तँ केलकैक; 'भगवान देने छथिन तेँ,ने' नहि तँ हमरो लोकनि ने माला उठबितहुँ; 'हे दाइ, सेहो भाग सब केँ होइ छै'; 'त:, छथिहे तँ दू भाइ हमरो, तखन....।' दोसर दिस आओरो गप्प होइतैक - 'देखियौ, आइ दछिनबारि टोलक अमाते सब हिम्मत केलक।''मर बहिं, कहिते तँ छैक, कलियुग मे राड़े सब धर्म करत। कलकत्ता कमाइ जाइए। नहि तँ, देखनहि तँ रहियैक, बाप धड़िया पहिरने रहैत छलै ।' आदि...आदि...। आब जे माला उठौलनि, से अगिला चौबीस घंटा लेल नाटक-मंडलीक भोजन-भात, तेल-मशाला, नून-तेल-चाउर-दालि-तर-तरकारीक संङोर कय सब किछु नाटक-मंडलीक भंडारी धरि पहुँचा अओताह, जाहि सँ 30-40 गोटेक नाटक-मंडलीक चारि साँझक भोजन थैहर-थैहर भ' जाइनि। एकर अतिरिक्त जकरा जे जुरैक, केओ चारि टा सजमनि, एक घौड़ केरा, कुम्हड़-कदीमा, मूर-भांटा सेहो नाटक-कम्पनी केँ पहुँचा अबैनि। नेना-भुटका, सासु-ससुर, घर -परिवारक दायित्व कारण महिला लोकनि प्रतिदिन तँ खेल देखबा लेल कोना जेतीह। उपरसँ चोरहोक चिंता आ नाना प्रकारक झंझटि। पुरुख-पात्र केँ पलखति आ रुचिक समस्या। माउगि आ पुरुख केँ एकसंग जेबाक रिवाज तँ रहैक नहि। तथापि जकरा जहिया समय भेटैक देखि आबय। तथापि रामलीलाक भिन्न-भिन्न प्रसंगक प्रति मान्यताक कारण, संयोगे, जँ केओ वनवासक यात्रा-प्रकरण देखलनि, तँ, रामक राज्याभिषेक अबस्से देखबाक प्रयास करथि।

प्रतिदिन रामायणक खेला समयपर आरम्भ करबाक हेतु कलाकार लोकनि झलफल होइते भोजन-भातसँ निश्चिंत भ' साज-शृंगार मे तत्पर भ' जाथि। मंच-सज्जाक इन्चार्ज पेट्रोमैक्स इत्यादिक जोगाड़ कय इजोत करथि आ सेट लगाबथि। गबैया- बजनियाँ लोकनि अपन-अपन तबला-डुग्गी-हारमोनियम ल' कय साँझे राति सँ आलाप आरम्भ करथि। बीच-बीच मे लाउडस्पीकर पर गौआं लोकनिक

आवाहन सेहो होनि–अबैत जाउ आइ शीघ्रे अहिरावणवधक खेला आरम्भ हयत ... आदि... आदि। फेर गीत–नादक दौर। जागल धीयापुता लाउडस्पीकरक आवाज सुनि लौल करब शुरू करय– 'आइ हम नहि मानबै, हमहूँ जेबे टा करबै।' मुदा, अंगना जाधरि सब व्यवस्था सँ चैन हेतैक, कतेको नेना सूति जाथि आ रामलीला नहि देखि पयबाक कचोट दोसर दिन भोर भेनहि मोन पड़नि! प्रतिष्ठित परिवार मे, खासकय नवकनिया लेल, रातियो कय अंगना सँ बहरयबाक परम्परा नहि रहैक। तेँ, ओ लोकनि मनेटा मसोसिकय संतोष करथि। जनिका लेल बहरायब वर्जित नहि छलनि, से पलखति पाबि एक–आध राति रामलीला देखि आबथि। छओड़ा–मांडर, जकरा संगबे लेल अनकर आस वा कठोर अनुशासनक भय नहि रहैक, जेना, हरबाह–चरबाह, श्रमिक–वर्ग, वा छेटगर विद्यार्थी सब, से सबदिना, दर्शक–मंडली मे हाजिर होइत छल। प्रतिदिन जखन ई सबदिना दर्शक–मंडली हाजिर होइत छलैक तखने, 'सियाबर रामचंद्र की जय, पवनसुत हनुमान की जय, लखनलाल की जय' सँ खेल आरम्भ होइ। खेलक बीच–बीच मे नटुआक नाच, गीत–संगीत, विपटा–विदूषक केर उतरा–चौरी आ हँसी–ठट्ठा होइ। मुदा, जोर रहै ओहि रातुक मूल कथाक मंचनपर। मुदा, गौआंक बुलेटिनक मुख्य आकर्षण रहैक रामायणक कथाक निर्णायक मोड़ सब। जेना, सीता–स्वयंवर, वनवास, सीता–हरण, लक्ष्मणक शक्तिबाण लागब, रावण–वध, रामक राज्याभिषेक जकरा ग्रामीण भाषा मे लोक राजगद्दी कहैक। दर्शकसब एहिसब प्रकरण देखबाले दिन गनैत रहैत छलाह। ततबे नहि, वन–गमन दिन मंथरा केँ लोक कोसैत छल आ रामक विपत्तिपर आँखि सँ नोर बहबैत छल; लंका–दहन पर थोपड़ी पाड़ैत छल, आ राज्याभिषेक दिन हर्ष सँ गद्‌गद होइत छल। मुदा, प्रत्येक प्रकरणक बीच एकाध टा एहन स्थल अबस्से अबैत छलैक जखन लोक केँ राम–लक्ष्मणक पयरपर अठन्नी–चौअन्नी चढ़ेबाक अवसर भेटैत छलैक। मुदा, नाटक कम्पनी लेल टाका उगाहबाक असली अवसर अबैत छलैक रामलीलाक इतिश्री, राज्यभिषेकक खेलाक पछाति। राज्याभिषेकक पछाति सम्पूर्ण नाटक–मंडली, राम–लक्ष्मण सीता आ हनुमानकसंग द्वारिए– द्वारि भरि गाम बूलैत छलाह। आइ–माइ सँ ल' कय खर–खबासिन धरि, जकरा जतेक विभव होइक, लोक 'भगवान' केँ टाका–पैसा चढ़बैत छलनि, भक्ति पूर्वक पूजा–अर्चना करैत छलनि। पछाति जँ गौआं लोकनिक आग्रह भेलनि तँ नाटक–मंडली आओर किछु दिन गाम मे रहि सामाजिक नाटक सभक मंचन करथि, जकर चर्चा पहिनहुँ केने छी। खासकय राजा हरिश्चंद्र नाटक मे आँचर पसारि, भीख मंगइत सैव्याक दृश्य देखि लोक जतबे द्रवित होइत छल, भीख मे ततबे बेसी पैसा चढ़ैक आ तेँ बिलखइत (सैव्याक) ओहि दृश्य केँ ततबे लम्बा कयल जाइक जाहि सँ भीख ले आँचर जोड़ने, सैव्याक आँचर कैंचा

सँ ल'त भ' जाइनि। कोनो-कोनो नाटक मे गौआं युवक लोकनि केँ सेहो अभिनय करबाक अवसर भेटनि। मुदा, खिस्सा ओत्तहि नहि खतम होइक। जखन नाटक कम्पनी गाम सँ चल जाइक तखन कतेको मासधरि स्कूलक चटियासब टिफिन ब्रेक मे रामायणक पात्र बनय आ अपन-अपन ग्रुप मे नाटक करय। ताहि मे राम-लक्ष्मण-हनुमान बनबा लेल सब तैयार। मुदा, राक्षस के बनत! कोन बहिन अपन भाइ केँ मृत्युक अभिनय करय देतैक! ! नेना लोकनिपर नाटकक असरिक एक टा आ ओर कारण रहैक : बेसी काल नाटक-कम्पनीक पड़ाव स्कूलक लगक फील्ड मे, पीपरक गाछ तर, वा फुलबारिक बीचहि मे होइक। एहन ठाम नाटककार लोकनि केँ अरण्य वा अशोक वाटिका बनेबाले गाछ-वृक्षक ताकय नहि पड़नि। हनुमानजी सहजता सँ मंचपर सँ गाछ सबहक डारिपर वा नवगछुलीक फेंड़सब पर छरपथि आ नेना-भुटकाक कौतुहलक पात्र बनथि। लक्ष्मण केँ पाताल ल' जयबाले, सुरंग बनयबाक हेतु अहिरावण केँ लगे मे हल्लुक माटि भेटि जाइनि। संगहि, इजोरिया राति मे लोक केँ लगहिक मंदिरक चबूतरापर बैसि रामलीला देखब सुलभ भ' जाइक।

अहाँ बिल गेट्स नहि थिकहुँ!

फेर मनुख भेल अनूप

साते भवतु सुप्रीता देवि शिखर वासिनी
उग्रेण तपसालब्धो जयापशुपति पतिः।

पढल लिखल घर मे कोरा मे बैसल अबोध नेना मिथिला मे पहिल पाठक रूपें एहिना किछु सिखैत छल। मजदूर-कामगारक नेना लेल ने माय-बाप केँ दिन मे नेना केँ कोरा मे ल' कय बैसबाक पलखति भेटैत छलैक, ने मुहजवानी पाठ सिखेबाक अवसर। किन्तु, माय-बापक कोर सब केँ भेटिते छलैक। अक्षर सिखबाले केओ स्कूल जाइत छल, केओ नहिओ। देहाती धीयापुता गुरूजी लग पढ़ैत छल, आ शहरी 'सर' सँ। जकरा माय-बाप केँ उपाय आ महत्वाकांक्षा छलैक, पब्लिक स्कूल मे पढ़ैत छल। केओ-केओ जे हैरो, ईटन, दून, वेलहम मे पढ़ैत छलाह तनिकर खीसा साधारण धीया-पुता पोथी मे पढ़ैत छल। क्रमशः समय बदललै। विज्ञान एक सँ एक तड़पान दैत चल गेल। कहाँ उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धहि मे केओ, विज्ञानक प्रगति सँ एतेक संतुष्ट भ' गेल रहथि जे अपनहि दिस सँ घोषणा क' देलनि जे 'विज्ञानक एतेक विकास भ' चुकल अछि जे आब कोनो आविष्कारक संभावना समाप्त भ' गेलैए'। सर्वविदित अछि, अजुका जीवन विज्ञानक निर्बाध प्रगतिक दोसरे कथा कहैत अछि। संयोग सँ अजुका युगक विज्ञान बहुत अर्थ मे आर्थिक विभाजनक आरि-धूर केँ ढाहि देलक-ए। टी वी, मोबाइल, कम्प्युटर आब सब केँ उपलब्ध अछि। संगहि, मोबाइल फोन अनेक अर्थ मे साक्षर आ निरक्षरक भेद सेहो हटा रहल अछि। किन्तु, कहबी छैक, 'कोनो वस्तु केवल वरदाने टा नहि होइछ'।

अस्तु, मोबाइल आ कम्प्यूटर सँ मनुष्य औफिस केँ घर ल' अनलक आ ओकर आठ घंटाक ड्यूटी अष्टयाम- आठो यामक ड्यूटी भ' गेलैक।

ततबा धरि तँ ठीक छलैक, किन्तु, जखन इन्फोर्मेशन सुपर हाइवे-इन्टरनेटक आविष्कार भेल आ क्रमशः देश-दुनिया आ दिन-रातिक सीमा ध्वस्त भ' गेल, तँ मनुखक आँखि खुजय लगलैक। अमेरिकी डाक्टरक मेडिकल नोट्स बंगलौर मे

बैसल बिहारी टाइप करय लगलाह आ पचहत्तरि अमरीकी डौलर प्रति घंटाक बदला कम्पनी सब 5 डौलर मात्र खर्च कय स्वामी आ शेयर होल्डर दुनूक प्रशंसा, आ अपन प्रगति, सुनिश्चित कए लेलनि। सब मस्त छल- अमेरिकी कम्पनी, बंगलौरक व्यापारी, आ बिहारी नौकरीपेशा।

संयोग सँ गाम घरक युवक लोकनि जे शहर मे पढ़लनि, गाम मे जीविकाक अभाव आ ओतुका कठिन जीवन दुनूक हेतु प्रस्तुत नहि छलाह। शहर केर जीवन केर सीमा आ बाध्यता दुनू छैक। तैँ, बाबा-दाई गाम मे रहि गेलीह आ बौआ-बुच्ची शहर मे 'बाबा-ब्लैक शिप' पढ़य लगलीह। सेहो ठीक छल। गरीब-गुरुबा आ मध्यवित्त की करत! देह लगाकय मारलक। किन्तु, जखन बड़का-बड़का आ प्रसिद्ध स्कूल सब मुनाफा बढ़ेबाले कम्प्यूटरक संख्या बढ़ाकय शिक्षक लोकनिक संख्या केँ थोड़ करैत गेल, तखन लोकक आँखि खुजलैक। क्रमश: परिस्थिति एहन भ' गेलैक जे, सर्वज्ञ 'गूगल' भ' गेलाह गुरु आ मोबाइल भ' गेल पोथी आ पतरा। इंटरनेटक बटन त'र आबि गेल दुनिया भरिक पुस्तकालय, आ क्रमश: शिक्षक होइत गेलाह दरकिनार; माने, पढ़ाइ कम, सिखनाइ बेसी (Less of teaching, more of learning)। एहि युक्ति मे माता-पिता, शिक्षक भ' गेलाह बाधक आ 'साइबर स्पेस' स्वर्गलोक। आब एकाएक एकर दुष्परिणाम जहाँ-तहाँ लोक केँ देखबा मे आबि रहलैए। नेना-युवक सब मे बढ़ैत दूरदृष्टिक दोष (epidemic of myopia) नव थिक। पूर्वी एशिया मे बीस वर्षक युवक लोकनि मे 95 %,आ पश्चिमी योरप एवं अमेरिकाक 50 % युवक लोकनि दूरस्थक दृष्टिदोष (myopia) सँ प्रभावित भ' रहल छथि। उच्च शिक्षा, घर सँ बहरयबाक कमी आ निरंतर महीन काज एकर कारणक रूम मे चिन्हल गेलै। आँखि मे जलन आ पीड़ा (computer vision syndrome) कम्प्यूटरपर प्रतिदिन लम्बा अवधि धरि काज कयनिहार प्रोफेशनल लोकनिक अलगे समस्या थिक। एकर अतिरिक्त अनिद्रा, गरदनि आ पीठक पीड़ा, आ पारिवारिक संबंधक विघटन सँ लोक परेशान सेहो अछि आ लोकक आँखि खुजब सेहो आरंभ भेलैए। किन्तु, उपाय सहज नहि छैक। फेसबुकक स्वामी, मार्क जकरबर्ग, आ गूगलक प्रधान, सुंदर पिचाई, तँ अपन नेना केँ खेलयबाले दाई आ पढयबाले गुरुजी राखि सकैत छथि। किन्तु, राति भरि कौल-सेन्टर मे जगनिहार एक्जीक्यूटिव की करताह! आम शहरी की करत? परिवार मे तँ केओ अतिरिक्त लोक नहि। बेसी ठाम माता-पिता दुनू नौकरिहा। ई गंभीर प्रश्न अछि। दोसर दिस स्वेच्छा सँ वा मजबूरी मे धीया-पुता सँ दूर रहैत वयोवृद्ध की करताह!! शहर मे नौकरिहा नेना सबहक संग रहब केँ कतेको गोटे 'सोनाक खोप'* बूझैत छथि। एहना मे माय-बापक सेवा

* 'सोनाक खोप' एक टा मैथिली कथा आ कथा-संग्रह थिक।

मे तत्पर संतानो की करताह। महानगर सब-जकाँ मिथिलांचल वा भारतक आनठाम गाम-घर मे रिटायरमेंट होम आ वृद्धाश्रम तँ छैक नहि। ने, सक्षम सरकारी वा सामाजिक तंत्र। तैँ एखनुक युग मे कमासुत आ वृद्ध दुनू लाचार छथि आ एहि विकट समस्याक कोनो सोझ समाधान देखबा मे नहि अबैछ। विकसित देश मे जतय सरकारी आ सामाजिक व्यवस्था सक्षम आ तत्पर दुनू छैक ततहु समस्या एतय धरि पहुंचि गेलैए जे हाल मे मृत्युक द्वारि पर ठाढ़ एक लाचार व्यक्ति केँ केवल अपनहि पहियापर गुड़कैत अबैत रोबोट आ कम्प्यूटर अस्पतालक कोठली मे आबिकय सूचित कयलकनि जे, 'आब ईश्वर केँ स्मरण करू, आब अहाँक विदाक समय आबि चुकल अछि'। तैँ, सुनैत छी आब अचानक अमेरिकाक धनकुबेरहुँ लोकनि विलासक हेतु सुपर-लक्जरी नाओ (yacht) नहि, मनुखक सम्पर्कक सपना देखय लगलाहे! ई लोकनि कहय लगलाहे, मनुखक स्पर्श असली विलास थिक - Human touch is luxury। किन्तु, हमरा लोकनिक चिंताक विषय से नहि। सुनैत छी, आब एकाकीपनाक समस्या अमेरिका सँ सुदूर, हमरा लोकनिक गांओ धरि पहुँचि चुकल अछि। ई चिंताक विषय थिक। एहि समस्या पर करीब बीस वर्ष पूर्व हमर एक टा कथा (मरनो भलो विदेस मे) छपल छल। हाल मे प्रकाशित नारायणजीक कथा 'मुखाग्नि' सेहो एही दिस संकेत करैत अछि। तैँ, एखन मनुख आ मनुखक संग पुन: अनूप हेबापर आबि गेलै। सुनैत छी, कतेको सन्तान माइ-बापक श्राद्ध केँ आब Skype पर देखि अपन कर्तव्य पूरा करैत छथि। एक गोटेक तर्क तँ हुनका तेहन दिव्यज्ञान देलकनि जे पिताक अस्थि केँ पाँच सितारा होटलक नाला मे बहाकय कर्तव्य पूरा केलनि। कहलखिन, आखिर गंगा माइ तँ हरिद्वार सँ बहैत पटने होइत समुद्र धरि जाइत छथि, कि ने! सरिपहुँए!!

हँ, एक टा तँ बिसरिए गेल, जँ, अहूँ केँ बाबू सठियायल आ बाबी झखबूढ़ि लागय लागल होथि तँ, एकबेर अपनो दिस देखि लेब। समय तेजी सँ बदलि रहलैए। अहाँ तँ बिल गेट्स नहि छी। किन्तु, एखनुक किछु लोकक्क समस्या आइ ने काल्हि सबहक समस्या हयत। लोक मनुख कतय सँ आनत!

आयल फोन, हेड़ायल मनुक्ख

इन्टरनेट ऑफ थिंग्स, कृत्रिम बुद्धि, आ मोबाइल

पछिला मास चेन्नई मे भारतक उपराष्ट्रपति एक टा अस्पतालक उद्घाटन कयलनि। अस्पताल अपन प्रचार मे आओर सब कथूक संग इहो दावा कयने रहै, जे हुनकर परिसर मे अत्याधुनिक चिकित्साक सुविधा तँ अछिए, एहि अस्पतालक किछु विभाग 'इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IOT)' द्वारा संचालित अछि। की थिक ई 'इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IOT)'? सोझ शब्द मे IOT एक दोसरा सँ जुड़ल कंप्यूटिंग सिस्टम सबहक एहन जुड़ल सिस्टम थिक जाहि मे संस्था वा घरक नामांकित मशीन,उपकरण, मनुष्य, आ जानवरक भीतर सन्निहित computer सब, एक सँ दोसर मनुष्यक बीच, वा एक मनुष्य सँ कंप्यूटरक बीच, सोझ सम्पर्कक बिना, अपना सबहक बीच सूचनाक आदान प्रदान कए सकैत अछि।

सोझ शब्द मे एकरा एक टा उदाहरण सँ बुझू। हमर घर मे पाइप द्वारा भानस करबाक गैस केर कनेक्शन अछि। ओहि हेतु हम किछु टाका गैस कम्पनी केँ जमा केने छियैक। काल्हि गैसक हेतु जमा हमर टाका शेष जायत। हमरा असुविधा नहि हो एहि हेतु 'इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IOT)' सोझे हमर बैंक account सँ निर्धारित टाका निकासी क' कय गैस कम्पनीक खाता मे पहुँचा, हमर गैस सप्लाई स्वत: निर्बाध चालू राखत। ई एक टा बहुत सोझ उदाहरण भेल। दोसर उदाहरण, हमरा डायबिटीज अछि। हमर देह मे लागल सेंसर निरंतर हमर चीनीक स्तर केँ नपैत रहैत अछि। आइ निन्नहि मे हमर रक्त मे सुगरक स्तर खतरनाक स्तर पर नीचा चल गेल। एकर सूचना हमर डाक्टरक कंप्यूटर मे गेलनि, इमरजेंसी सर्विस केँ स्वत: सूचना भ' गेलैक। ओतय सँ एम्बुलेंस हमरा द्वारि पर आयल। हमर केबाड़ स्वत: खुजि गेल आ अस्पतालक कर्मी लोकनि हमर चिकित्सा करैत सोझे हमरा अस्पताल ल' गेलाह। ततबे नहि, बिना ककरो द्वारा चिट्ठी लिखबाक हुज्जति उठओने, हमर अस्वस्थताक सूचना, अमेरिका बैसल हमर बेटा केँ सोझे ईमेल सँ भ' गेलनि।

ई सब किछु बहुत नीक। किन्तु, सामान्य परिस्थिति केँ विपरीत बूझि कम्प्यूटर

जँ कोनो अनुचित कए बैसय, तखन ? वा कम्प्यूटर जँ अहाँक काज बिसरि गेल, तँ ? वा कम्प्यूटर अपने ज्ञान सँ हुकुम चलाबय लागल, तँ ? सत्य थिक जे प्रत्येक सिस्टम मे संतुलन आ नियंत्रण अवश्य होइत छैक। किन्तु, एहि मे विपर्यय आ विकृति आयब असंभव नहि।

बहुराष्ट्रीय चीनीक कम्पनी अलीबाबाक विश्व-विख्यात सह-संस्थापक जैक मा आ बहुचर्चित अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्कक बीच कृत्रिम बुद्धिक विषय पर अखबार मे प्रकाशित वार्तालाप रोचक लागल। जैक मा केर कहब छनि, 'कम्प्यूटर चालाक भले होअय, किन्तु, मनुक्ख बुद्धि मे कम्प्यूटर सँ आगू अछि। तेँ, (कम्प्यूटरक) कृत्रिम बुद्धि Artificial Intelligence (AI) हमरा लोकनि केँ मनुष्य केँ आओर नीक, जकाँ बुझबा मे सहायक भ' सकैत अछि। किन्तु, (कम्प्यूटरक) कृत्रिम बुद्धि (AI) क भस्मासुर भ' जायत से भय निराधार थिक।'

एकर विपरीत एलन मस्क केँ भय छनि, कम्प्यूटरक तीक्ष्ण कृत्रिम बुद्धि (AI) अन्ततः मंदबुद्धि मनुष्य सँ अकच्छ भ' जायत। किन्तु, गप्प एतबे पर समाप्त नहि भेलैक। एलन मस्क आगू जे कहलनि, तकरा ई लोकनि नित्तह भोगि रहल छी। मस्क कहैत छथि, 'हमरा लोकनि एखने मनुष्य सँ यंत्र-मानव (Cyborg) बनि चुकल छी। सत्यतः लगैत अछि, मोबाइल फोन हमरा लोकनिक शरीरक हिस्सा भ' गेल अछि। कारण, जँ, फोन कतहु छूटि गेल तँ होइए जेना, हाथ-पयर बिला गेल!।'

किन्तु, पांडिचेरी मे हमर अस्पताल मे एखन ने 'इन्टरनेट ऑफ थिंग्स (IOT)' आयल अछि, ने हमरा लोकनि कृत्रिम बुद्धिक लाठी ल' कय ठाढ़ छी। अगिला किछु वर्ष हम एकर सबहक प्रयोग करब, तेना लगितो नहि अछि। किन्तु, सबहक हाथ मे फोन केर दुष्प्रभाव सब ठाम देखबा मे आबि रहल अछि। विद्यार्थी लोकनिक झुण्ड जखन होस्टल सँ कालेज विदा होइत अछि, तखन, पहिलुका युगक विपरीत विद्यार्थी लोकनिक बीच गप्प-सप्पक स्थान पर सर्वत्र नीरवता रहैछ। सबहक हाथ मे फोन, कान मे इयर-फोन। एक हाथ मे मोटर साइकिलक हैंडल आ दोसर सँ फोन पर संवाद-लेखन (मेस्सेजिंग)। फल ई जे, झुण्ड मे चलैत आ क्लास मे पढ़ैत विद्यार्थी, आ एके घर मे संग रहैत माता-पिता, पति-पत्नी नितान्त एकसर छथि। पिछला किछु वर्ष पहिने हमरे सबहक परिसर मे छात्र सबहक समूहहि मे एकाकी अस्तित्वक दारुण परिणाम सामने आयल, एक टा कन्या अपन कोठलीए मे आत्महत्या कए लेलनि। किन्तु, ओ मरि गेल छलीह से कइएक दिनक पछाति लोक केँ तखन बुझबा मे एलैक जखन लाश सड़ि गेल रहैक आ कोठलीक भीतर सँ दुर्गन्ध आयब शुरू भ' गेलैक। आइ सँ 30-40 वर्ष पहिने ई असंभव रहैक। कारण एक ग्रुप केर विद्यार्थी जँ सबठाम एक संग नहिओ गेल तैओ खेलक मैदान-मेस-क्लास- अस्पताल मे एक दोसरा

केँ खोज-पुछारि अवश्य करितैक। एखन, फोन हाथ मे आयल, आ संगी-साथी बिसरि गेल। किन्तु, ककरो अनकर उद्वेग नहि लगलैक, कमीक बोध नहि भेलैक।

एही परिसर मे पछिले हफ्ता मे एक टा गार्डियन आबि कय विह्वल होइत अपन दुखड़ा सुनौलनि आ सहायताक याचना केलनि। समस्या: मोबाइल फोन। ई सज्जन, श्री नारायण, सिविल इंजीनियर छथि। पुत्र एम.बी.बी.एस केर छात्र, हमरे कालेज मे पढ़ैत छथिन। पिता हमरा कॉलेजक कॉरिडोर मे एक कात ल' जा कय कहलनि, 'बड़ परेशान छी। हमर पुत्र, अहाँक विद्यार्थी, एकदम बात नहि मानैत अछि। दिन-राति मोबाइल फोन मे मुड़ियारी देने रहैए। कृपा क' कय अहाँ कनेक बुझबिऔक।'

हम सोचैत छी, हम हुनकर सहायता मे कोन कृत्रिम बुद्धि (AI) क सहायता लेब! मोबाइल फोन मनुक्ख हिस्सा नहि भेल अछि, मनुक्ख, मोबाइल-कैमरा-कम्प्यूटरक तेहन हिस्सा बनि चुकल अछि, जे ई कंप्यूटर मनुक्ख केँ पूर्णत: अशक्त केने जा रहल छैक। एहना स्थिति मे इलाज?

सोशलमीडिया आ साहित्य

इन्टरनेटक उपयोग सबसँ पहिने उन्नत देश सबहक सेना अपन आतंरिक संचार लेल केलक। 1990क दशक मे क्रमश: इन्टरनेट जनसामान्यक जीवन मे आबि गेल। पछिला पन्द्रह वर्ष मे इन्टरनेट पढ़ल-लिखल शहरीक जीवनक हिस्सा बनि गेल। तथापि कम्प्यूटर सँ अभिज्ञक हेतु इन्टरनेट पहुँचकेर बाहर छल। तैँ, पुरान पीढ़ीक साहित्यकार लोकनि कम्प्यूटर आ इन्टरनेट केँ दूरे सँ देखैत रहलाह। स्मार्टफोन जहिया सँ सार्वजनिक भेल, स्थिति एकदम बदलि गेल। कवि- कथाकार लोकनि जखन स्मार्टफोनक प्रतापें फेसबुक सँ परिचित भेलाह तँ बहुतो गोटे एक दोसरा सँ जुड़लाह, जे पहिने असंभव छल। तथापि, आरम्भ मे ई सम्पर्क नमस्कार-प्रणाम मे आ like (नीक लागल) धरि सीमित छल। किन्तु, पछिला किछु दिन मे स्मार्टफोनक उपयोगक नव-नव आयामक उदय होमय लागल-ए। सद्य: रचल कविता कविगोष्ठी आ सम्मलेन सँ पहिनहि आकाशवाणी-जकाँ साइबर स्पेस मे गुंजय लागल अछि। क्रमश: फेसबुक पर कविता आ टीका-टिपण्णीक आदान-प्रदान होमय लागल अछि। ई एक टा स्वागत योग्य परिवर्तन थिक। कवि-कथाकार उदय चन्द्र झा 'विनोद' तँ एकरा स्वीकार केलनि, आ स्मार्टफोन सँ कविता लिखब आ आदान-प्रदान सुलभ भ' जेबाक गप्प केँ अपन फेसबुक पोस्टपर लिखबो केलनि। फलत:, हमरो लोकनि भोर होइते, घरे बैसल नव-पुरान कवि लोकनिक, चूल्हिपर चढ़ले काव्यक रिन्हका चिखैत छी।

किन्तु, अनेको नव आविष्कार भले अनूप हो, उपयोगक दोष सँ वा आविष्कार मे सन्निहित दोष सँ पछाति प्रत्येक विधाकेर किछु अप्रत्याशित असरि समय-समय पर देखबा मे आयब असंभव नहि। इन्टरनेट आ स्मार्ट फोन सेहो एहि सँ अछूत नहि। नीचा देल किछु उदहारण हमर वक्तव्य केँ स्पष्ट करत।

हाल मे एक टा सम्पादक मैथिलीक 'कोनो' प्रोफेसर केँ भुसकौल कहि देलखिन। बड़ बेस। टटका-टटकी किछुए दिन पहिने, केओ एक गोटे बड्ड परिश्रम सँ प्रोफेसर भेल छलाह। हुनका लागि गेलनि। ओ बमकि उठलाह। पक्ष आ विपक्ष दुनू मे तर्क-वितर्क शुरू भेल। किन्तु, फेसबुकक अपन सीमा छैक। अस्तु, ने केओ पूर्णता सँ अपन पक्ष रखैछ, आ ने से सम्भव छैक। तखन वाद-विवादक जे नियति हेबाक छलैक, से भेलैक। किन्तु, एखनुक युग मे नीक-जकाँ तर्कसंगत पक्ष रखबाक समय

सब केँ नहि छैक; अवगतिक गप्प सँ हम परिचित नहि। तेँ, ओकर गप्प तँ छोड़ू। किन्तु, हमरा जँ पूछी, तँ, जे मुद्दा एहि विवादक कारण छल, ताहिपर तर्कसंगत आलेख सँ विद्वान लोकनि अपन पक्ष रखितथि, जाहि सँ पाठक लोकनि अपन निष्कर्ष स्वयं निकालितथि, से नहि भेल। एहि लेल पक्ष रखबाक आग्रह आ प्रतिबद्धता दुनू चाही। चूंकि, तर्क मे सीताक भाषाक स्थान पर, विवादक मुद्दा प्रोफेसर जातिक दक्षता भ' गेल, तेँ, विवाद शास्त्रीय नहि भ' कय व्यक्तिगत भ' गेल। ओना, हनुमानक संग सीताक संवादक भाषा मैथिली छलनि वा नहि, तकर संधान तँ समाप्त भ' गेल, से लगइये!

स्मार्टफोन पर लिखल साहित्यक दोसरो बाध्यता छैक। ई बाध्यता थिक, तुरत लीखि, लिखबो सँ पहिने (!) छापि देबाक आग्रह। ताहि सँ लेख तँ छपि जाइछ, किन्तु, लेख केर पहिले ड्राफ्ट फाइनल भ' जाइछ। अस्तु, कतेक बेर बिनु धोअल-बिछल चाउरसँ आंकड़-पाथर-पिलुआक संग जेहन पुलाव बनतैक, से बनि गेल आ परसल भ' गेल। एहि सँ लेखककेर तुरत शेयर करबाक आग्रह तँ पूर्ण भ' गेलनि, किन्तु, जे प्रतिष्ठा स्वादिष्ट भोजन रन्हनिहार भनसियाक बनाओल भोजन केँ भेटैत छैक ताहि सँ साहित्यकार आ विचारक वंचित भ' जाइत छथि। किन्तु, एहि टावर ऑफ बाबेल (Tower of Babel) मे ककरा के सुनैत अछि? आ पढ़ल-सुनल केँ के कतेक दिन मोन राखत, से के कहत!

इन्टरनेट आ स्मार्ट फोनपर लिखबाक विधा केँ एक टा आओर पक्ष छैक : अप्रत्याशित मांग। हाल मे एक टा प्रॉक्सी फेसबुक पोस्ट देखल। एहि पोस्ट मे वयोवृद्ध आ समादृत साहित्यकार गोविन्द झा सँ एक टा आग्रह कयल गेल छनि : 'गोविन्द बाबू अमुक पत्रिका मे छपल 'किरणजी'क अमुक इंटरव्यू केँ पढ़थि, आ तन्त्रनाथ झाक संबंध मे किरण जीक विचारक संबंध मे अपन (गोविन्द झा केर) उक्तिक परिमार्जन करथि!' भेलैक ने अतत्त:!

स्मार्टफोन पर लेख सब मे अभिव्यक्तिक स्वतंत्रताक अति - गारि-गरौअलि-एक टा तेसर समस्या थिक। पत्र-पत्रिकाक संपादक तँ अपन पत्रिका मे छपल सामग्री लेक किछु हद धरि दायित्व लैत छथि। इन्टरनेट आ फेसबुक पोस्टले दायित्व के लेत!*

ततबे नहि, एखनुक लेख सब मे परिचित विद्वान, बुद्ध-चाणक्य आ नेहरू-गाँधीक एहन उद्धरणसब देखबैक जकर कोनो आधार नहि छैक। किन्तु, ई सब शुद्ध-अशुद्ध आ जानल-बूझल उपद्रव हजारो बेर बिनु पढ़ने 'लाइक' आ फॉरवर्ड (पुन: प्रेषित) भ' जाइछ। अर्थात्, असत्य,अशुद्ध आ अनर्गलो भोपाल आ चर्नोविलक विषाक्त गैस जकाँ क्षण भरि मे देश आ महादेशक सीमा केँ नांघि जाइछ। सुधी समाज आ साहित्यकार केँ ई मोन राखब उचित।

---

* फेसबुक आ ट्विटर आब अपत्तिजनक सामग्रीक संज्ञान लेब शुरू केलक-ए।

ओझा-गुणी, भगता आ भाव

अशिक्षा आ विपन्नता अन्धविश्वासक उर्वर भूमि थिकैक। मिथिलांचल मे बीसम शताब्दीक पूर्वार्ध मे जेहने अशिक्षा रहैक, तेहने विपन्नता। तेँ, ओझा-गुणी, भगता -भाव, नाम उचाड़ब, बाटी चलायब सँ ल' कय सांप-बीछक बिक्ख झाड़बा सँ ल' कय भूत-पिसाच-चुड़ैनि तक केँ बस मे करबाक खूब प्रचार रहै। आब शिक्षाक प्रसार, चिकित्सा सेवाक सुलभता, आ वैकल्पिक व्यवसाय सबहक कारणे ई सब लुप्त प्राय भ' गेल अछि से प्रसन्नताक विषय थिक। तथापि, कहियोकाल कतहु एकर सबहक अवशेष भेटि जाय से असंभव नहि। हमरा ई सब देखल कम अछि, माय-पितियाइनिक मुहें सुनल बेसी अछि। हमर अपन पित्ती स्व. घूरन झा स्वयं किछु गौआं केँ संगोर क' कय तन्त्र-विद्या सिखय कामरूप-कामाख्या (असम) गेल छलाह। ओहि युग मे ओझा-गुणी-भगता-योगीक प्रचारक कारणो रहैक। समाज गरीब छलैक, बेसी लोक विपन्न आ रोग-व्याधि सँ बेकल रहै छल। संक्रामकरोग-प्रतिरोधी टीकाकरण आरम्भ भेल रहैक। मुदा, संग-संग पचनिया लोकनिक दल सेहो ढोल-झालि-मृदंग ल'कय गामे गाम घूमथि, 'शीतला-माता'क कीर्तन करथि आ धीया-पुता केँ स्माल-पौक्सक पाच देथिन, टीकाकरण करथिन। डाक्टर लोकनि कमे ठाम छलाह; प्रसूति-नेना, पुरुष-नारि सबहक स्वास्थ्य आ जीवन भगवानेक भार। जतय डाक्टरलोकनि छलाहो तँ लोक केँ डाक्टर-वैद्यक नामहि सुनि आतंक पैसि जाइत छलैक। कतेक रोगीक परिवारक मुँहें सुनने हेबैक, 'लहेरियासराय (मेडिकल कॉलेज) अस्पताल इलाज लेल जेबैक से हम सकबै? माने, आधुनिक चिकित्सा पद्धतिक इलाज महग छैक से धारणा समाजक निम्न आ निर्धन वर्ग मे तहियो रहैक, आइयो छैक। अशिक्षित समाज मे डाक्टरी इलाजक प्रति सन्देहक कारण सामाजिक मान्यता आ शुद्ध-अशुद्धक विचार सेहो रहैक। डाक्टरी औषध कोना आ कथी सँ बनैत छलैक ताहि विषय मे अनेक भ्रान्ति रहैक। लोक धर्मभ्रष्ट हेबा सँ डेराइत छल। हमर टोलक वयसाहु शकुंती, जकरा बड़का लोटाक आकारक घेघ रहैक, कलकत्ता रिटर्न छलि। जखन मौका लगैक लोक केँ कलकत्ताक अपन अनुभव सुनेबा मे शकुंती

गौरवक बोध करय। शकुंती केँ कतेक बेर कहैत सुनने हेबैक, 'बौआसिन, कलकत्ता मे देखलियै, गीध-डोकहर सबहक गूह जमा करैत छलैक। कि तँ औखद आ गोटी बनओतैक। मारे मुँह....।' माने, डाक्टर-वैद्य सुलभ नहि। डाक्टर उपलब्ध छथि तँ धर्म भ्रष्ट हेबाक भय आ सामाजिक मान्यताक आरि-धूर। ततबे नहि ओहि युग मे पानि-बाढ़िक कारण सांप-कीड़ाक कोन कमी। इंटाक घर आ कोठा बिरले रहैक। तखन सांप-बीछ सँ बचाव कोना हो! तेँ, योगी-गुणी-भगताकेर खूब प्रधानता रहनि। झंझारपुर स्टेशन लग नवटोल नामक गाओं छैक। नवटोलक दुर्गास्थानक पुजेगरी भगतजी जखन भोरूपहर पूजापर बैसथि तँ हुनका चारूकात कारनी (रोगी/पीड़ित) लोकनि चारूकात घोदामाली भ' कय बैसथि। कारनी लोकनि अपन-अपन विभवक अनुकूल अरबा चाउर, कैंचा-पैसा ल' कय जाथि। भगतजी कारनीक आगू मे एक टा ताम्बाक सराइ राखि देथिन आ कहथिन, 'एहि सराइ मे अपना हाथें एक मुट्ठी चाउर राखि दियउ ।' भगतजी भूमि पर पड़ल सराइ आ ओहि महक चाउरपर अपन दृष्टि केन्द्रित करथि आ कहय लगथिन,' अहाँक बेटा पच्छिम दिस भागल छथि। मास दिनक पछाति अओताह; अहाँक बेटीक रोग अपने परिवारक लोकक कयल अछि; केओ कटहरक को खेबा ले देने रहथिन ?....आदि, आदि। एहि सब प्रकारक वक्तव्यक सत्यता वा असत्यताक हमरा कोनो अनुभव नहि अछि। मुदा, एहि सबसँ अनेको बेर घर-परिवार मे कलहकेर बीजक बपन भ' जाइक आ परिवारक शान्ति भंग भ' जाइक। एक आओरो प्रकारक गुणी, बाटी चलौनिहारक नाम सुनल अछि। बाटी चलयबाक उपयोग हड़ायल वस्तु केँ तकबाले होइत छलैक। बाटी चलओनिहार एक टा बाटी केँ भूमिपर राखि, ओकरा पकड़िकय रखैत छलाह आ मन्त्र पढ़ैत बाटीपर किछु अन्न छिटैत रहथि। मान्यता छलैक, चोरायल वस्तु केँ ल' कय चोर जाहि बाटें गेल छल, बाटी ओही दिस ससरैत बढ़त। माने, बाटी केँ चोरक अनुगमन करबाक हिस्सक होइक! छैक ई विश्वासक गप्प? मुदा, लोक,बाटी चलबबैत तँ छल। हँ, एहि सब सँ कतेकबेर अशोभनीय स्थिति उत्पन्न भ' जाइ। सुनल अछि,एकबेर हमर एक टा पित्तीक दरबज्जापर सँ बिछाओन चोरि भ' गेलनि। ओ बाटी चलबौलनि। बाटी चलैत-चलैत गामक पछबरिया बाध केँ पार कय दोसर गाम मे ककरो द्वारि पर जा कय अंटकलैक। बिछाओन किएक भेटतनि। मुदा, निश्चिते घरबैया केँ बड्ड अपमानक बोध भेलैक। फलत:, स्थिति लाठी लठौवलि धरि पहुँचि गेलैक! जादू-टोनाक एक टा आओर विधि हमर माय हमरा कहने छलीह। चिड़ियाड़ी-चाउर खोआकय चोरक पहचान करब। विधि एना होइक। मुगल बादशाहक जमानाक एक टा कोनो सिक्का चिड़ियाड़ी सिक्का कहल जाइक। जँ चोरायल वस्तुक चोरिक संदेह कोनो व्यक्ति वा व्यक्ति-समूहपर हो तँ संदिग्ध व्यक्तिलोकनि केँ एकठाम जमा

कयल जाय। पानि मे भिजाओल चाउर आनल जाय। चिड़ियाड़ी सिक्का सँ निकती पर तौलि, भिजाओल चाउरक थोड़-थोड़ मात्रा संदिग्ध व्यक्तिलोकनि केँ खेबाले देल जाइनि। संदिग्ध व्यक्ति लोकनि चाउर केँ आधा चिबाकय भूमिपर उगलथि। जकरा मुँह सँ सोनितायल चाउर बहरायल, वएह चोर साबित भेल। छलैक ई घोर अन्याय, मुदा, होइत तँ छलैक। हमरा लगइए ओहि युग मे मुँहक घाव आ दाँतक पायोरिया रोग आम छल हेतैक। जे मुँहक रोगी भेल, से निर्दोषहु, अनेरे सामाजिक प्रताड़ना आ जुर्मानाक भागी होइत छल। प्रसन्नताक विषय जे पछिला पचास साल मे मिथिलांचल मे एहन अन्धविश्वास कतहु देखबा मे नहि आयल अछि। मुदा, देवताक कोपक भय तँ एखनहुँ देखिते छी। देवी-देवताक कोप आ कोपक शमनले लोक की-की ने करैत छल, आ करैत अछि। पिछड़ावर्ग मे गोसाउनिक घर मे आ दलित-वर्ग दुसाध लोकनि मे, राजा सलहेसक स्थान मे भाव करयबाक प्रथा एखनहुँ छैक। शिक्षाक प्रसार, बढ़ैत सुख-समृद्धि, आवागमनक सुविधा आ डाक्टर वैद्यक उपलब्धताक कारण, कतेको पुरातन विधि आब ध्वस्त भ' चुकल अछि, अकाल मृत्यु कम भेलैये, लोकक आयु बढ़लइए; आब गाम- घर मे 80 वर्ष पार आ नब्बेक धक्का मे पहुँचल वृद्ध रहरहाँ भेटि जयताह, से प्रसन्नता विषय थिक। ततबे नहि, शहरी संस्कृतिक प्रभाव ओहि पुरातन परंपरा सबहक जड़ि पर आघात अवश्य केलकैक अछि, मुदा, सब किछु निर्मूल हेबा मे समय तँ लगिते छैक। सुनैत छी, छठि परमेसरीक भय सँ बिहार-उत्तरप्रदेश मे छठिक पर्वक आस-पास चोरि आ डाका अपने-आप बन्न भ' जाइत छैक। कि तँ, छठि-परमेसरी बड़ तमसाहि छथि, अनिष्ट कए देतीह। काश, चोर-छिनार-डकैत-व्यभिचारी-घुसखोरसब केँ, अपना कोपक बलें, छठि-परमेसरी सालो भरि अपना नियंत्रण मे रखितथि!

चिट्ठी इतिहास भए गेल

दुर्गापूजाक अवसर पर दू हप्ताक छुट्टी पर पटना मे छी। पांडिचेरीक दिनचर्या सँ मुक्त छी। आन किछु करबाक समय आ इच्छा दुनू अछि।

आइ जोगाकय राखल पुरना चिठ्ठी सबहक एक टा फाइल खोलल। जेना-जेना पन्ना उनटबैत गेलहुँ एक-एक टा विभूतिक आखर-लेख सोझाँ आबय लागल, लिली रे, गोविन्द झा, स्व. शंकर कुमार झा, अमर जी, स्व. जीवकांत, भीमनाथ झा, स्व. मोहन भारद्वाज, श्रीश चौधरी, गौरीनाथ, केदार कानन, नवीन चौधरी, राजनंदन लाल दास, रामलोचन ठाकुर, प्रेम शंकर सिंह, नचिकेता, मिहिर कुमार झा, मंत्रेश्वर झा, तारानंद झा 'तरुण' क अतिरिक्त अनेको नव-पुरान साहित्यकार आ परिवारजनक चिठ्ठी अमूल्य धरोहर जकाँ प्रतीत भेल। संयोग सँ ई सब टा चिट्ठी 2007 सँ पूर्वक अछि। किन्तु, दुखक गप्प ई जे चिट्ठी लिखबाक परंपराक जहिना कहियो आरंभ भेल हेतैक, तहिना आब ई समाप्त प्राय अछि। चिठ्ठी कोना लिखी ताहि हेतु आचार्य रामलोचन शरण सदृश विद्वान ('हिंदी व्याकरण चंद्रोदय' सन प्रामाणिक ग्रंथक संग) 'पत्र-चंद्रिका' सेहो लिखने रहथि। ततबे नहि, पोथी-पतरा सँ दूर पत्र अपनहि एक टा साहित्यिक विधा छल। आ से एतेक दूर धरि जे साहित्यकार लोकनि पत्रक रूप मे कथा आ उपन्यास धरि लिखि गेलाह आ पुरस्कृत भेलाह। स्व. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'दू पत्र' आ स्व. डा. सुभद्र झा क 'नातिक पत्रक उत्तर' तकर उदाहरण थिक। हिंदी मे 'चंद हसीनों के ख़तूत' सेहो पढ़ल अछि।

एक समय मे हमरा लोकनि-सन प्रवासी लेल चिट्ठी संजीवनी छल। निरक्षर नारि लोकनिक कलकतिया (कलकत्ता मे रहैत नोकरिहा) पति आ पुत्र लेल चिट्ठी लिखैत हमर माता कतेको वर्ष धरि कतेको दुपहरिया बितौने हेतीह। पछाति, हमहूँ एहन चिट्ठी लिखबाक काज मे हुनकर मदति केलहुँ। दुख अछि, पति-पुत्र आ पिता सँ दूर परिवार, आ परिवार सँ दूर काज करैत श्रमिक केर वेदनाक ओ दस्तावेज मनुखक स्मरण सँ दूर आब कतय भेटत, जाहि मे खर्च बेगरताक अलावा जर-जजात, माल-महिस, रिनिया-महाजनक संग अधिक काल 'लिखल कम बूझब बेसी'-सन

सारगर्भित उक्ति सेहो रहैत छलैक।

हमरा लोकनिक हेतु चिट्ठी मे फूल-विभूत आ छठि केर बद्धी आ अनन्त-सन अनेक वस्तुक अलावा पैघ होइत नेनाक हाथ-पयरक छाप आ बच्चा-बुच्चीक हाथें टेढ़-मेढ़ अक्षर आ अखर कट्टू भाखा मे लिखल चिट्ठी-सन अमूल्य वस्तुक स्मरण जुड़ल अछि। कतेक बेर हमहूँ पत्र मे अपन कन्या आ बालकक लेल अनेक कथा आ नेनाक हेतु गेय कविता लीखि पठौने हेबनि। किन्तु, समयक गति आ टेक्नोलॉजी जहिना जीवन केँ आसान करैत गेल, मंथर गतिक जीवनक ओ सब सौन्दर्य क्रमशः ओहिना बिलाइत चल गेलै, जेना, फोर-लेन, सिक्स-लेन हाइवे पुरान सड़क सबहक काते-कात रोपल सैकड़ो साल पुरान बड़,पीपर, पाकड़ि, आम-जामुन केँ उखाड़ैत पहिलुका सड़कक शोभा-सुन्दर आ छाहरि केँ चाटि गेल।

चिट्ठीक आवश्यकता केँ पहिने फोन, पुनः मोबाइल, फेर एन्ड्रॉयड आ तखन आब व्हाट्सएप कम करैत चल गेल। फल ई जे लोक बाट चलैत, मोटर साइकिल पर भगैत आ गाड़ी मे सफर करैत फोन पर लिखैत तँ हरदमे रहैत अछि, किन्तु, सब टा पानिक बुलबुला समान। ने निचेन सँ चिट्ठी लिखबाक भाव, आ ने फेर घूरि कय पढ़बाक संभावना। साहित्य केँ एहि सँ कोनो हानि हेतैक, कि नहि से समये कहत।

संयोग एहन जे डाक-व्यवस्था मे आयल परिवर्तन सँ पोस्टमास्टर आ डाकिया-डाकपिउनक जे समाज मे स्थान रहैक सेहो नहि रहलैक। हाल मे हम कूर्ग (कर्नाटक) निवासी एक टा अपन मित्र केँ रजिस्ट्री पत्र लिखलिअनि। जवाब तँ नहिए आयल, चिट्ठिओ आपस नहि भेल। एहि विषय मे जखन ओही इलाकाक अपन छात्रा सँ पुछलिऐक तँ पता लागल जे आब चिठ्ठी अनबाले लोक स्वयं पोस्ट आफिस जाइछ, डाकिया घरे-घर चिट्ठी नहि पहुँचबैत छथि! संभव अछि, तेँ, हमर मित्र केँ चिट्ठी नहि पहुँचल होइनि। सत्यतः, आब चिट्ठीक काजो नहि। तेँ, हमरो लोकनि टेक्नोलॉजी केँ अपनाबी आ आगू बढ़ी। इतिहास, इतिहास रहओ, आ समय पयर झाड़ि आगू बढ़ओ!

मैथिली केँ जियाकय कोना राखब

वैश्वीकरण आ इन्टरनेटक प्रचार सँ समाज मे अनेक दूरगामी परिवर्तन भेलैये। भाषा केर प्रचार-प्रसार पर सेहो एहि दुनूक असरि अवश्य पड़लैए; किछु नीक, किछु बेजाय। तथापि, एहि युग मे विश्व भरि मे सैकड़ो भाषा विलुप्त सेहो भ' रहल अछि। मैथिलीक अस्तित्व पर तत्काल कोनो संकट नहि लगैछ; एखन मैथिली बजनिहार बचल छथि। तथापि, मैथिली विलुप्त हयबाक खतरा सँ पूर्णतया सुरक्षित अछि, से कहब कठिन। एहन स्थिति मे जँ मैथिली जीबैत अछि तँ तकर श्रेयकेर दावेदार के छथि। आ जँ मैथिली के विलुप्त हयबाक खतरा छैक तँ एहि हेतु कोन तत्व जिम्मेदार अछि। एही विषय पर विचार करब एहि लेखकेर उद्देश्य अछि।

मनुखक जन्म-जकाँ भाषाक जन्म-मृत्यु निर्धारित तिथि सँ नहि होइछ। यद्यपि, भाषा वैज्ञानिक लोकनि भाषाक उद्‌गम आ विकासक आदि-अंतक अनुमान लगबैत छथि। मैथिली केँ केओ 700 सौ वर्ष पुरान कहैत छथि, तँ, केओ आओर बेसी। केओ एतेक धरि कहैत छथि जे मैथिली सीताक युगक भाषा थिक। सम्भव अछि, मैथिली सीता सँ सेहो पुरान हो। जँ, सीताक समय मे मिथिला नामक राज्य रहैक, तँ, सम्भव अछि ओ राज्य सीता सँ पहिनहुँ छल होइ। तखन सीता सँ पहिनहुँ एतुका लोक वएह भाषा बजैत छल हयताह जे सीता बजैत छलीह, सीता जनमिते तँ कोनो नव भाषाक आविष्कार नहि केने हेतीह। तथापि, एहि तर्क केँ एखन एतहि विराम दी।

अनुभव आ भाषा विज्ञान दुनू एक मत अछि जे भाषाक स्वरूप निरंतर ओहिना बदलैत रहैछ जेना मनुखक स्वरूप। ततबे नहि, एकेटा भाषाक भिन्न-भिन्न स्वरूप, बजबाक शैली, शब्द-भंडार आ लोकोक्तिक सम्पदा अनुभूत सत्य थिक। तेँ, मैथिली आरम्भ मे केहन छल आ आगाँ केहन रहत, 'देवो न जानाति, कुतो मनुष्य:'! हमरा जनैत भाषा समय केर चाक पर चढ़ल कुम्हारक हाथक माटि थुम्हा थिक, जकर स्वरूप काँच माटिक विपरीत अत्यन्त मंद गतिएँ निरंतर परिवर्तनशील रहैछ। व्याकरण एहि स्वरूप केँ स्थिर करबाक जोगाड़ मे लागल रहैछ। किन्तु, मनुखक जीह व्याकरणक

अवहेलना करैत भाषा केँ तरासैत ओकरा नव-नव स्वरूप दैत चल जाइछ। तेँ, शेक्सपियरक अंग्रेजी आ विद्यापतिक मैथिली एखनुक भाषा सँ भिन्न बूझि पड़ैछ। किन्तु, ई विषयान्तर भेल आ इहो विषय एहि लेख केर विवेचनाक विषय नहि। तेँ, आब हमरा लोकनि सोझे एहि विषय पर आबी जे मैथिली जँ जीबैत अछि तँ ओकरा कतय सँ ऊर्जा भेटैत छैक, ओकर जड़ि मे खाद-पानि—साहित्य आ व्याकरणक रचना आ राजनैतिक समर्थन- जे केओ दैत होथु, मैथिलीक वृक्ष केँ ग्लूकोज, आ प्राणवायु कतय सँ भेटैत छैक।

हमरा जनैत कोनो एक भाषाक मूलभूत ऊर्जाक श्रोत ओ नागरिक लोकनि छथि जनिका एक दोसरा सँ संवादले मातृभाषाक अतिरिक्त आन कोनो भाषाक ज्ञान नहि छनि। किछु उदाहरण सँ ई गप्प कनेक फड़िच्छ भ' सकैत अछि। 1999 वर्ष मे हम जखन बंगलोर पहुँचल रही, कन्नड़ सिखबाक प्रबल इच्छा भेल छल। ओहि समय मे बंगलोरक दैनिक 'टाइम्स आफ इंडिया' मे बाहरक लोक केँ 'Know your Kannada' नामक दैनिक स्तंभ छपैत रहैक। एहि स्तंभ मे रोमन लिपि मे कन्नड़ सिखयबाले दैनिक उपयोगक कन्नड़ भाषाक वाक्य सब अंग्रेजी अनुवादक संग देल जाइक। हम एकर कटिंग सब केँ संकलित कय एक टा कापी मे साटि कय राखी आ कन्नड़ सिखबाक प्रयास करी। किन्तु, एहि सँ हमरा कन्नड़ मे कोनो दक्षता हासिल नहि भ' सकल। एकर विपरीत तहिया बंगलोरक आर टी नगर मे रहनिहारि किछु मैथिलानी लोकनि धुर्झार कन्नड़ बाजथि। हमरा अवश्य आश्चर्य भेल। पुछलियनि, तँ, ओ लोकनि कहलनि, 'जँ हाट, माछक बाजार आ मोहल्लाक दोकान-दौड़ी जाय लागब तँ अपने कन्नड़ सिखल भ' जायत! ई गप्प हमरा युक्तिसंगत लागल। हम हाट, माछक बाजार आ मोहल्लाक ओहि दोकान-दौड़ी नहि जाइत रही जतय दोकानदार केवल कन्नड़ बजैत रहथि। हमर कार्य-स्थल मे (वायुसेना कमान अस्पताल मे) सेहो हमरा कन्नड़ बजबाक बाध्यता नहि छल। ओतय हमरा लग अयनिहार अधिकांश रोगी कन्नड़ भाषी रहथि, किन्तु, हिंदी-अंग्रेजी मे दक्ष। ओ लोकनि बोल-चाल मे हमरा संग अंग्रेजी वा हिंदीक प्रयोग करथि। अत:, ओतय हम कन्नड़ नहि सीखि सकलहुँ। माने, बंगलोर वायुसेना कमान अस्पताल मे, वा ओतय कतहु जतय हम बंगलोर मे जाइत रही, हमरा, वा ओतुका कन्नड़ भाषी केँ, कन्नड़ बजबाक बाध्यता नहि छलनि। किन्तु, अनपढ़ गंवार मैथिल, वा आन कोनो भाषा-भाषी कतहु जाथु,वैकल्पिक भाषाक अभाव मे हुनका लेल संवादक माध्यम मातृभाषा छोड़ि आन कोनो भाषा नहि, जाधरि आवश्यकताक दवाब मे, ओ स्थानीय भाषा नहि सीखि लेथि। तेँ, मिथिलाक ओ वर्ग जे मैथिलीए टा बाजि सकैत छथि वा जनिका मैथिली बजबा मे हीनताक बोध नहि होइत छनि, मैथिलीक हेतु असली ग्लूकोज आ आक्सीजन

वएह थिकाह। ई लोकनि केवल मैथिली बजिते टा नहि छथि, अनको मैथिली सँ परिचित करबैत छथिन, ओहिना जेना, कन्नड़क अतिरिक्त अन्य भाषा सँ अभिज्ञ स्थानीय, मैथिल लोकनि केँ, बाध्यता मे, कन्नड़ सिखा देलखिन! तहिना, लोक भले भाषा बुझथु वा नहि, केवल मैथिली-हिंदीए टा बजनिहार बिहारी जन-मजदूर, तमिल, कन्नड़ वा मलयाली केँ मैथिली मे संबोधित कय, कम सँ कम मैथिली कोनो भाषा थिकैक तकर बोध करबैत छथिन। दुखद थिक, हमरा-सन बहुतो शहरी मध्य वर्गक लोक गौरव मे रहैत छथि जे मैथिली हुनके सहयोग सँ जीवित अछि। दोसर दिस गाम-घर मे मैथिली बजैत करोड़ो नागरिक एकर श्रेय लेबाक सोचितो नहि छथि। गाम घरक लाखो एहन गरीब-गुरबा आ निरक्षर लोकनि केँ इहो बूझल नहि छनि जे ओ कोन भाषा बजैत छथि। मातृभाषा सँ अपरिचयक कारण पर वैज्ञानिक योगेन्द्र पाठक वियोगीजी अपन लेख 'बिनु जड़िक गाछ' पर विस्तृत विवेचना प्रस्तुत केने छथि। हुनक कथ्य ई जे, 'अधिकांश केँ ई बुझले नहि जे ओ कोन भाषा बजैत अछि'। सत्यत:, मिथिलांचल मे बाल-वर्ग सँ हाइ स्कूल धरि शिक्षा मे मैथिलीक अभाव छात्र केँ ई अनुभव नहि होमय दैत छनि जे जाहि भाषा (हिंदी वा अंग्रेजी) मे ओ लिखैत-पढ़ैत छथि से हुनकर मातृभाषा नहि थिकनि,आ हुनक मातृभाषा मैथिली थिकनि।' ई पढ़ल लिखल लोकक गप्प भेल। हमरा लोकनि निरक्षरक तँ गप्पे नहि करी। फलत:, जनगणनाक खानापूर्ति मे गणक लोकनि भाषा मे हुनका लोकनिक नामक सोझाँ हिंदी वा कोनो आन भाषा दर्ज करैत आयल छथिन, जाहि सँ मैथिलीक अहित तँ होइते छैक, मैथिलीक असली संरक्षक अपन अर्जित श्रेय सँ अछूत रहि जाइत छथि। तथापि, मैथिलीक असली संरक्षक थिकाह तँ इएह लोकनि, जनगणनाक एखनुक सन्दर्भ मे प्रासंगिकता ई जे वर्ष 2021 मे आगामी जनगणना हयत। ओहि समय मे हमरा लोकनि केँ सतर्क रहब आवश्यक, जाहि सँ मैथिली भाषी लोकनिक सही गणना सुनिश्चित हो।

आब एहि विषय पर विचार करी जे जँ मैथिली केँ विलुप्त हयबाक संभावना छैक तँ एहि हेतु कोन-कोन तत्व जिम्मेदार अछि।

सत्यत:, भाषाक राजनीति मैथिलीक जड़ि पर असली कुड़हरि साबित भेलै। स्वतंत्रताक पूर्व सम्पूर्ण बिहार मे मातृभाषाक रूप मे एकमात्र हिंदीक स्थापना जँ मैथिली हित पर पहिल चोट छल, तँ, अस्सीक दशक मे बिहार मे मैथिली, भोजपुरी, मगही, वज्जिका आदि केँ दरकिनार करैत उर्दू केँ बिहारक दोसर सरकारी भाषाक रूप मे दर्जा, भाषा सबहक जड़ि पर दोसर एहन छौ छल जे मैथिलीक संग आन सब भाषा केँ सोझे धराशायी कए देलक। एहि सत्य केँ के अस्वीकार करताह जे मिथिलांचल, मगध, वा भोजपुरी क्षेत्र मे केओ कोनो जाति-धर्म-संप्रदाय वा सामाजिक

वर्गक होथि अपन परिवार मे स्थानीय भाषाक अतिरिक्त कदाचिते आन भाषा बजैत होथि। ओहिना, जेना केरल, तमिलनाडु, बंगाल, कर्नाटक मे सब स्थानीय भाषा बजैत अछि। हँ, बिहारक विपरीत दक्षिण भारत मे सरकारी आ व्यक्तिगत काजो मातृभाषाए मे होइछ। ओतय मातृभाषाक अतिरिक्त लोक केवल अंग्रेजी सिखैछ। ई बात अवश्य जे बंगाल वा दक्षिण भारतक राज्य सबहक विपरीत मिथिलांचलक मैथिली-भाषी राजनेता लोकनि, मैथिली साहित्यकार सहित, अपन-अपन पार्टीक भाषा-नीतिक अनुकूल पार्टीक मीटिंग, भाषण, मतदानक प्रचार सामग्री मे लम्बा अवधि धरि ने मैथिलीक प्रयोग केलनि, आ ने एखन धरि भाषा केँ स्थानीय राजनैतिक मुद्दा बनओलनि। तथापि, मैथिली केँ संविधानक आठम अनुसूची मे सम्मिलित कय लम्बा अवधि सँ लम्बित मैथिलीक वैधानिक दावा केँ स्वीकार करब, तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व. वाजपेयीजीक सकारात्मक राजनैतिक पहल छल, जाहि हेतु हमरा लोकनि वाजपेयी जीक प्रति सदा कृतज्ञ रहब।

एक भाषा सँ दोसर भाषाक समागम भाषाक हेतु नीक थिकैक वा बेजाय ताहि पर प्राय: मतैक्य नहि। किछु गोटेक मत छनि, भाषा सबहक बीचक मेलजोल भाषा केँ जीवन दान दैत छैक। किन्तु, किछु गोटे इहो कहताह जे एहि सँ वर्णसंकर भाषाक उदय (जेना, हिंदी आ फारसी सँ उर्दू), आ भाषाक विकृति, दुनूक संभावना रहैछ। फलत:,विश्व केर कतेक भाषा-भाषी, जेना, फ्रेन्च लोकनि अपन भाषा मे आन भाषाक शब्दक आमदक ततेक विरोधी छथि जे प्रतिवर्ष नियमत: आन भाषा सँ फ्रेन्च मे आयल शब्द केँ जजात महक मोथा-जकाँ बाछि कय बाहर फेकि अबैत छथि। एकर विपरीत अंग्रेजी भाषाक ऑक्सफोर्ड शब्दकोष प्रतिवर्ष आन-आन भाषाक नव-नव शब्द केँ अपन शब्दकोष मे आनि ओकरा स्थापित आ परिभाषित करैत अछि। तथापि, विश्व मे अंग्रेजीक वर्चस्व बढ़िए रहल अछि। तेँ, हमरा जनैत, मैथिली मे आन भाषाक एहन शब्द जकर पर्याय मैथिली मे छैक, तकर अयला सँ मैथिलीक शब्द संसार क्षीण हयब संभव। किन्तु, नव आविष्कार, नव भोजन, परिधान आ उपकरणक नाम मैथिली मे आयब उचित आ दुर्निवार दुनू। मैथिली एहि सँ समृद्ध होइछ, दुर्बल नहि।

अपना घर मे बोल-चाल मे हिंदी-अंग्रेजीक प्रयोग एक टा नव रोग थिक जे मैथिली केँ दुर्बल करैछ। 'मैथिल मैथिली किएक नहि बजैछ' नामक प्रोफेसर शंकर कुमार झाक लेख अस्सीक दशक मे पूर्णिया कालेजक पत्रिका मे छपल छल, जाहि मे प्रोफेसर झा एहि विषय पर गम्भीर विवेचना प्रस्तुत कयने रहथि। कालेज पत्रिकाक सीमित परिधि आ प्रसारक बावजूद, संभव अछि, मैथिलीक गंभीर अध्येताक नजरि एहि लेखपर गेल होइनि। एहि लेख मे मैथिल लोकनि मैथिली किएक नहि

बजैत छथि वा टूटल फूटल हिंदी बजैत छथि ताहि पर गंभीर चिंतन छलनि। एहि लेखकेर एतय चर्चाक कारण ई जे ओहि लेख मे लेखकक अनेक विचार विन्दु मे एक टा ईहो निष्कर्ष रहनि जे अधिकतर शिक्षित मैथिल टूटल फूटल हिंदी आ अंग्रेजी बजबा मे मैथिली बजबा सँ बेसी गौरवक बोध करैत छथि। लेख पैघ छलैक आ निष्कर्षक बहुतो विन्दु आब स्मरण नहि अछि। किन्तु, आइ ओहि लेख केर प्रकाशनक करीब 30-35 वर्ष पछाति स्थिति खराबे भेलैये, नीक नहि। कारण, सब ठाम देखबा मे आओत। यद्यपि ई सत्य, आइ राँची, गुवाहाटी, दिल्ली, देहरादून, रायपुर,मुंबई, हैदराबाद सबठाम मैथिल-मैथिलीक समुदाय सक्षम, संगठित आ सक्रिय छथि, किन्तु, एहि संस्था सबहक कतेक सदस्य लोकनि अपना घर मे मैथिली बजैत छथि, से हमरा नहि बूझल अछि। एतबा अवश्य, जे जँ मैथिल लोकनि मैथिली नहि बजताह तँ मैथिली कोना जीवित रहती! भाषाक मूल आ असली अस्तित्व तँ लोक-कंठे थिकैक। लोक जँ दिन-प्रतिदिन मैथिली नहि बाजत तँ भले कतबो साहित्य आ शास्त्र मैथिली मे लिखल जाओ, मैथिली संस्कृते-जकाँ केवल पुस्तकालयक शोभा बनि केँ रहि जेतीह। तेँ, घर परिवार मे मैथिली बाजब मैथिलीक अस्तित्व लेल ओतबे आवश्यक अछि जतेक मनुखक अस्तित्व लेल भोजन, पानि, आ वायु। तेँ, जे केओ घर परिवार मे मैथिली बजैत छी, निस्संदेह मैथिलीक आयु बढ़बैत छियैक। घर-परिवार मे मैथिली नहि बजैत छी, तँ, मैथिली दुर्बल होइछ।

जेना, उपर चर्चा भेल अछि, प्राथमिक शिक्षा मे माध्यमक रूप मे मैथिलीक अभाव मैथिली प्रचार-प्रसारक मूल मे तँ अछिए, तथापि, एहि मे संदेह अछि जे मैथिलीक केँ शिक्षाक माध्यम भेलाक पछातियो, आ मिथिला नामक राज्यक स्थापनाक पछातिओ, शहरी मध्य वर्ग अपन धीयापुता केँ अंग्रेजी माध्यमक स्कूल मे पठयबाक स्थान पर मैथिली माध्यम स्कूल मे पठओताह। संभव अछि, मैथिली-माध्यम स्कूल, मैथिली-मीडियम शिक्षा तखनो ओहने तिरस्कृत रहत जेना एखन 'हिंदी मीडियम' अछि। एकर ई अर्थ कदापि नहि जे हम शिक्षा मे मैथिली माध्यम विरोधी छी। सत्यत:, अंग्रेजी पढ़लाक व्यावहारिक लाभ सँ अंग्रेजी सिखबाक सेहंता आ स्थानीय भाषाक प्रति हीनभावक दोष केवल शहरीए लोकनि केँ नहि छनि। ग्रामीण लोकनि केँ सेहो मनोरथ होइते छनि जे धीयापुता अंग्रेजी मे गप्प करय। पछिला बेर गाम गेलहुँ, तँ हमर एक टा बाल-सखा, आग्रह सँ कहलनि, 'हमर छौड़ा काल्हि गाम आओत। कनिओ काल लेल हम अहाँक गाम पर अवश्य अनबै। हमर छौड़ा अहाँ सँ अंग्रेजी मे गप्प करत!' एहि मे हम कोनो खराबी नहि देखैत छियैक। जँ, कोनो ग्रामीणक धीयापुता दक्षिण भारत वा मध्य-पूर्व विदेश मे केवल एहि हेतु नौकरीक जोकर नहि अछि जे ओ अंग्रेजी नहि बजैत अछि, तँ, ओकरा लेल अंग्रेजी सीखब मुक्ति थिकैक।

ओ अंग्रेजी अवश्य सिखथु। तथापि, जँ, मिथिलांचल मे जँ शिक्षाक माध्यम मैथिली भेल तँ हमरा लोकनिक सम्पूर्ण समाजक आ राजनैतिक दल लोकनिक सम्पूर्ण समुदाय एकमत भ' अपना नेना भुटकाक शिक्षाक लेल मैथिली केँ अपनयबाक हेतु सामान रूपें सहमत हेताह, कि नहि, से के कहत। तथापि, सबहक सहयोगक बिना मातृभाषा मे शिक्षा संभव नहि। ततबे नहि, मैथिलीक माध्यमे शिक्षाक प्रसार सँ समाज मे उपलब्ध भेल नव अवसर सँ जँ सब केँ समान रूपें लाभ नहि भेलैक, तँ, भाषाक उत्थान मे सबहक सहभागिताक आशा केवल कल्पना बनि कय रहि जायत।

एक टा आओर गप्प। वैश्वीकरणक युग मे भाषाक समसर्वत्रीकरण भ' रहल अछि। गूगल,फेसबुक, ह्वाट्सएप, इंस्टाग्राम, टेलिग्राम प्रभृतिक अनेक अंतर्राष्ट्रीय मंचपर जहिना विश्वभरिक नागरिक एक दोसरा सँ जुड़ि रहल, तहिना रोमन अक्षर आ बहुभाषिक शब्द-भंडार भाषाक स्वरूप केँ प्रभावित कए रहल अछि। ई परिवर्तन मैथिलीक अस्तित्व पर संकट थिक, वा मैथिली भाषा केँ समृद्ध करैछ, से भाषा-वैज्ञानिक लोकनि कहथु।

प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थिति

6 सितम्बर 2009, रवि दिन, न्यूयॉर्क सिटी, अमेरिका। हमरा लोकनि टाइम्स स्क्वायर लग घूमैत रही। हमरा संग हमर पत्नी, कन्या, हमर जमाय आ हुनक एक टा गुजराती मित्र आ मित्रक परिवार रहथिन। सड़कक कातक साइड-वाक पर नीक चहल-पहल छलैक। अकस्मात्, हमरा लागल, पाछूसँ छूबि केओ हमर ध्यान आकृष्ट केलनि-ए। उनटि कय देखैत छी, तँ, एक टा मैथिल परिवार : युवक, पत्नी, बरख दसेक एक टा बालक आ एक टा छोटि कन्या। मुसुकाइत कहलनि, 'अपने सब केँ मैथिली बजैत सुनलहु, तेँ...' एतेक दूर मे अपन भाषा बजैत नागरिक सँ भेंट भेने जेहने हर्ष आ कौतूहल ओहि मैथिल परिवार केँ भेल रहनि, तेहने हमरो लोकनि केँ भेल छल। हमरा लोकनि ओत्तहि ठाढ़े-ठाढ़ पाँच मिनट परिचय-पात कयल आ अपन-अपन बाट धयल। मधुबनी जिलाक निवासी ओ युवक न्यूयॉर्कहि मे काज करैत रहथि। न्यूयॉर्कक टाइम्स स्क्वायरक भीड़ मे मैथिली सूनि एहि परिवारक अचानक आकृष्ट हयब, एतबा तँ अवश्य सिद्ध करैछ, जे विदेशहुँ मे रहला उत्तर, मातृभाषा एक टा चुम्बक प्रमाणित होइछ। तथापि, प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थिति केँ, महत्व केँ प्रमाणित करबा लेल केवल एक टा ई उदाहरण पर्याप्त नहि। तेँ, एहि विषयक कनेक विस्तार सँ जाँच करी।

सत्यत:, प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थितिक जाँच लेल दू प्रकारक मापदंड चाही। एक, प्रवासी मैथिल लोकनिक बीच सर्वे सँ ई ताकल जाय जे ओ लोकनिक अपन जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक केहन उपस्थितिक अनुभव करैत छथि; दू, भारतसँ विदेश जाइत मैथिल अपन देखल अनुभवक आधार पर स्वतंत्र निष्कर्ष निकालथि जे ओ लोकनि विदेश मे प्रवासी मैथिल लोकनिक जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक केहन उपस्थिति देखलनि। हमरा अपन निष्कर्ष निकालबाक हेतु एहि दुनू मे सँ कोनो मापदंड नहि अछि। तेँ, हमरा अपन परिवारजन सहित अनेको प्रवासी लोकनिक संग, देश सँ बाहर आ भारतक भीतर जे सम्पर्क भेल अछि, ओही सम्पर्कक अनुभवक आधार पर हम अपन विचार एतय रखैत छी।

जँ प्रवासी लोकनि केँ कनेक काल लेल छोड़ि दी, तँ, अपन इलाकाक प्रति लगावक एक टा भिन्न उदाहरण दैत छी। ईसवी सन 2006 मे एगारह बजे रातिक करीब एक ट्रेन मे चढ़बाक क्रम मे धक्का-धुक्कीक कारण, तीन गोटे नई दिल्ली स्टेशन पर अबैत ट्रेनक सामने रेलक पटरी पर खसि कय मरि गेलाह। हमरा अनुमान अछि, फगुआ, दसमी, आ छठिक पूर्व दिल्ली-नई दिल्ली स्टेशन पर घरमुँहा बिहारी लोकनिक एहन भीड़ बहुतो गोटे केँ देखल हयत। प्रश्न उठैछ, पर्व-त्यौहारक अवसर पर लोक गाम अबैले कोना आफन तोड़ने रहैछ, देशक भीतरक प्रवासी लोकनि केँ गाम अपना दिस किएक एना घिचैत छनि, जखन कि दशहरा-होली-दिवाली-छठि आब दिल्लियो मे मनाओल जाइछ, एहि सब पर्वक छुट्टी दिल्लीओ मे होइत छैक। माने, पर्वक आलावा सेहो गाम मे एहन किछु अदृश्य आकर्षण अवश्य छैक जे लोक केँ गाम दिस झिकैत छनि, ककरो माता-पिता, ककरो परिवार आ नेना आ ककरो केवल अपन भूमि आ कमला-कोसीक धार, वा गोसाउनि-ब्रह्म बाबा अपना दिस झिकैत छथिन। विदेश बसैत प्रवासी भारतीय लोकनि सेहो अपन भूमिक दिस सँ एहने घिचावक अनुभव करैत छथि, से सब कहताह। किन्तु, कतेको बेर समयक अभाव, दूरी, आ व्यय बाधा बनि ठाढ़ भ' जाइछ। एतबे नहि, देश दिस घिचाव आ जुड़ाव केर आओर अनेको सूत्र छैक, जे कखनो आवश्यकता सँ प्रेरित होइछ, आ कखनो महज भावनात्मक तन्तुक जोर सँ सेहो। हम अनेको परिवार सँ परिचित छी जे जीवन समुद्रपार बितौने छथि, किन्तु, सन्तान लोकनिक हेतु जीवन संगीक तलाश मिथिलहि मे आबि कय कयने छथि। एकर अपवादो अवश्ये भेटत। किन्तु, ई प्रवासी लोकनिक जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थितिक एक टा विन्दु भेल तँ अवश्य।

आब एक टा दोसर गप्प। की प्रवासी लोकनिक अपन जीवन मे मैथिल समाजक अभावक शून्यताक अनुभव करैत छथि? हमरा जनैत, सब दिन जँ नहिओ तँ, कहिओ काल अवश्य। प्रवासी लोकनि जतय कतहु छथि, अपन देश आ भूमि पर छूटल अपन समाजक अभावक अनुभव अवश्य करैत छथि। तेँ, जतहु मैथिल लोकनिक पर्याप्त संख्या मे छथि, अपन गाम-घरक मैथिल समाजक कमी केँ दूर करैक हेतु, मिथिला-मैथिलीक संस्था बनाकय, एक दोसराक सम्पर्क मे रहैत छथि। आओर नहि किछु, तँ, 'कठौती मे गंगा' तँ सब सुननहि छी। सएह सही। यूनाइटेड किंगडम (UK), लन्दन मे मिथिला सोसाइटी यू के नामक एक टा संस्था सक्रिय अछि। ई संस्था यूनाइटेड किंगडम (UK)क विभिन्न भाग मे काज करैत, आ बसल,मैथिल लोकनिक संस्था थिक। एहि संस्थाक सदस्य लोकनि अपन संस्थाक दिस सँ समय-समय पर सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करैत छथि, आ अपन पर्व-उत्सव मनबैत छथि। भारत सँ अबैत साहित्य आ ललितकलासँ जुड़ल

व्यक्ति सबहक संग सम्मेलन, आ हिनका लोकनिक अभिनन्दनक हेतु सेहो, ई संस्था आयोजन करैत अछि, से सुनल अछि। संस्थाक माध्यम सँ सबहक एक दोसराक सम्पर्क मे रहला सँ बेर-कुबेर पर एक दोसराक सहायता सेहो होइत छैक। एतय एक टा गप्प बूझब आवश्यक,जे घर सँ जतेक दूर जायब, अपन देश-प्रदेश मे सामान्यतया जे छोट-छोट देवाल देखबा मे अबैछ, से सब खसय लगैछ। तैँ, इंग्लैंड-अमेरिका तँ छोड़ू बंगलोर धरि मे मैथिल लोकनि, समस्त बिहार-उत्तरप्रदेशक हिंदी-भोजपुरी-मैथिली भाषी लोकनिक संग मीलि कय सामूहिक संस्था चलबैत छथि। एहिसँ समूह सेहो पैघ होइछ आ एके संग अनेक भाषिक समुदाय केँ अपन समाजक संपर्क मे रहबाक बोध सेहो होइत छैक। तें, विदेश मे सेहो संस्थासब राष्ट्रीय स्वरूप ल' लैछ। तें, विदेश मे भारतीय नागरिकक वृहत् समाजक प्रतिनिधि संस्था सब सेहो लोक केँ क्षेत्रीय मित्रभाव आ मेलजोलक अवसर आ सुविधा दैत छैक।

आब अमेरिकाक गप्प करी। अमेरिका आकार मे योरपक देश सबसँ बड्डु पैघ। शहर सभक आकार सेहो तहिना। तैँ, पैघ शहरक गप्प हम नहि कहि सकब। किन्तु, हमरा अमेरिकाक नार्थ कैरोलिना राज्यक एक टा छोट-सन यूनिवर्सिटी टाउनशिप, चैपल हिल मे, किछु दिन रहबाक अवसर भेल छल। ओहि समय मे चैपल हिल मे किछु मैथिल छात्र आ आन नोकरिहा लोकनि रहथि। हुनका लोकनि सँ हमरा सम्पर्क भेल छल। ओतय ओ लोकनि एक दोसरा सँ जुड़ल अवश्य रहथि। हमरा एक गोटेक ओतय जयबाक अवसरो भेटल। ई दम्पति, दुनू, मैथिल। घर मे जनमौटी नेना रहनि। बच्चाक जन्म मे सहायताक हेतु नेनाक नानी आयल रहथिन। तैँ, हुनको सँ भेंट भेल। हिनका लोकनिक परिवार मे भाषा मैथिली आ सामान्यत: भोजन-सांजन मैथिल रुचिक।

हाल मे,अमेरिका मे रहैत नेपाली मैथिल लोकनिक सांस्कृतिक गतिविधिक एक टा समाचार काठमांडू सँ प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक The Rising Nepalक 28 दिसंबर 2019 क अंक मे भेटल। समाचारक अनुसार एसोसिएशन ऑफ नेपाली तराईअन इन अमेरिका (ANTA) आ मैथिल्स ऑफ नार्थ अमेरिका (MoNA) क संयुक्त सहयोगसँ अमेरिकाक न्यू जर्सी शहर मे 14 दिसंबर 2019क विद्यापति समारोह आयोजित भेल छल। एहि समारोह मे नेपाल सँ आमंत्रित किछु कलाकार आ साहित्यकार सेहो ओतय गेल रहथि। समाचारक अनुसार एहि समारोह मे अमेरिकाक विभिन्न भारतीय आ नेपाली समुदायक नेता लोकनि सेहो सम्मिलित भेल रहथि।

हमर अनुभव कहैछ, मैथिल विदेश मे जतय छथि, अपन पीढ़ी धरि मैथिली बजैत छथि, आ बहुधा अपन रुचि आ सुविधाक अनुसार भोजन-सांजन मे मैथिल-जकाँ खाइत-पिबैत छथि। किन्तु, दोसर पीढ़ी जाइत-जाइत मैथिली भाषाक व्यवहार विलुप्त भ' जाइछ। एकर कतेको कारण छैक। पहिल तँ सामान्य जीवन मे भाषा आ

व्यवहारक अभाव। दोसर, विवाह-दानक हेतु समाजक परिधि जेना-जेना पैघ भ' रहल छैक, परिवार सँ मैथिली कतियाअल जा रहल अछि, भारतहु मे बसैत मैथिल परिवारहुक स्थिति एहने अछि। तेँ, जाहि परिवार मे पति-पत्नी दुनू मैथिली भाषी नहि छथि, ओहि परिवार मे नेना-भुटका केँ मैथिली सुनबाक अवसर कदाचिते भेटैत छैक। अस्तु, ओतय मैथिली बिलाय लगैछ। मुदा, जँ पति-पत्नी दुनू मैथिली भाषी छथि, तँ, बच्चा केँ लोक भले मैथिली मे नहि टोकौक, बच्चा माय-बापक बीचक गुप्प सुनिओ कय किछु मैथिली अवश्य सीखि लैछ, से हम अनुभव सँ कहैत छी। किन्तु, जँ अहाँ पूछब, प्रवासी लोकनिक जीवन मे मैथिलीक स्थान केहन छनि, तँ, हम एतबे कहब, जे भारतहि मे मिथिला सँ दूर बसैत मैथिलक जीवन मे मैथिलीक स्थान केहन छनि! उत्तर सूनि हताशा हयब सम्भव, किन्तु, ई सत्य थिकैक। प्रवासी लोकनि मे जे मैथिली केँ जिया कय रखने छथि, ओ केवल अपन ममत्व सँ, आवश्यकता सँ नहि। ततबे नहि, जहिना भारत मे रहितो बहुतो मैथिल, मैथिली पढ़ब नहि जनैत छथि, तहिना प्रवासी मैथिल मे सँ बहुतो मैथिली ने पढ़ैत छथि, ने पढ़ि सकैत छथि, किन्तु, समस्या ई छैक जे प्रवासी मैथिली पढ़हु चाहैत छथि, तँ अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग प्लेटफार्म सब पर मैथिलीक पोथीक अभावक कारण मैथिलीक पोथी हुनका सबहक लग पहुँचि नहि पबैछ। अत:, मैथिलीक प्रति ममत्व रहितो ओ लोकनि मैथिली सँ दूर भ' जाइत छथि। तेँ, अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग प्लेटफार्म पर मैथिलीक उपस्थितिक आवश्यक कारण, हमरा जनैत, विदेश मे मैथिलीक मांग सेहो छैक। तकर एक टा प्रमाण मैथिली भाषाक हमर अपन ब्लॉग 'कीर्तिनाथक आत्मालाप' थिक। पिछला दस वर्ष मे पाठक लोकनि हमर एहि ब्लॉगक पेज केँ आइ धरि करीब 89000 उलटौलनि-ए, से analytics कहैत अछि। आश्चर्यक गप्प ई, जे एहि मे सँ अधिकांश पाठक समुद्र पारेक छथि! माने, समुद्र पारहु सँ लोक मैथिली तकैत तँ अवश्य छथि!

अंत मे, वर्तमान मिथिलाक समाजक हेतु प्रवासी मैथिल लोकनिक योगदानक गप्प करी। सफल पूत सदायसँ अपन समाजक उत्थान मे योगदान करैत एलैये। आ तकर आशा उचितो। किन्तु, अपन समाजक उत्थानक हेतु प्रवासी लोकनिक योगदान लेल ककरो तँ डेग उठबहि पड़तैक। हम पूर्णत: विश्वासक संग ई नहि कहि सकैत छी, जे प्रवासी मैथिल लोकनि सामूहिक रूपें पैघ स्तरपर मिथिला मे शिक्षा, समाज-सुधार, वा आधारभूत संरचनाक सुधारक कोनो अभियानक सहयोगी छथि वा नहि। किन्तु, व्यक्तिगत स्तरपर कतेको गोटे मिथिलाक छोट-छोट स्थानीय अभियान मे सहयोग करैत छथि तकर एक-दू टा सूचना हमरा लग अवश्य अछि। हमर अनुमान अछि, विदेश गेल बहुतो सफल मैथिल, गाम-घरक लेल आरम्भ कयल इमानदार आ सार्थक स्थानीय पहल मे कम वा बेसी सहयोग अवश्य करताह। किन्तु, एहि हेतु पहिल डेग तँ केओ उठाबथि। ई डेग वा पहल मिथिलहुँ सँ आरम्भ भ' सकैछ।

मैथिली मे लिखबाक औचित्य

पढ़बे-जकाँ लिखब सेहो व्यसन थिकैक। हँ, जे जीविकोपार्जन लेल लिखैत छथि, से व्यक्ति एक टा फूट श्रेणीक व्यक्ति थिकाह। किन्तु, जिनका लिखबाक व्यसन छनि, किन्तु हुनकर लिखल केओ पढ़ैत नहि छनि, ओ ककरा लेल लिखैत छथि? हमरा-सन मैथिली लेखक जनिकर जीविका डाक्टरी आ अध्यापन पर निर्भर छनि, तनिका प्रसिद्धि आ अर्थ दुनू अंग्रेजी मे लिखला सँ होइत छनि। मैथिली लेखन सँ फुरसति मे समय भले बीति जाइनि, किन्तु, व्यय सँ के बचओतनि। चलू, एतबो धरि ठीक। मुदा, सोचैत छी, अपन हानिक पर्यन्तो, हमरालोकनि मैथिली मे लीखिकय किनकर उपकार करैत छियनि! इएह एहि लेख केर विषय थिक।

आब एहि विषयपर कनेक खुलि कय गप्प करी। किन्तु, आगू बढ़बा सँ पूर्व एतबा धरि कहिए दी जे एहन विचार हमरा मन मे किएक आयल। असल मे हमर मैथिली लेखन नितान्त अनियमित अछि। कारण, हम ने कोनो स्तम्भकार छी, जनिका 'डेडलाइन' क दवाब रहैत छनि, आने, कर्नल रंजीत, इब्ने शफी वा केन फोलेट-सन जासूसी कथा-लेखक, जनिकर कथाक रहस्यक प्रतीक्षा मे पाठक लोकनिक निन्न बाधित भ' जाइत छनि। फलत:, चालीस साल मे हमर केवल पाँचे टा पोथी छपल अछि। ततबे नहि, जँ, लिखल आ बिनु छपल सब टा पन्ना सब केँ समेटिओ ली तँ एखन केवल आओर दू वा तीन-टा पोथीक सामग्री जमा कय सकब। किन्तु, समस्या ई अछि से एतबो थोड़ पोथीक प्रकाशन सँ, लगैत अछि, जक-थक पड़ल पोथीक बंडल सब घर केँ छेकने अछि। आब, जे लोकनि दस वर्ष मे पैंसठि टा पोथी लीखि लेने छथि, हुनकर तँ गप्पे नहि हो, किन्तु, जे लेखक लोकनि ताहि सँ कमो लिखने छथि, सम्भव अछि, तनिको घर मे पोथी रखबाक समस्या अवश्ये हेतनि।

पुन:, आब हम अपन गप्प करी। छपल पोथी सँ जे स्थान घर मे अजबाड़ि अछि, तकरा खाली करबा लेल एके टा उपाय सूझैत अछि छपल पोथी केँ मुफ्त मे बांटि दिऐक। किन्तु, ताहू मे समस्या अछि। हम पांडिचेरी मे रहैत छी। कतबो प्रयास करब तँ एक दर्जन सँ बेसी मैथिली पढ़निहार नहि भेटताह। बंगाली सहित

आन सब भाषा-भाषीक संग जखन मैथिलीक चर्चा होइत छैक, मैथिलीक परिचय मे ततेक भाषण देबय पड़ैत अछि, जे मैथिली जँ अपन मातृभाषा नहि होइत तँ एतेक कष्टो नहि करितहुँ! कखनो सोचैत छी, डाकक खर्च वहन कय मुफ्तो मे पोथी केँ डाक सँ पठा दिऐक, पोथी बिलहि दिऐक। किन्तु, व्हाट्सएप पर फ्री अंतर्राष्ट्रीय फोन कॉलक जमाना मे आब डाकपिउन सेहो गामक फेरी किएक लगओताह! चलू, पोथी रद्दीओ मे बेचि दितिऐक। किन्तु, आब तँ मशाला-मरचाई सेहो पुड़िया मे नहि बिकाइत छैक। छोट किताबक पन्ना सँ ठोंगा तँ बनतैक नहि। 2000 सँ ल' कय एखन धरि कतेको पोथी मुफ्त मे बिलहल। वर्ष 2017 मे छपाओल 'कुरल' मैथिली सेहो खुलि कय बिलहल। कतेको गोटे तँ खूब प्रशंसा कयलनि। एक टा सम्पादक तँ व्हाट्सएप्प पर इहो लिखलनि, 'महत्वपूर्ण काज'। किन्तु, एखन धरि हुनकर पत्रिका मे, 'कुरल'क दू वर्ष मे दू पाँतिओक पोथी-परिचय नहि आयल। भाग्यवश प्रशंसा मे एक टा समीक्षक इहो लिखि गेलाह जे 'कुरल मैथिली', प्रत्येक मैथिली-भाषीक घर मे हेबाक चाही। मुदा, हुनको अनुशंसापर पोथीक जमा बंडलक आकार मे कोनो परिवर्तन नहि भेल।

सत्यतः, हमर शुभचिंतक लोकनिक संख्या थोड़ नहि अछि। तेँ, जनिका जे उचित फुरलनि, सुझाव आ सम्मति देलनि। मुदा, केओ पोथी नहि किनलनि। ओहुना मित्र लोकनि केँ गाछी-कलम मे फड़ल आम आ छपाओल पोथी पर अधिकार रहिते छनि। सत्य कहैत छी। एक शुभचिंतकक सलाह मानैत,फेसबुक आ व्हाट्सएप्प पर चौबीस घंटाक अवधि मे, भिन्न-भिन्न समय पर, हफ्ता भरि सब कद्रदान सँ पोथी किनबाक निवेदन करैत रहलहुँ। फल, निल बट्टे सन्नाटा! तेँ, हम आब अपन गप्प छोड़ी।

किछु एहनो लेखक छथि जे गंभीर वैज्ञानिक, साहित्यिक आ सामाजिक लेख लिखैत छथि। किन्तु, हुनको लोकनिक स्थिति एकरंगाहे छनि। बेचारे, भरि-भरि राति जागि संदर्भ तकैत छथि, आ नव-नव विषय पर लेख लिखैत छथि। कम्प्यूटर पर घंटाक-घंटा काज करबा मे आँखि लाल भ' जाइत छनि। तैयो पोथी छपला पर ग्राहक देवताक दर्शन नहि। मैथिल धीयापुता केँ मैथिली पढ़ल नहि होइत छैक। जे पढ़ि लैत छथि, हुनका बुझबा मे नहि अबैत छनि। तेँ, गम्भीर विषयक लेखक लोकनि केँ सेहो गोली मारू।

हँ, किछु लेखक एहन अवश्य छथि जे पहिले बॉलपर छक्का मारबा मे सफल भ' जाइत छथि। पहिले पोथीपर बड़का पुरस्कार पाबि भरिए राति मे प्रसिद्ध भ' जाइत गेलाहे। मुदा, हुनको लोकनि केँ अर्थ-लाभ तँ पुरस्कारे सँ भेलनिए, पोथीक बिक्री सँ नहिए। किन्तु, एहि बीच मे छपाइक क्षेत्रक क्रांति एक टा नव आ बड़का समस्या

ठाढ़ कय देलकैए- पुरस्कारक प्रतीक्षा मे ठाढ़ सब वयसक लेखक लोकनिक लम्बा पतिआनी। पहिने लेखक-कवि लिखैत-लिखैत मरि जाइत छलाह, अपना आँखिए अपन पोथी केँ छपैत नहि देखि पबैत छलाह। आब तँ कतेक लेखक पोथी लिखबा सँ पहिनहि पोथी छपबा लैत छथि! तेँ, मोट पुरस्कारक प्रतीक्षा मे ठाढ़ सब वयसक लेखक लोकनिक पतिआनी दिनानुदिन पैघे भेल जा रहल अछि। आ लाइन जखन पैघ हेतैक तँ लाइन मे धक्का-धुक्की, धक्का-मुक्की हेबे करतैक। लोकक वयस तँ बैसल नहि रहतैक! युवा-पुरस्कारक प्रतीक्षा मे ठाढ़ युवा केँ बूढ़ भ' जयबाक भय सेहो उचिते सतबैत छनि। मुदा, समस्या दोसरो छैक, जँ, पुरस्कारक पछातियो पोथी नहि बिकयलनि, तँ, थोड़ किरायाक मकान वा छोट फ्लैट मे कोन-कोन पोथीक बंडल रखताह। सबहक पोथी तँ बी. ए., एम. ए. कोर्स मे नहि आबि जेतनि। सुनैत छी, आब मैथिली विभाग मे छात्रक संख्या सेहो दिनानुदिन थोड़े भेल जा रहल छैक। आ नहिओ होउक, बी. ए., एम. ए. पास करबाले पोथी पढ़बाक कोन काज। फलत:, लेखक पोथी भले कोर्स मे प्रेस्क्राइब करबा लेथु, ताहि सँ पोथी बिकयतनि तकर कोन गारंटी! रहलाह प्रोफेसर लोकनि। तँ, ओ लोकनि तँ अपनो लिखल नहि पढ़ैत छथि, से छपल सामग्री पढ़ला सँ प्रतीत होइते अछि। फलत:, एहि सब समस्याक कारण बुधिआर लोक केँ बुद्धि अवश्य भेलनिए। तेँ, पोथी-प्रकाशन आ मैथिली पोथीक बिक्रीक समस्याक सत्यक अनुभवक आबा मे पाकि कय निस्सन भेल किछु tech-savvy साहित्यकार अग्रज लोकनि, हेबनि मे पोथी छपयबा सँ 'तौबा' केलनिए आ अपन कृति केँ केवल amazon, kindle आ e-book- जकाँ छापि संतोष करब आरम्भ केलनिए। हमरा जनैत, ई नीक समाधान थिक। मुदा, एहि सँ बाँकी लोक विमोचनक पार्टी सँ वंचित भ' जायत। विमोचन केनिहार विशिष्ट व्यक्तिक फोटो अखबार मे नहि छपतनि. संगहि, वैज्ञानिक विधाक विपरीत,साहित्य अकादेमी प्राय: एखन धरि ebook केँ 'बुक' केर श्रेणी मे नहि गनैछ। एहि सँ आन प्रतियोगी लोकनि भले प्रसन्न होथु, रचनाकार तँ हुसिए जेताह! तथापि, लेखक केँ नि:शुल्क पोथीक मूर्त रूप देखबाक मनोरथ तँ पूर भइए जेतनि। आ निरंतर जमा होइत पोथीक बंडल घर आ अलमारी सेहो नहि छेकतनि, तथापि,मैथिली साहित्यक भंडार सेहो भरिते रहतैक।

हँ, रहल ओहि रचनाकार लोकनिक गप्प जे अति गम्भीर आ कालजयी, किन्तु, समाज मे अपरिचित, रचनाक सृजन मे लागल छथि। हुनका लोकनिले हम एके टा गप्प कहब, ओ लोकनि एखन घटनाक अत्यंत करीब छथि (They are too close to the event !)।

एतय भवभूतिक 'मालतीमाधव'क एक टा पांती मन पड़ैत अछि,

उत्पत्स्यते तु मम कोऽपि समानधर्मा
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

कहिओ तँ केओ हमर समानधर्मा हेताह, जन्म लेताह। कारण, समय अनन्त छैक आ पृथ्वी विपुला छथि। तेँ ओ लोकनि एकदम चिन्ता जुनि करथु। धैर्य राखथु। कोन ठेकान, भले समाज हिनका लोकनि केँ बिसरिओ जाइनि, हिनका लोकनिक डिजिटल फोटो बिलाइओ जाइनि, विश्वास करथु, 500-1000-2000 वर्षक बाद विद्यापति आ भानुभक्त-जकाँ चौक-चौराहा पर मूर्ति तँ स्थापित हेबे करतनि। इहो संभव अछि, राजनेता आ पार्टी सब हिनका लोकनिक मूर्ति केँ तिरंगा वा गेरुआ वस्त्र पहिरयबाक ओदौद सेहो करनि। ततबे नहि, संभव अछि, एहन कालजयी कृतिक कवि आ लेखक अपने भले नास्तिक रहल होथु, परवर्ती समाज हिनक कपार पर त्रिपुण्ड चानन वा गंगौटक छाप सेहो क' देनि!

अह-हा! कनेक थम्हू! थम्हू! ! ई तँ अद्‌भुत सम्भावना अछि! आब तँ हमरो लगैए, आब क्रमश: हमहूँ मैथिली मे लिखबाक औचित्य सँ सहमत भ' रहल छी!!

ठीक ने?

मैथिलीक पोथीक बिक्रीक समस्या

आइ सँ चालीस-पचास वर्ष पूर्व कतेको साहित्य छपाइक मुँह बिनु देखनहि कालक गाल मे समा जाइत छल। कोनो पोथी दिबाड़क भोजन भ' जाइत छल तँ कोनो पोथी बाढ़ि-पानि मे दहा जाइत छल। तथापि, किछु लेखक अपन पेट काटि पुस्तक छपेबाक उद्योग करैत छलाह, आ किछु गोटे केँ पुस्तकक गुणक कारण विश्वविद्यालय, लाइब्रेरी, वा साहित्य-प्रेमी लक्ष्मी-पुत्र सँ सहायता भेटि जाइत छलनि। तथापि, ग्राहक केर कमी तँ रहिते छलैक। आब टेक्नोलॉजीक उपलब्धता आ सुधरैत आर्थिक स्थितिक कारण प्रतिवर्ष सैकड़ो मैथिली पुस्तक छपैत अछि। तथापि, बिक्रीक समस्या यथावत अछि। ई हम अपन अनुभव सँ कहैत छी; विगत 20 वर्ष मे हम अपन खर्च सँ पाँच गोट पोथी छपौने छी। किन्तु, बिकायल पोथीक संख्या नगण्य अछि। इहो सत्य जे हमरा कतेको गोटे नि:शुल्क पोथी दैत छथि, पठबैत छथि, आ आग्रहो केलापर दाम स्वीकार नहि करैत छथि। हमहूँ बहुतो गोटे केँ पोथी हाथे-हाथ दैत छियनि, वा पठबैत छियनि। किन्तु, एतय विवेचनाक विषय ई थिक, जे मैथिली पोथी किएक नहि बिकाइए। जँ संख्याक दृष्टिऐं देखियैक तँ बाजार मे सबसँ बेसी मांग स्कूल-कालेजक किताबक होइत छैक। बिहार मे शिक्षाक माध्यम मैथिली नहि। तेँ स्कूल कालेजक छात्रक बीच वएह पुस्तक बिकाइत अछि जे वैकल्पिक विषयक कोर्स मे सम्मलित अछि। कोर्स सँ इतर पुस्तकक बिक्री समाजक पढ़बाक रुचि पर निर्भर करैछ। पोथी पढ़ब मिथिला मे कहियो आमरुचि छल हेतैक, से कहब मुश्किल। अजुको साक्षरताक परिस्थिति तँ सर्वविदिते अछि। तखन जे मनोरंजन लेल पोथी तकैत छथि तनिका सब सँ पहिने चिन्हार लेखक आ परिचित विधाक खोज रहैत छनि। हमरा नहि लगैत अछि, हरिमोहन झाक पछाति, प्रभास कुमार चौधरीक अतिरिक्त हम कोनो आन गद्यकारक नाम ल' सकैत छी, जे कथा-उपन्यास नियमत: लिखैत आ छपबैत रहलाह। किन्तु, हुनको लोकनिक पोथी कतेक संख्या मे बिकायल छलनि से मैथिली साहित्यक अध्येता लोकनि कहि सकैत छथि। आजुक समय मे जखन पोथीक उपलब्धता आ आम आर्थिक परिस्थिति (purchasing power) दुनू मे सुधार भेलैये ताहू स्थिति मे नीको

पुस्तक जँ नहि बिकाइत अछि तँ ओकर एक टा प्रमुख कारण इहो अछि जे बहुतो, मूलत: मैथिली भाषी घर मे बोल-चालक भाषा मैथिली नहि, हिंदी अछि। चिट्ठी-पत्री लिखब समाप्ते भ' गेलैये। एहना स्थिति मे धीयापुता मैथिली पढ़ि कय बूझि नहि पबैछ। आ लोक अपना वा अनका घर मे मैथिली किताब कीनि कय ककरो उपहार नहि दैत छैक। पोथीक बिक्री मे दोसर जटिल समस्या पोथीक उपलब्धता थिक। पोथीक मार्केटिंग गाम-गाम मे हेबाक चाही। छोट-छोट स्तर पर गाम गाम मे पोथी बेचबाक नेटवर्क केर आवश्यकता छैक। किन्तु, ई अभियान केवल मैथिली प्रेम आ सेवाक नाम पर असंभव अछि। एहि मे बाजारक दस्तूर केँ स्वीकार करय पड़त। विक्रेता केँ आर्थिक लाभक हिस्सा बनबय पड़त। शहरी आ अंतर्राष्ट्रीय पाठकक हेतु एखनहुँ सुपरिचित मैथिली पोथीसब Amazon आ flipkart पर उपलब्ध नहि अछि। जँ किछु पोथीक Kindle एडिशन उपलब्धो अछि, तँ, मैथिलीक कतेक पाठक Kindleक प्रयोग करैत छथि। तथापि हमरा विचारें मैथिली पोथीक pdf आ Kindle संस्करण उपलब्ध भेला सँ पोथीक बिकयबाक क्षेत्र लोकल सँ सोझे ग्लोबल भ' जेतैक। मैथिली प्रकाशन मे स्थायी डिजिटल प्लेटफॉर्मक अभाव तेसर पैघ समस्या थिक। एहन प्लेटफार्म जाहि पर कोनो लेखकक निरंतर प्रकाशन सँ हुनक लेखनक एक टा स्थायी छवि बनि सकनि आ पाठक ओहि लेखकक लेखन केँ ताकि-ताकि पढ़थि से नहि भ' सकल अछि। मिथिला दर्शन मे वैज्ञानिक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' क लगातार लेखन मैथिली मे सीरियस साइंटिफिक लेखनक एक टा उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि। ई एक टा नीक प्लेटफार्म थिक। किन्तु, नीक लेखन केँ खराब मुद्रण बेकार क' सकैये से नहि बिसरबाक थिक। तथापि, वैज्ञानिक लेखनक पुस्तकाकारकृति 'विज्ञानक बतकही'क दू भागक कतेक प्रति बिकायल आ कएक टा लाइब्रेरी एकर मांग केलक अछि से अनुसन्धेय थिक।

एखनुक युग मे गाम-घर सँ बेसी शहर सब मे मैथिली-प्रेमी संस्था सबहक स्थापना भ' रहल अछि। ओहि सब ठाम छोट-छोट स्तर पर लेखक-कवि-साहित्यकार सँ पाठकक भेंटक कार्यक्रमक आयोजन हो। एहि कार्यक्रम सब मे एक वा अधिक साहित्यकार छोट-छोट ग्रुप मे अपन कृति पाठक केँ सुनाबथि। एहि सँ समाज अपरिचित ग्रन्थ सँ परिचित हयत,आ जँ पाठक केँ नीक लगतैक तँ पोथीक बिकयबाक बाट सेहो खुजतैक। पचास-साठिक दशक मे गामे-गाम विद्यापति पर्व समारोह मे गौआं सब केँ एहिना लेखक-कवि सँ लग सँ संबंध स्थापित होइत छलैक। आब संचारक साधन आ लोकक क्रय शक्ति दुनू बढ़ल अछि। अस्तु 'लेखक सँ भेंट' वा 'एकल-पाठ'क स्कोप देहात मे टोल आ गामक स्तरपर बेसिए छैक।

एक टा गप्प आओर, तखन हमरा लोकनि पोथीक बिक्री केँ शहरे धरि किएक

सीमित राखी। बेसी मैथिली बजनिहार तँ गामे मे छथि। तेँ पोथीक ब्रिक्रीक सघन अभियान गामे दिस हो। एखनहुँ विधाक विविधताक अभाव अछि। जँ पछिला दस वर्ष मे प्रकाशित मैथिली पोथी सब केँ देखी तँ प्राय: कथा-कविताक संख्या सब सँ बेसी हयत। उपन्यास थोड़ अछि। यात्रा वृतांत, जीवनी, समसामयिक सामाजिक-राजनैतिक, अर्थनीति आ इतिहास, वैज्ञानिक आ घरेलू चिकित्साक, पाक-कला आ बागवानी, घर-अंगना सजयबाक, सौन्दर्य-आ शृंगार (self-grooming), कैरियर गाइडेंसक किताब, नेना-भुटकाक हेतु मैथिली पोथी प्राय: आंगुर पर गनि सकैत छी। पी.एचडीक थीसिस वा गम्भीर साहित्यिक समालोचना आम रुचिक विषय नहि थिक। तें, स्वान्त: सुखाय वा शास्त्रक समृद्धिले जँ एहन ग्रन्थ सब छपैत अछि तँ गुणात्मकता आ उपादेयता केँ दृष्टि मे रखैत एहि पोथी सब केँ चाहे विद्वान लोकनि किनताह वा कालेज विश्वविद्यालयक लाइब्रेरी। सर्वविदित अछि, कालेज आ यूनिवर्सिटीक बजटक सब सँ पैघ हिस्सा स्थापनाक (establishment) मद मे खर्च होइछ। रिसर्च आ लाइब्रेरी प्राथमिकताक सूची मे कतय अछि से शिक्षाविद लोकनि स्वयं कहताह।

हमरा जनैत मैथिली मे नारी रुचिक लेखनक अभाव सेहो पोथीक बिक्री मे बाधक अछि। जुनि बिसरी, समाज मे नारीक संख्या पुरुष सँ थोड़ नहि। जँ कथा-कविता केँ छोड़ि दी, घर अंगना मे उपयोग आ परिवार समाजक हेतु दू टा पोथी मिथिलाक विधि व्यवहार (श्रीमती मोहिनी झा) आ मिथिलाक विध-बाध गीत नाद (श्रीमती भारती झा) क मांग तँ छैके। अनुमान अछि एहि प्रकारक आनो पोथी अवश्य बिकाइत हयत।

हँ, पढ़बाक रुचिक अभाव पहिनहुँ छलैये। शिक्षितहु वर्ग मे पान-सुपारी, पोथी सँ बेसी लोकप्रिय अछि! तेँ, जतय प्रत्येक स्कूल-कालेज-रेलवे स्टेशन, बस-स्टैंड लग चाह-पानक दोकान भेटबे करत,ओतय किताबक दोकान अभावृत्तिए भेटत। के नहि मानत, पोथीक बिक्री पर Multi-media आ मोबाइल फोनक प्रभाव सेहो भेलैये। यद्यपि, मोबाइल फोन सँ लिखब आ सुनायब सुलभ भ' गेलैये।

एक टा गप्प आओर। पोस्ट ऑफिस-सन संस्थाक दुर्बलता पत्र-पत्रिकाक वितरण मे बड़का बाधक बनि गेलै। आब गाम घर मे रजिस्ट्री सँ पोथी-पत्रिका नहि पहुँचि पबैत छैक। अन्यथा, 'मिथिला दर्शन'-सन बीस टाकाक पत्रिका पोथी डाक सँ उजान, अवाम आ कोइलख किएक नहि पहुँचत से सोचबाक थिक।

पोथीक दाम केँ सेहो कतेक गोटे बिक्री मे बाधक बूझैत छथि। मुदा सोचू जहिया एक कप चाह चारि आना मे भेटैत छलैक, हिन्द-पाकेट बुक केर उपन्यासक दाम 1 टाका होइक। आइ चाह दस टाका सँ कम नहि, तखन 200 टाकाक किताब

कोन महग भेलैक। ताहू मे मैथिली वा हिंदी मे कोनो लेखक लेखन-प्रकाशनक आय सँ गुजर करताह, से ने पहिने सम्भव छलैक, आ ने आइ सम्भव छैक। तखन प्रकाशनक आ मुफ्त वितरण मे जतबा मूल्य लगतैक ताहि हिसाबें जँ पोथीक मूल्य होइक तँ से अनुचित नहि। किन्तु, पोथी छपला सँ दाम ऊपर होइत छैक से तँ सोचबे व्यर्थ थिक। मोन रखबाक थिक, जँ किताब बेसी बिकेतैक तँ छपाइक खर्च आ मूल्य स्वत: कम भ' जेतैक। एखन तँ अधिकतर लेखक प्रकाशनक भार स्वयं वहन करैत छथि।

अन्त मे एक टा गप्प आओर। नीक लेखन आ त्रुटि विहीन प्रकाशन केर, पाठकक अपेक्षा अनुचित नहि। बंगौर-सन लेखन, त्रुटिपूर्ण छपाइ, आ भोजन मे आंकड़ -पाथर ककरो विमुख क' सकैत अछि। हाल मे एक टा एहन स्थूलकाय उपन्यास,आ एक टा एहन पुरस्कृत 'कथा-संग्रह' हमरा हाथ मे आयल जाहि सँ मनोरंजन तँ छोड़ू, ओकरा पढ़ब धरि असंभव भ' गेल। एहन प्रकाशन, जाहि सँ ने लेखकक प्रतिष्ठा बढ़तनि, ने पाठकक मनोरंजन हेतैक से लोक किएक किनत! पुरस्कार भेटलनि, लेखक टाका आ तगमा लेथु, घर जाथु।

पोथी पकवान नहि छियैक

वर्ष 2016। फरवरी मास। पटना। दरभंगा मेडिकल कालेजक 1973क एम. बी. बी. एस. बैचक सम्मेलन। तीन दिन धरि खूब मौज मस्ती भेलैक, एहि मौका पर जकरा जे उपहार मोन भेलैक, सहपाठी सब लेल अनने छल। हमरा लोकनि तीन गोटे अपन-अपन प्रकाशित पोथी सेहो सब केँ उपहार मे देलियनि। दू टा पोथी मैथिलीक रहैक आ एक टा हिंदीक। पोथी सब मुफ्त भेटैत रहैक, तेँ, जेहो नहि पढ़निहार, सेहो मांगि-मांगि पोथी जमा केलनि आ ल' गेलाह।

वर्ष 2020। अंत सितम्बर। लेखक-कविक एहि तीन गोटेक बीच एक व्यक्ति अपन कोनो दोहा व्हाट्सएप्प ग्रुप पर पोस्ट केलनि। हम हुनका हुनक उपनाम, जे हुनक उपहार स्वरूप देल पोथी मे मुद्रित रहनि, ताहि सँ संबोधित कय प्रशंसा कयलियनि, तेँ, लागल जे हमर अधिकतर सहपाठी हुनक नाम सँ सर्वथा अपरिचित रहथि। ततबे नहि, मुश्किल सँ दू गोटे केँ मोन रहनि जे हमर ओ सहपाठी-कवि तीन वर्ष पूर्व सब केँ अपन पोथी उपहार मे देने रहथिन! ओकरे विपरीत, ओही सम्मेलन मे दक्षिण भारत स्थित हमर एक सहपाठी विशाखापत्तनम सँ सब लेल आंध्रप्रदेशक पूर्वी गोदावरी जिलाक एक टा विशिष्ट मधुर-पूतारेकुलु-अनने रहथि। हमरा मोन अछि, मीटिंग हॉल मे राखल ओहि मधुर केँ लोक हाथे-हाथ तेना लोकि लेने रहैक जे हमरा अपन हिस्सा नहिए भेटि सकल! ततबे नहि, एखनो, चारि वर्षक बाद ओ मधुर सब केँ मोने छैक।

पटनाक ओहि सम्मेलन मे हमहूँ अपन एक टा पोथी बंटने रही। किन्तु, साहित्यकार समेत, हमर कोनो सहपाठी ओहि पोथीक विषय मे फोन केने हेताह वा दू पांती चिठ्ठी वा मेल लिखने हेताह से मोन नहि अछि। ओकर विपरीत पछिला 2018 मे कोच्ची, केरल मे हमरा लोकनिक बैचक सम्मलेन भेल छल। ओतय हमर समेत, आन मित्र लोकनि जे किछु उपहार ल' गेल रहथिन, सब केँ मोन छैक। किएक, से बुझबाले न्यूटन वा आइन्सटाइनक दिमाग नहि चाही!

आब एखनुक गप्प करी। हाल मे हमर एक टा नव पोथी छपल। बहुतो गोटे

केँ ओ पोथी पहुँचलनि–ए। मुदा, पहुँचनामा देनिहारक संख्या एक हाथक आंगुरपर गनला पर एखनो किछु आंगुर बचले अछि। तैँ, हमर विचार जे मुफ्तहु मे पोथी हुनके दियनि जे पढ़थि। कारण, कतेक गोटे मुफ्त भेटला सँ माहुरहु लेल हाथ पसारि दैत छथिन।

एहि विषय मे बहुत दिन पूर्व सुनल एक टा कथा मन पड़ैत अछि, एक गोटे केँ टाकाक अभाव नहि रहनि। ताहि पर ककरो सँ सुनने छलाह जे ब्लड हाउंड जातिक कुकुर राखब प्रतिष्ठा आ ऐश्वर्यक प्रतीक थिकैक। फलत:, पहुँचि गेलाह ब्लड हाउंड किनय। मुदा, खरीदारक व्यक्तित्व केँ देखि बेचनिहार हुनका हाथें ब्लडहाउंड कुकुर बेचब अस्वीकार क' देलकनि। बेचारे, हताश भेलाह। तामसो भेलनि। मुदा, व्यर्थ। कारण, कुकुर पोसनिहार कहलकनि, अहाँक व्यक्तित्व ब्लड हाउंड पोसबाक हेतु उपयुक्त नहि अछि! अस्तु, हमरा जनैत केवल पोथीक मोल सँ परिचित व्यक्ति वा पढ़निहारे टा केँ मुफ्तो पोथी लेबाक अधिकार छनि!

मैथिली आ तमिलक बीच भाषिक सेतुक निर्माण

राष्ट्रक अनेक भाग, भाषा आ धर्मक बीच सहमति आ संपर्क एकताक सेतु थिकै। अन्यथा, तमिलनाडुक वेदारण्यम् आ गुजरातक दांडी मे एके दिन नमक-सत्याग्रह कोना होइत, काशी आ रामेश्वरम् एक सूत्र मे कोना बान्हल जाइत। तथापि, एहि सूत्रक अनेक आयाम एखनधरि तन्नुक अछि,जकरा दृढ़ करबाक आवश्यकता छैक, निचला एके टा उदाहरण एहि आवश्यकताक औचित्यक प्रतिपादन करत। ई उदाहरण उत्तर आ दक्षिणक बीच भाषा सबहक सम्पर्क सँ संबंधित अछि। इतिहास विदित अछि, वैदिक संस्कृत सँ अभिज्ञ जनताक हेतु, 'मुक्ति'क मार्ग सुलभ करबा लेल भक्त-संत लोकनि भक्तिक बाट तकलनि। दक्षिण भारत मे वैष्णव-संत आड़्वार लोकनि, आ शैव-संत नयनार लोकनि एकर प्रवर्तक रहथि। पछाति भक्ति-परंपरा उत्तर मे सेहो पुष्पित-पल्लवित भेल। जयदेव-तुलसी-सूर-रसखान-विद्यापति-चैतन्य-कबीर, सब, एही परंपराक सूत्र मे गांथल मालाक फूल थिकाह। किन्तु, उत्तर आ दक्षिणक सब संत एक दोसरा सँ सुदूर आ संपर्कहीन। ज्ञातव्य थिक, जाहि विष्णु-कृष्णक भक्ति गीत आड़्बार संत लोकनि नेपालक मुक्तिनाथ सँ तमिलनाडुक श्रीरंगम् आ मथुरा सँ द्वारिका धरि गओलनि, जाहि शिव भक्तिक गीत नयनार संत लोकनि रामेश्वरम-कांञ्ची सँ काशी-सोमनाथ-मल्लिकार्जुन धरि गओलनि, ओही विष्णु-कृष्ण-शिवकभक्ति मे तँ विद्यापति आ चंदा झा सेहो गीत लिखलनि, रामायण रचलनि। किन्तु, ने उत्तर मे वैष्णव आड़्बार प्रणीत दिव्य-प्रबंधम्क स्तुति लोक गबैत अछि, ने शैव लोकनि 'तिरुवाचकम्' छथि। दोसर दिस, ने दक्षिण मे भक्त लोकनि विद्यापतिक भक्ति गीत गबैत छथि ने चंदाझाक रामायण पढ़ैत छथि। सत्य थिक, तमिल कवि कंबन् केर रामायणक मैथिली अनुवाद उपलब्ध अछि। किन्तु, ई कोनो एक व्यक्तिक अपन प्रेरणाक, परिणाम आ परिश्रमक फल थिक। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर, भारतीय संविधानक मे आठम अनुसूची मे वर्णित भाषा मे, ज्ञान पर आधारित उच्च गुणवत्ता युक्त पुस्तकक भारतीय भाषा मे अनुवाद, राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक उद्देश्य सब मे सँ एक अछि। तकर आवश्यकता छैक। अस्तु, हमरा विचारें,आरम्भ

मे केंद्र सरकारक योजनाक अंतर्गत Central University of Bihar आ तमिलनाडुक Central Institute Classical Tamilक बीच एक टा एहन दीर्घकालिक संकल्प-पत्र (Moratorium of Understanding)क आदान-प्रदान हेबाक चाही जाहि सँ चुनल, प्रतिभाशाली आ रुचि-संपन्न तमिल-आ मैथिल-भाषी छात्र मैथिली आ तमिल केर परस्पर अध्ययन कय एहि दुनू भाषाक बीच सुदृढ़ सेतुक निर्माण करथि, एक दोसराक साहित्यक अनुवाद करथि, आ राष्ट्रीय-भाषिक, आ सांस्कृतिक सूत्र केँ निरंतर दृढ़ करैत रहथि। आगू जँ ई योजना सफल भेल, तँ ई प्रयोग उत्तर आ दक्षिणक आन-आन भाषाक बीच सेहो सेतु निर्माण मे सहायक सिद्ध हयत। एहि पहल सँ भारतक राष्ट्रीय एकता दृढ़ हयत, से हमर विश्वास अछि।

ज्ञातव्य थिक उत्तर आ दक्षिणक भाषा सबहक बीच परस्पर अनुवादक बहुत काज पहिनहुँ भेल छैक। आगूक काज एही दिशा मे योगदान साबित हयत।

पत्र-पत्रिका आ सम्पादकीय दायित्व

आजुक युग मे पुस्तक-पत्रिका-विश्वकोषक कमी नहि। मुदा, लेखन लेल लिखबाक लूरि तँ चाही, लिखल के सुधारबाक समय आ रुचि तँ चाही। छपाइ कतेक सुलभ छैक, से सर्वविदिते अछि। छपल सामग्रीक प्रतिष्ठा एखनो छैक, नहि तँ रचना केँ छपयाबाले लोक किएक आफन तोड़इत! तथापि, हमरा जनैत, एखनुक युग मे पत्र-पत्रिकाक शुद्ध छपाइ आ सामग्रीक प्रामाणिकता मे ह्रास भेलैये। ई नीक नहि, से तँ सब मानब। पांडिचेरी मे किछु बन्धु-मित्र गप्पक क्रम मे कहलनि, भारतक स्वतंत्रताक पूर्व 'हिन्दू' दैनिक अखबार मे प्रकाशित सामग्री केँ सरकारी 'गजेट' जकाँ प्रामाणिक मानल जाइत छलैक। आइ 'हिन्दू' मे सेहो अनेको अशुद्धि भेटत। एहन परिस्थिति मे पोथी-पत्रिका मे छिड़ियायल तथ्यात्मक अशुद्धि निर्विवाद पत्र-पत्रिकाक एवं पोथीक प्रामाणिकता आ प्रतिष्ठा दुनूपर प्रश्नचिन्ह लगबैत अछि। एकर छार-भार ककरा पर? एहि समस्या पर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सब अपन संस्थाक भीतर आत्म-मंथन करैत छथि आ स्वतंत्र पर्यवेक्षक (ombudsman) नियुक्त केने छथि। मुदा, सब पत्र-पत्रिका केँ ने तकर साधन छैक आ ने सुधि। तेँ, प्रकाशनक एहि पक्षपर दृष्टिपात आवश्यक।

व्यक्तिगत कृतिक हेतु प्रामाणिकता आ शुद्धि-अशुद्धि, सब कथुक, दायित्व लेखक-प्रकाशकक थिकनि। किन्तु, बहुलेखक ग्रन्थ आ पत्र-पत्रिकाक ममिला मे सामग्रीक प्रामाणिकताक हेतु लेखक आ सम्पादक दुनू उत्तरदायी छथि। एहि थोड़ पृष्ठभूमिक संग आजुक मैथिली पत्र-पत्रिका सब मे सम्पादकीय वृत्ति पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करब हमर उद्देश्य अछि। एहि लेखक संबंध कोनो एक टा पत्रिका सँ नहि, बल्कि, सम्पादकीय वृत्तिपर विस्तृत चर्चा आरम्भ हो से हमर अभीष्ट अछि।

सम्पादक के थिकाह। सामान्य अर्थ मे जे 'कोनो काज (सम्पादन) करथि ओ भेलाह सम्पादक। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' अनुसारें, 'पत्र-पत्रिका आ बहुलेखक पोथीक विषय-वस्तु आ स्वरूपक निर्णायक सम्पादक थिकाह'। मुदा, जँ एखुनका पितामह 'गूगल विकिपेडिया' केँ पुछियनि तँ 'संपादन, संशोधन, संक्षेप, संरचना आ संगठन द्वारा कोनो भाषा, चित्र वा ध्वनि केँ प्रदर्शनक हेतु सुधारबाक, नीक बनयबाक प्रक्रिया थिक; आ संपादन केनिहार संपादक कहबैत छथि।'

मैथिली मे कोनो समाचार पत्र नहि छैक। एखनुक पत्र-पत्रिका अपन प्रामाणिकताक

मानदण्ड स्वयं स्थापित केने होथि, से सम्भव। मैथिलीक हस्तलिखित पत्रिका सब सँ हम परिचित नहि छी। ओहि युग मे सम्पादक लोकनि केहन पत्रिका छपैत छलाह से शोधकर्ता लोकनि कहि सकैत छथि। मुदा, (स्व. प्रोफेसर रमानाथ झा द्वारा सम्पादित) मैथिली साहित्य पत्र तथा मिथिला मिहिर, मिथिला दर्शन (वर्तमान सहित),वैदेही, विद्वतमण्डली मे समादृत छल से सर्वविदित अछि। तथापि, तहियो सब छपल सामग्री सर्वथा दोषमुक्त नहि होइत छलैक, से संभव। नहि तँ, स्व. हरिमोहन झा 'प्रेसक लीला'-सन कथा कोना लिखितथि। मुदा, ओ भेल केवल छपाइक गप्प।

एखुनक पत्र-पत्रिका मे जँ सम्पादकीय वृत्तिक गप्प करी, तँ, सम्पादक लोकनिक समस्या केँ अनदेखी कोना कए सकैत छियनि। मुदा, अपन समस्याक समाधान सम्पादक लोकनि अपने ताकथु। तथापि, कंप्यूटरक प्रयोग लेखन-सम्पादन मे क्रांति आनि देलकै-ए से के नहि मानत। आब लेखन-प्रकाशन केर एक-एक विन्दु पर नजरि घुमाबी।

पत्रिकाक सब सँ पैघ समस्या होइत छैक सहज, बुझबा योग्य भाषा मे लिखल प्रामाणिक रचनाक अभाव। सब रुचिक रचना केँ एकठाम संकलित करब दोसर समस्या थिक। जँ सामग्रीक विविधताक गप्प करी, तँ, कथा, कविता भेटब प्राय: सुलभ छैक। अनेक कारण सँ, विज्ञान विषयक, चिकित्सा शास्त्रक, राजनैतिक, यात्रा-वृत्तांत, पाक-विज्ञानक स्तरीय लेखकक अभाव एखनो छैक। स्तरीयताक परवाहि नहि करी तँ इन्टरनेट युग मे सबतरि विभिन्न विषय पर ढउए-ढाकी लेख भेटत। भाषा कोनो होइक 'गूगल अनुवाद' पर अनुवाद कए लियअ। चेफड़ी लगाउ, चिप्पी सब (cut and paste) जोड़ि-जोड़िकए नौ हाथक बनारसी-पटोर-साड़ी, माने लेख, तैयार कए लिअ! मुदा, जाहि युग मे लोक केँ फेसबुक (facebook) आ व्हाट्सएप (Whatsapp) पढ़बा सँ फुर्सति नहि छैक, ताहि युग मे समेटल बंगौर केँ के पढ़त! तेँ, जँ लेख केर सामग्रीक उपयोगिता आ रोचकताक दायित्व लेखकक थिकनि, तँ, लेख केर चुनावक दायित्व तँ सम्पादकेक थिकनि। एखन जखन कि सबतरि सूचनाक बाढ़ि छैक, लेख सबहक प्रामाणिकता केँ भजारबाक कष्ट पाठक किएक उठओताह! अत: एकबेर जे छपल से भ' गेल प्रामाणिक। आ प्रामाणिक पत्रिका मे छपल तँ भ' गेल ब्रह्म-वाक्य। एही दुआरे एहि युग मे 'पोस्ट-ट्रुथ' (post-truth) सन शब्दक आविष्कार भेलै; 'पोस्ट-ट्रुथ' एहन परिस्थिति थिक जाहि मे प्रचारित सामग्री केँ वस्तुनिष्ठ रूपें बिनु भजारनहि, पूर्वाग्रह वा अपन विश्वासक अनुकूल लोक (फूसिओ केँ) सत्य मानि लैछ। तथापि, अनर्गल वा दोषपूर्ण सूचना सँ पत्रिका मे पाठकक विश्वास तँ अवश्ये घटैत छैक। आ जँ पत्रिका सँ पाठकक विश्वासे उठि गेलैक, तँ, लोक पत्रिका किनत किएक, आ पत्रिका लेल बाँकी बचलैक की?

दोसर गप्पक संबंध कहबाक शैली सँ छैक। सहज-सरल भाषा लोक केँ नीक

भ' कय बुझबा मे अबैत छैक। कठिन भाषा सक्कत फुटहा चिबायब-सन प्रतीत होइछ। सम्पादक भाषा पर माथापच्ची करथि कि नहि, से सोचू। मुदा एतबा तँ अवश्य, जँ लेख पढ़ि कय सम्पादक केँ किछु भांजे नहि लगलनि, तँ, पढ़निहार के बुझबा मे की अओतनि! आ पत्रिका मे एहन लेख जँ छपि गेल तँ दोष ककर? आ लाभ की?

एक टा आओर समस्या। समालोचनात्मक (?) लेख सब जहाँ-तहाँ अनेरुआ घास-जकाँ पत्र-पत्रिका सब केँ छारने भेटत। जनिका जखन मोन होइत छनि, समालोचना लीखि बैसैत छथि। तकर ई अर्थ किन्नहु नहि जे गम्भीर समालोचक नहि छथि। मुदा, नव गप्प, नव दृष्टि कदाचिते देखबैक। बेसी काल ओहने गप्प, 'चूड़ा-दही बडु (बड्ड) मधुर होइत छैक, किएक? तँ, 'महराजी पोखरि पर सिपाही सब चूड़ा-दही खाइत छलैक, कहलैक बड्ड मधुर होइत छैक।' माने, अमुक विद्वान ई कहलनि, दोसर ई कहलथिन। तेसर, ई ....., आदि-आदि। अस्तु, जखन लेख पढ़ला उत्तर हमरा किछु भांजे नहि लागल, विद्यार्थी परीक्षा मे लिखिए नहि सकैत छथि, लेखक केँ विद्वताक सर्टिफिकेट नहिए भेटतनि, तखन, सम्पादक अपन दायित्वक निर्वाह किएक ने करथि? सम्पादक सँ पाठक केँ एतबा अपेक्षा तँ होइते छैक।

सम्पादकीय उदासीनताक उदाहरण देब बिढ़नी छत्ता मे हाथ देब थिक। हम केवल पाठक छी। पोथी-पत्रिका कीनि कय पढ़ैत छी आ नीक सामग्रीक अपेक्षा रखैत छी। तेँ, हमर विचार पाठकक दृष्टि थिक। मुदा, एक टा गप्प एतय अप्रासंगिक नहि होयत। ई थिक वैज्ञानिक आ मानिविकीय क्षेत्र मे peer-review क परम्परा। शोधकर्ता लोकनि लेल ई शब्द नव नहि। तथापि, एतय peer-review केँ फरिछायब आवश्यक। peer-review मे लेखकक परिचय केँ गोपनीय रखैत, प्रतिपादित तथ्यकेर नवीनता, तर्क, प्रमाण, उपयोगिता, आ भाषाक निकतीपर तौलबा लेल लेख केँ एक वा अधिक सुपरिचित विद्वान आ गणमान्य विशेषज्ञ लग पठाओल जाइछ। विद्वान लोकनिक सुझावक आधार पर लेखक अपन लेख मे संशोधन करैत छथि आ अंततः लेख स्वीकृत वा अस्वीकृत होइछ। प्रक्रिया श्रम-साध्य छैक, आ लेख केँ छपबा मे समय लगैत छैक, मुदा, ताहि सँ लेख, लेखक, आ पत्रिकाक सबहक प्रतिष्ठा बढ़ैत छैक। सामान्य रुचिक पत्रिका लेल peer-review संभव नहि। तेँ, तथ्यकेर मोट-मोट अशुद्धिक, भाषा आ छपाइक एकरूपता, आ बाँकी सब कथूक दायित्व संपादके केर छियनि। अर्थात, सम्पादके भेलाह peer-reviewer। आ ओएह लेथु सब रुचिक रोचक सामग्रीक चयन, स्तरीयता, भाषा आ कानूनी पक्षक दायित्व। हमरा जनैत, पत्रिका, लेखक आ प्रकाशक सबहक हित मे एतबा अपेक्षा स्वाभाविक। आ संपादक द्वारा एतबा भार उठायब पर्याप्त छैक। हँ, कंप्यूटर सँ परिचित, दूरस्थ लेखक सेहो प्रूफ-रीडिंग मे सम्पादकक सहायता तँ कइए सकैत छथिन। वर्तमान युगक सम्पादक लोकनि ई सुविधा उठाबथि; विकल्प तँ अपनहि हाथ छनि।

पत्रकारिताक लक्ष्मणरेखा

हम पत्रकार नहि, मुदा ओहि पीढ़ीक नागरिक अवश्य छी जहिया पत्र-पत्रिका सूचना आ मनोरंजनक एकमात्र श्रोत छलैक। तहिया, ने इन्टरनेट छलैक, ने फेसबुक आ ने Whatsapp। फलत:, लोक सड़क पर माथ ऊपर उठाकय चलैत छल*, आ पत्र-पत्रिका सामान्य-ज्ञान बढ़ेबाले आ नीक भाषा सिखबाले पढ़ैत छल। आब टीवीक प्रचार, चौबीस घंटा चैनेलक अष्टयाम आ इन्टरनेटक प्रतापें ने युवक वर्ग समाचारपत्र पढ़ैत छथि आ ने बहुतो समाचार पत्रक भाषा अनुकरणीय रहि गेलैये। उपर सँ, समाचारक परिभाषा सेहो बदलि गेलैये। अब प्राइम टाइम न्यूज केर विषय होइछ,टीवी प्रोग्राम 'नच बलिये' मे के जीतल, IPL मैच लेल कोन खेलाड़ी कतेक मे बिकयलाह, सासु-पुतहु टीवी सीरियल मे ककर विवाह ककरा सँ हेतैक वा ककरा सँ के तलाक लेलक। पटनाक गंगापुल ध्वस्त भ' जाउ, कमला कातक लोक दहा जाओ। मुदा, प्रतिष्ठित अंग्रेजी चैनल पर चिकरा-चिकरी हयत IPL केर चेयरमैनशिप केर राजनीतिपर। कतेक बेर तँ अंग्रेजीक चारि टा प्रतिष्ठित टीवी चैनल केँ बदलि लियअ, अहाँ केँ भले घुरमा लागि जाय, मुदा, सब ठाम एके विषय पर वाद-विवाद। जेना, समाचारक अकाल पड़ि गेल होइ! आखिर एक टा शहर दिल्ली। ओतय बैसल-बैसल कतेक समाचार भेटत! ताहि पर उपरौंझ, TRP, आ ब्रेकिंग न्यूज! केंद्रीय मंत्री गडकरी कहलखिन, ओ अपन फुलबारी अपने मूत्र सँ पटबैत छथि। पटबथु! मुदा, अद्‌भुत गप्प जे इहो ब्रेकिंग न्यूज भ' सकैत अछि! जखनो पत्रकार, पीड़ित आ शोक संतप्त परिवार सँ पूछैत छथिन, 'आप का लड़का इस हादसे मे मारा गया है आपको कैसा लगता है' हमरा बड़ अनसोहांत लगैत छल।

पत्रकारक अभिप्राय, जे उत्तर भेटतनि—'हमको भांगड़ा करने का मन होता है!'

---

* एखन मोबाइल फोन मे मुड़ियारी मे मुड़ियारी देने चलैछ।

TRP—Target rating point लोकप्रियताक वर्तमान मापदंड थिक।

हृदयहीनताक एहन उदाहरण हमरा लोकनि प्रतिदिन दिन देखैत छलहुँ आ दुखी होइत रही। मुदा, suited-booted रोबोटनुमा पत्रकार लोकनि किएक सीख लेताह। संयोग सँ, नेपाल मे वर्ष 2015क भयानक भूकंपक पछाति सब पत्रकार लोकनि काठमांडू जुटलाह। मुदा, बहुतो पत्रकार केँ ई बुझबा मे नहि अयलनि जे ई भूकंप एक टा भयंकर मानवीय त्रासदी छल। ततबे नहि, नेपाल एक टा सार्वभौम देश थिक आ नेपाली नागरिक अपन देशक स्वतंत्रताक प्रति अत्यंत संवेदनशील छथि। फलतः, जखन भूकंप पीड़ित, शोक-संतप्त नागरिक सब सँ sound-bite लेबाक आ breaking न्यूज फाइल करबाक जोश मे पत्रकार लोकनि आदतन लक्ष्मण रेखा पार करय लगलाह, तँ, नेपालक नागरिक हिनका सब केँ नेपालक सीमापार वापस हेबाले बाध्य कए देलकनि। पत्रकार लोकनिक अशोभनीय व्यवहार सँ भारतक प्रतिष्ठा केँ सेहो धक्का लगलैक। मुदा आब तकर की उपाय? तथापि ई दुखद प्रकरण भारतीय पत्रकारिता आ Visual Media क नेता लोकनिले आत्ममंथनक विषय थिक!

साहित्य आ शिष्टाचार

1979 सितम्बर मे 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक मे हमर पहिल कथा छपल छल। मोन अछि, कथाक प्रकाशनक एक मासक भीतर हमरा नामक बीस रुपैयाक मनीआर्डर 'मिथिला मिहिर' सँ आयल छल। बीस रुपैया बहुत तँ नहि छलैक। मुदा, तहिया एक सौ टाका मे एक छात्रक हेतु लगभग मास भरिक मेस केर खर्च पूरा भ' जाइत छलैक। तेँ, तहिया बीस रुपैयाक महत्व अजुका बीस रुपैया सँ बेसी अवश्ये रहैक। तथापि, ई बीस टाका मात्र एक टा सौजन्य छल, मानदेय राशि (honorarium)छल,वा पारिश्रमिक छल से कहब कठिन। 'मिथिला-मिहिर' तँ कहिया ने इतिहास भ' गेल आ ओकर संगहि दीर्घजीवी मैथिली पत्रिकाक परंपरा सेहो समाप्त-प्राय भ' गेल। प्रायः, 'मिथिला मिहिर'क अतिरिक्त आओर कोनो मैथिली पत्रिका लेखक केँ पारिश्रमिक वा मानदेय राशि दैत छल होइक से हमरा नहि बूझल अछि। मुदा, एहि लेख मे हम साहित्य मे विभिन्न स्तर पर शिष्टाचार पर विचार करय चाहैत छी। एहि विषय केँ उदाहरण सँ बेसी नीक-जकाँ बूझल जा सकैछ। तथापि, हम एहि लेख मे व्यक्ति, आ व्यक्तिगत अनुभव केँ दूर राखब।

वैज्ञानिक क्षेत्र मे लेखन आ प्रकाशन, व्यक्ति वा व्यक्ति-समूहक नव अनुसंधानक प्रकाशन, अपन क्षेत्र मे प्रतिष्ठा-अर्जन, आ पदोन्नति लेल अनिवार्य बूझल जाइछ। तेँ, वैज्ञानिक लोकनि अपन लेख केर बेसी सँ बेसी प्रतिष्ठित पत्रिका मे प्रकाशनक सपना देखैत छथि। तथापि, लेखक लोकनि अपन स्थान, अनुसन्धानक विधा, आ लेख केर गुणवत्ताक अनुकूल पत्रिकाक चुनाव करैत छथि। मानविकी सेहो एहि परंपराक अनुसरण करैछ। मुदा, कोनो लेख केर प्रकाशन केर पूर्व लेख मे सुधारक हेतु लेख केर लेखक लग एक वा अनेक बेर आपस आयब अस्वीकृति, स्वीकृति आ प्रकाशनक प्रक्रियाक सामान्य अंग थिकैक। किन्तु, लेख सोझे स्वीकृत हो वा सोझे अस्वीकृत,अथवा सुधारक पछाति स्वीकृत हो, प्रत्येक परिस्थिति मे संपादक लेखक केँ पहुँचनामा अवश्य लिखैत छथिन, आभार अवश्य प्रदर्शित करैत छथिन। हमरा जनैत साहित्यकार-लेखक सेहो एतबा आभार आ एतबा सौजन्यक अधिकारी

तँ छथिए। कारण, प्रकाशन जँ लेखक-कवि-कथाकार हेतु आवश्यक, तँ, स्तरीय लेख सेहो पत्रिकाक अस्तित्व लेल अनिवार्य। तँ, साहित्य-साहित्यकार आ सम्पादक-प्रकाशक एक दोसराक पूरक थिकाह। अस्तु, हिनका लोकनिक बीच सौजन्य आ शिष्टाचार स्वस्थ साहित्यिक परम्परा आ सत्साहित्यक आधारशिला थिक।

इन्टरनेटक आविष्कार सँ पूर्व प्रकाशनक क्षेत्र मे की परम्परा रहैक? एक दृष्टि एहू पर। इन्टरनेटक आविष्कार सँ पूर्व, 'बिनु मांगल लेख केर पहुँचनामा ज्ञापित नहि हयत, आ अस्वीकृत लेख वापस चाही तँ डाक-टिकट लागल लिफाफ अवश्य पठाबी', एतबा सूचना पत्रिकाक संपादक लोकनि लेखक केँ अवश्य दैत रहथिन। हँ, लेख केर प्रकाशन स्वयं स्वीकृतिक पर्याय छलैक। तें, संपादक लेखक केँ औपचारिक स्वीकृति नहि पठबैत रहथिन। हँ, निमंत्रित लेख केर लेखक-साहित्यकारक प्रति वा वरिष्ठ लेखकक प्रति संपादक लोकनि पत्र द्वारा औपचारिक आभार प्रदर्शित करैत रहथिन कि नहि, से हम नहि कहैत छी। आइ इन्टरनेटक युग मे बहुतो गोटे सम्पर्क-संवाद लेल डाक-तार पर निर्भर नहि छथि। पत्रोत्तर देब सुलभ आ मुफ्त भ' चुकल छैक। अधिकतर संपर्क फोन आ इन्टरनेट पर होइत छैक। तथापि, अनेक बेर लेख केर हेतु पहुँचनामा तथा पत्रिका मे लेख केर प्रकाशनक पछाति लेखक केँ पत्रिकाक लेखकीय प्रति देब तँ दूर, लेखक केँ आभारक एको शब्द धरि देब उचित नहि बूझैत छथि। हमरा जनैत, ई उचित नहि।

आइ काल्हि बहुतो गोटे कहैत छथि, 'जे लिखैत छथि, सएह पढ़ैत छथि'। एकर दू टा अर्थ। एक, किछु लेखक केवल अपने टा लिखल लेख पढ़ैत छथि, वा केवल लेखक लोकनि पाठक थिकाह। फलत:, परिचित, अपरिचित, नीक वा बेजाय लिखनिहार सब गोटे अपन-अपन छपाओल पोथी मुफ्त मे बंटैत छथि। सेहो ठीक। मुदा, मुफ्त मे आयल पोथी केँ पढ़ब वा नहि पढ़ब तँ उपलब्ध सामग्रीक विषय-वस्तु, रुचि, आ लेखनक गुणपर निर्भर छैक। मुदा, पोथीक पहुँचनामाक सूचना आ धन्यवाद तँ शिष्टाचारक विषय थिक। आइ सँ बीस वर्ष पूर्व सुपरिचित, प्रतिष्ठित लेखक लोकनि सेहो पोथीक पहुँचनामाक पोस्टकार्ड अवश्य लिखैत छलथिन। रचना नीक लगनि, तँ उत्साहवर्धक शब्द सेहो अबैक। ई उत्सावर्धन नव-पुरान लेखकक लेखकीय ऊर्जा केँ बढ़बैत छैक। आइ ओहि परम्परा मे ह्रास भेल अछि। ई नीक वा बेजाय से स्वयं निर्णय करू।

साहित्य मे शिष्टाचारक अओरो अनेक आयाम छैक। हिंदीक एक टा नवोदित, किन्तु, सुपरिचित कवयित्री कहलनि, साहित्यिक गोष्ठी मे सब कलाकार केँ ई प्रयास रहैत छनि जे सब सँ पहिनहि अपने कृतिक पाठ करी आ तुरत विदा भ' जाइ; 'अपन विवाह भेल, शुद्ध बीति गेल'। एकर अनुमान कार्यक्रमक आरम्भ आ अंत मे

उपस्थित साहित्यकार लोकनिक उपस्थिति सँ अपने भ' जायत। इहो व्यवहार जएह लिखैत छथि, सएह पढ़ैत छथि, ओही प्रवृत्तिक द्योतक थिक। एकर अतिरिक्त, पत्रिकाक स्तरक अनुकूल प्राप्त लेखकेर गुणवत्ताक आधार पर चुनावक आ छपबाक क्रम निर्धारण संपादक केर अधिकार छियनि। किन्तु, नीको लेख केँ दबाकय राखब आ बेजायो केँ आगू बढ़ा देबाक प्रवृत्ति साहित्यिक शिष्टाचार प्रतिकूल थिक।

समालोचना आ पाठकीय दृष्टि

समालोचना वा आलोचना साहित्यक स्तम्भ थिक। ई विज्ञान थिकैक; एकर व्याकरण, पद्धति आ परम्परा छैक। किन्तु, विशुद्ध मनोरंजन लेल उपन्यास, कविता, कथा, नाटक आ लेख पढ़निहार पाठक समालोचना पढ़िकय सामग्रीक चयन नहि करैत छथि। तखन प्रश्न उठैछ, की समालोचना साहित्ये- जकाँ लेखकक हेतु केवल मनोरंजनक विधा थिक? वा ई साहित्य-लेखनक व्यवसाय सँ जुड़ल व्यक्तिक बीच एक दोसराक दल मे हेबाक, वा एक दोसरा सँ बदला सधयबाक, वा परस्पर प्रशंसा वा निंदा करबाक रंगमंच वा अखाड़ाक अतिरिक्त, किछु आओर थिक? एहि लेख मे हम एही किछु विन्दु पर विचार करय चाहैत छी। गूढ़ ग्रंथक 'नामूलं लिख्यते किंचित् नानपेक्षितमुच्यते'*—सदृश भाष्यकार आ हुनक कृतिक उपादेयता एहि लेखक परिधि सँ बाहर अछि।

अस्सीक दशक मे एक टा हिंदी सिनेमा आयल रहैक - निकाह। ओ सिनेमा खूब सफल भेलैक आ ओकर गीत सब खूब सेहो लोकप्रिय भेल। एहि सिनेमा मे सलमा आगा नामक हिरोइन पहिले बेर सिनेमाक पर्दा पर आयल रहथि। गीत सब सेहो ओएह गओने रहथि। मुदा, जखन अभिनेत्रीक रूप मे सलमा आगाक चर्चा भेलनि, तँ, केओ हुनका ज्यामितीय सुन्दरी (geometric beauty) कहि देलखिन। मने, नाक ठाढ़ छनि,ठोर पातर छनि, गाल पुष्ट छनि, गरदनि सुरेबगर छनि, केश सघन आ कारी छनि, मुदा, सब किछु केँ मिलाकय पूर्णता मे सुन्दरताक बोध नहि होइछ। तहिना, भ' सकैत अछि, साहित्य, शिल्प-भाषा, कथानक, कथ्य, कथोपकथन आ संदेशक दृष्टियें संतुलित हो, किन्तु, लोकप्रियताक तराजू पर झूस साबित हो। तेँ, सामान्य धारणा छैक, पुरस्कृत पोथी, आ फिल्म कदाचिते लोकप्रिय होइछ। अर्थात्, आलोचना आ पुरस्कारक भिन्न-भिन्न मानदंड होइछ। प्रोफेसर श्रीश चौधरी कहैत छथि, 'इतिहास कहैत अछि, लार्ड अल्फ्रेड टेनिन्सन आ विलियम वर्ड्सवर्थ केँ छोड़ि

---

* कुमारसम्भवम्—मल्लिनाथ

(इंग्लैंड मे) कदाचिते कोनो राज-कवि (poet laureate) अपना समयक पछाति साहित्य मे सुपरिचित छथि।' अर्थात् पुरस्कार पुरस्कृत कवि लोकनि केँ अमर बनयबा मे समर्थ नहि भेल! किन्तु, रचनाक लोकप्रियता साहित्यकार लोकनि केँ अवश्य अमर करैत आयल छनि। इहो तथ्य समकालीन समालोचना-पुरस्कार आ लोकप्रियताक दू टा भिन्न बाटक संकेत थिक। अस्तु, साहित्यक समालोचनाक मानदंड आ साहित्यक लोकप्रियताक बीच संबंध फरिछयबाक आवश्यकता हमरा प्रतीत होइत अछि। एहि विषयक आरम्भ हम ९०क दशक मे पुरस्कृत एक टा मैथिली कविता-संग्रह सँ करब। सर्वविदित अछि, वैद्यनाथ मिश्र-यात्री-नागार्जुन अपन विशिष्ट शैली, कृति आ बेछप व्यक्तित्वक कारण प्रसिद्ध छथि। एक बेर जखन एक काव्यकृति पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक घोषणा भेलैक तँ नागार्जुन कहि देलखिन, 'अमुक कवि मे काव्य-बीज नहि छनि!' एकरा कविक साहित्य पर साहित्यकारक उक्ति बुझू वा लोकप्रियताक मानदंड पर साहित्यक तौल, से अहाँपर निर्भर अछि।

ई सत्य थिक, साहित्य मे कविताक पाठक सब सँ कम होइछ। एखनुक युग मे तँ आओर कम। लार्ड मेकॉले तँ एतेक धरि कहि गेल छथि, 'सभ्यताक विकासक संग, कविताक ह्रास होइत जाइछ - Civilization advances, poetry declines.' से नहिओ होउक, तथापि, हमरा नहि बूझल अछि, अनेक भाषाक पुरस्कृत साहित्यक बाजार आ समाज मे कतेक मांग छैक। किछु पोथी तँ पुरस्कारक ठप्पा आ मार्केटिंग सँ अवश्य बिकाइत हेतैक। तथापि,एतबा तँ अवश्य जे पुरस्कृत कृति निर्णायक-मंडलक दृष्टि मे निर्धारित कालखंड मे प्रकाशित कृति सब मे सँ अव्वल होइछ। तथापि, निर्णायक-मंडलक सदस्य लोकनिक पुरस्कृत पोथी पर दसो पांतीक, फूट-फूट समीक्षा लिखबाक परिपाटी छैक कि नहि, से हमरा ई नहि बूझल अछि। इहो कहब असंभव जे पी. एच-डी.क थीसिस केँ जँ छोड़ि दी, तँ, कहब कठिन, जे पुरस्कृत पोथी सब मे सँ कतेक पर समीक्षा लिखल जाइछ।

आब एक टा दोसर विन्दु। ई विन्दु पोथीक लोकप्रियता आ आलोचनाक परिणामक बीच अंतर सँ सम्बन्धित अछि, समकालीन साहित्यक आलोचना आ समाजक व्यवहार मे निरपेक्षता असंभव नहि, तँ, कठिन अवश्य छैक। कोर्ट-कचहरी सँ ल' कय पुरस्कारक निर्णय मे सेहो जूरीक परिपाटी एकरे समाधान-जकाँ थिक। तथापि, आवश्यकता छैक साहित्य, साहित्यक तौलबा भजारबाक निकतीपर अवश्य चढ़य। प्रायः, चढ़ितो अछि। किन्तु, तकर समय सीमा नहि छैक। तेँ, कतेको बेर सैकड़ो वर्ष अपरिचयक अन्हार मे पड़ल साहित्य एकाएक धूमकेतु-जकाँ जँ नहिओ, तँ क्रमशः कालजयी कृतिक आसन पर बैसि जाइछ। किन्तु, तकर निर्णय समाज करैत अछि। तहिना, की साहित्यक समालोचना द्वारा कृतिक लोकप्रियताक भविष्यवाणी

सम्भव छैक? नहि, तँ, कि साहित्यिके समालोचना-जकाँ पाठकीय समालोचनाक नव विधाक आरम्भ करबाक औचित्य छैक? जँ, हँ, तँ, कोना?

ई विदित अछि, आम पाठक लोकनि लिखबाक पचड़ा मे नहि पड़ैत छथि। तथापि, लोकप्रिय साहित्य पर लिखित वा मौखिक पाठकीय प्रतिक्रिया आ औपचारिक समालोचनाक अध्ययन सँ सम्भव अछि, साहित्यक मूल्यांकनक कोनो मध्य मार्ग स्थापित हो। एहि संभावनाक अन्वेषण हेबाक चाही।

विदित अछि, साहित्यिक समालोचनाक विधाक खेतिहर साहित्यकार थिकाह। समकालीन समालोचक केँ बिरादरी मे भाइ-भतीजाबाद सँ ऊपर उठब कठिन छैक। भाग्यवश, पाठक एहि बिरादरीक हिस्सा नहि थिकाह। ओ पढ़बाक व्यसन सँ, चाह-काफी-सिकरेट-वा शराब-जकाँ पोथी किनैत छथि। तैँ, नीक लागल, तँ नीक। अधलाह, तँ, थूकि देल। पैसा बेकार भेल, भेल। तैँ, पाठकीय प्रतिक्रिया मे लोभ-लाभ (conflict of interest)क दोष नहि अबैत छैक। समकालीन समालोचक लेल एहि लोभ-लाभक विषय सँ ऊपर उठब जँ असंभव नहि, तँ, कठिन अवश्य। जे समकालीन समालोचक एहि सँ ऊपर उठैत छथि ओ तँ चाहे नवसिखुआ थिकाह, जनिका लोक मोजर नहि दैत छनि, अथवा ओ कालिदास थिकाह जे ओही ठारि पर कुड़हरि बजारैत छथि जाहि पर चढ़ल छथि। एहि सँ भिन्न तेसर कोटिक निरपेक्ष समालोचक प्रशंसनीय थिकाह। किन्तु, एहि सब कोटिक समालोचक जँ अंततः अपन आलोचनाक तुलना पाठकीय प्रतिक्रिया एवं सत्साहित्य पढ़निहार पाठकक बीच पोथीक लोकप्रियता सँ करथि तँ आलोचना साहित्य मे प्रायः नव परिपाटीक उत्थान होइत।

भूमिका लिखबाक दिन

जे नित्य प्रति किछु-किछु लिखैत छथि, हमरा जनैत, ओ लिखबाले दिन-बेरागन, मुहूर्त नहि तकैत छथि। किन्तु, जँ प्रकाशित पोथी सबहक भूमिका देखबैक तँ लागत, लेखक लोकनि सब भूमिका कोनो-ने-कोनो नीके दिन ताकि कय लिखलनि-ए; हेमंती पूर्णिमा, विजयादशमी, गंगा दशहरा, आदि। ई हमरा रोचक लगैत अछि। तेँ, हमरा मन मे प्रश्न उठय लागल, की नीक दिन ताकि भूमिका लिखबाक कोनो स्थापित परिपाटी छैक आ कि केवल भूमिका लिखबाक दिन केँ एक टा सार्थकता वा विशिष्टता देबा लेल लेखक लोकनि ओकरा स्मरणीय दिन सँ जोड़ैत आयल छथि। हम व्यवसायें मूलत: लेखकक श्रेणी मे नहि छी। किन्तु, व्यवसायत: लेखक लोकनि, भूमिका लिखबा लेल नीक दिन तकैत छथि, वा नहि, वा नीके दिन किएक तकैत छथि ? चलू आइ एकरे कारण ताकी। प्रोफेसर भीमनाथ झा कहलनि, 'पहिने भूमिकाक परिपाटी नहि रहैक'। से हमरा अपनो देखबा मे आयल। हमरा लग जे पोथी सब अछि ओहि मे सँ बहुतो पुरान पोथी मे तँ भूमिका छैहे नहि। जेना, श्रीनगेन्द्रनाथ गुप्त केर 'विद्यापति ठाकुर की पदावली' (1910), म.म. बालकृष्ण मिश्रक विद्यापति पदावली (1937), प्रोफेसर तंत्रनाथ झाक कीचकवध। ततबे नहि, किछु पोथी जाहि मे भूमिका छैको ताहू मे भूमिका लिखबाक दिन आ मुहूर्त मे एकरूपता नहि भेटल। महावैयाकरण दीनबंधु झाक 'मिथिला भाषा विद्योतन' एकर प्रमाण थिक। जतय महावैयाकरण अपन भूमिका मे दिन वा स्थानक चर्चा नहि केने छथि, ओही 'मिथिला भाषा विद्योतन'क प्रथम खंड-व्याकरणक प्रकाशकीय वक्तव्यक दिन आचार्य रमानाथ झा जँ वसन्त पंचमी 1953 लिखैत छथि, तँ दोसर खंड-धातु-पाठक प्रकाशकीय लिखबाक दिन केँ कांचीनाथ झा 'किरण' जी जानकी नवमी, 1357 साल अंकित करैत छथि। प्रश्न उठैछ, नीक दिन मे भूमिका लिखबाक परिपाटी कोना आरम्भ भेलैक। प्रोफेसर भीमनाथ झाक कहब छनि, 'समाज मे शुभ कार्य नीक दिन मे करबाक परम्परा छैक। अस्तु, भूमिका लिखबाले सेहो लोक दिन नियारैत छल'। किन्तु, हमरा तँ लगैत अछि, लिखबाक हेतु ओ मुहूर्त सब सँ शुभ थिक जखन

लिखबाले किछु फुरैत हो! आ तकरा दिन आ मुहूर्त सँ कोन सरोकार! तथापि, चली आ देखियैक मैथिलीक शीर्ष आ सामान्य, पुरातन आ अधुनातन, वैज्ञानिक, आ नास्तिक लेखक लोकनि भूमिका-लिखबाक कोन-कोन दिन चुनलनि-ए। ओहि मे सँ जे साहित्यकार जीवित छथि, ओ भूमिका लिखबाक दिनक चुनावपर प्रकाश द' सकैत छथि। दिवंगत साहित्यकार लोकनिक संबंध मे केवल अनुमान सम्भव अछि। आचार्य सुमन जी आधुनिक मैथिली युगक सर्वप्रसिद्ध साहित्यकार मे सँ एक छथि। तेँ आरम्भ हुनके सँ करी। सुमन जीक 'साओन भादव' काव्य मे कुमार गंगानन्द सिंहक लिखल आमुख छनि, दिन थिकैक श्रावणी, फजली 1356 साल (माने 1946-47)। कहि ने, श्रावणी कोनो पर्व थिकैक वा नहि। किन्तु, कतेक वर्षक पछाति 1971 मे प्रकाशित सुमन जीक 'पयस्विनी' मे कविक अपन लिखल भूमिका— 'भाव-भूमि'—लिखबाक दिन थिक, 'अषाढ़स्य प्रथम दिवसे, 1971, जे नियारल नहि, संयोगवश बूझि पड़ैछ। वएह सुमनजी अपन संस्मरण 'मन पड़ैत अछि' क भूमिका लिखैत 'स्मृति-विस्मृतिक गति-यति' लिखबाक दिन चैत्र प्रतिपदा 2000 वर्ष देने छथिन,जाहि मे तिथि जँ संयोगवश अछि, तँ साल अंग्रेजी। 1970 मे प्रकाशित हुनके 'अंतर्नाद' कविता संग्रहक भूमिका 'बिंदु-विसर्ग' लिखबाक दिन, सुमनजीक अपन सुपरिचित राजनेताक प्रयाण दिवस- उपाध्याय बलिदान दिवस, 11 जनवरी 1970 थिक। स्पष्टत:, एहि तिथि सँ कविक भावनात्मक जुड़ाव छनि, किन्तु, जनसामान्य मे ने ई अवकाशक दिन थिकैक, ने सुपरिचित ऐतिहासिक दिन। तखन सम्भव अछि, सुमन जी अपन श्रद्धेयक मृत्यु केँ स्मरणीय बनयबाक भावना सँ ओहि दिन केँ 'उपाध्याय बलिदान दिवस' क नाम देने होथिन। तथापि, करीब अठारह वर्ष बाद वएह सुमनजी, किरण जीक 'पराशर' क भूमिकाक दिन आश्विन शुक्ल पंचमी, 1988 लिखैत छथि। ई भूमिका लिखबाक दिनक आकस्मिकताक द्योतक थिक। पुन:, स्व. बबुआजी झा 'अज्ञात'क खंड-काव्य 'प्रतिज्ञा पाण्डव'क भूमिका— 'अभिज्ञप्ति : कवि ओ काव्य'क भूमिका लिखैत, महाकवि सुमन ओहि दिन केँ 'संस्कृत दिवस' दिन लिखैत छथि, जे हमरा जनैत, महज संयोग वा संस्कृतक प्रति सुमन जी ममत्वे सँ प्रेरित बूझि पड़ैछ। कारण, भूमिका लिखबा लेल सुमन जी 'संस्कृत दिवस'क प्रतीक्षा कयने हेताह, से असंगत लगैछ। रोचक थिक,ओही 'प्रतिज्ञा पाण्डव' मे कवि अज्ञात 'हमर जीवन यात्रा' नामक लेख 21.4.91- सन कोनो तेहने दिन लिखने छथि जहिया ओ पलखति मे रहल होथि। ई तिथि दिन ताकि नीक दिन मे लेख लिखबाक संकेत नहि दैछ। एकर विपरीत गोविन्द झा भाषाशास्त्र प्रवेशिकाक प्राक्कथन लिखबाक दिन 13 मइ 2011 लिखैत छथि। दोसर दिस जँ एकदम भिन्न आ क्रांतिकारी लेखक केर गप्प करी तँ 1957 ई. मे प्रकाशित शेक्सपियरक As You

Like Itक 'राजमणि'क नाम सँ प्रकाशित अनुवाद मे अनुवादक राजेन्द्र झा 'स्वतन्त्र' स्थान आ दिनक चर्चा केनहि नहि छथि। रोचक थिक, सुमने जीक शिष्यक परिपाटी मे अमर जी अपन काव्य संकलन 'ऋतु-प्रिया' क भूमिका 'प्रस्तुत संकलन तथा.....' क लिखबाक दिन सुमने जीक जन्म दिन, 'श्री सुमन जयंती' 1963 लिखैत छथि, जाहि सँ सोझे तिथि आ तारीख निकालब श्रमसाध्य तँ अवश्य लगैछ, किन्तु, एहि दिनक चुनावक कारण सुमनजी प्रति अमरजी श्रद्धा थिकनि, से के नहि मानताह। यद्यपि, ई दिन अमर जी कोना चुनलनि से कहबा ले, भाग्यवश एखन अमर जी छथिए। एहि सबहक विपरीत केदार कानन कहैत छथि, ओ भूमिका लिखबा ले कोनो विशिष्ट दिन नहि तकैत छथि; 'जखन मौका भेटल एके बैसक मे लीखि गेलहुँ। पछाति आवश्यकता भेलैक तँ कनेक मनेक देखि लेलियैक।' किन्तु, नीचा देल उदाहरण किछु भिन्ने कथा कहैत अछि। अस्तु, आब विभिन्न विधा आ वयसक लेखकक भूमिका लिखबाक दिनक उदाहारण निचला टेबुल मे देखी :

लेखक/कवि	**ग्रन्थ**	**शीर्षक**	**स्थान/दिन**
भीमनाथ झा	कविता धन	प्रयोजन	स्वतंत्रता दिवस 2013
	काल-पत्र		दशकांत 31.12.2010
सुभाष चंद्र यादव	रमता योगी	दू टप्पी	5.3.2019
केदार कानन	लीखि पठाओल आखर	प्रकाशकीय	मणिपद्म आ राजकमल स्मृति दिवस 19.6.2016
योगेंद्र पाठक 'वियोगी'	किछु तीत मधुर		वसंत पंचमी, 2014
विद्यानाथ झा	विज्ञान, पर्यावरण, आ समाज	लेखकीय	-
ले. कर्नल मायानाथ झा	इजोत		मकर संक्रांति 14.1.2011
हीरेंद्र कुमार झा	सोनाक खोप	हमर मनक खोप	
कुमार मनीष अरविंद	मिच्छामी दुक्कड़म	-	15.1.2019

आब मैथिली सँ दूर हिंदी,बांगला आ तमिल दिस आँखि फेरी। 'वैशाली की नगर वधू'आ 'वयं रक्षाम:' -सन प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासक प्रणेता, आचार्य चतुरसेन एहि दुनू पोथीक भूमिकाक दिन क्रमश: 1/1/1949 आ 26/1/1955 अंकित कयने छथि। एही मे सँ जँ एक टा वर्षक पहिल दिन थिक तँ दोसर भारतक गणतन्त्र दिवस।

अस्तु, दुनू दिन ऐतिहासिक भेल, स्मरणीय भेल। किन्तु, ओही पीढ़ीक बंगला उपन्यासकार विभूतिभूषण वंद्योपाध्यायक उपन्यास 'आरण्यक'क प्रस्तावना मे स्थान आ दिन चर्चा नहि छैक। तहिना नीरद चौधुरीक Autobiography of An Unknown Indian क भूमिका मे दिन आ स्थानक चर्चा नहि अछि। किन्तु, इतिहासकार राजमोहन गाँधी अपन Modern South Indiaक भूमिका लिखबाक दिन 04 अक्टूबर 2018 मात्र अंकित कयने छथि। आब एक दू टा उदाहरण हिंदी सँ ली। जतय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी क 'बाणभट्ट की आत्मकथा' नामक ग्रन्थक निवेदन मे ज्योतिषाचार्य द्विवेदी 29.11.46क दिन अंकित कयने छथि, ओतहि मिथिलाक गौरव आ हिंदी साहित्यकार स्व. फणीश्वरनाथ 'रेणु', 'मैला आंचल'क संक्षिप्त भूमिका 09 अगस्त 1954 क लिखल छनि, जे 'शहीद दिवस' थिक। आब जँ तमिल दिस देखी तँ सबसँ पहिने राजाजीक नाम सँ प्रसिद्ध, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी पर दृष्टि टिकैत अछि। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी'कुरल' केर अंग्रेजी अनुवादक प्रथम संस्करणक भूमिकाक काल दिसम्बर 1947, आ दोसर संस्करणक दिन 4 सितम्बर1969 अंकित करैत छथि, जे महज संयोग-जकाँ लगैछ। किन्तु, कुरल केर परवर्ती संस्करणक भूमिकाक दिन स्व. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी मकर-संक्रांति, 14 जनवरी 1965 अंकित करैत छथि। वर्तमान समयक जँ गप्प करी तँ प्रसिद्ध नाभिकीय वैज्ञानिक आ सुपरिचित मैथिली साहित्यकार योगेन्द्र पाठक'वियोगी' अपन अद्यतन कृति 'त्रिनाताटकम्' केर प्रस्तावना विजय दसमी 2019 क दिन लिखलनि, तँ श्रीश चौधरी कहैत छथि 'हमर अमुक पोथी जे विजया दसमीए दिन लिखब समाप्त भेल छल, उचिते ओकर भूमिकाक दिन विजया दसमी भेलैक।' संयोग सँ प्रोफेसर भीमनाथ झा जे कुल 151 टा पोथीक भूमिका लीखि मैथिली साहित्य मे भूमिका लिखबाक हेतु कीर्तिमान स्थापित केने छथि, हुनक भूमिका लिखबाक दिन-पर्व-त्यौहारक दिन (40), जन्म-दिवसक दिन (27), पुण्य दिवस (25), ऐतिहासिक दिन-नव वर्ष-वर्षान्त-दशकान्तक दिन (10), दिनांक सहित (19), वर्ष मात्रक नाम (4) आ तिथि रहित (26)- स्वयं भूमिका लिखबाक दिनक विविधताक सजीव उहाहरण प्रस्तुत करैछ।

अस्तु, उपरोक्त संक्षिप्त उदहारण सँ एतबा धरि तँ अवश्य प्रतीत होइछ जे भूमिका लिखबाक दिन चुनबाक कोनो सर्वमान्य परिपाटी नहि छैक। जँ पुरान पीढ़ीक किछु मूर्धन्य साहित्यकार भूमिका लिखबाक दिन केँ सुपरिचित दिन सँ जोड़ि कय स्मरणीय बनाइओ देने छथिन तँ ओहू पीढ़ी मे ई परिपाटी सार्वलौकिक नहि छल। एखुनको पीढ़ी मे जँ वैज्ञानिको भूमिका लिखबाले पर्व त्यौहारक दिन चुनलनि तँ आन वैज्ञानिक भूमिका मे दिन-तारीखक चर्चा धरि नहि केने छथि। किछु नव

युवक साहित्यकार जँ परम्परा केँ पकड़नहुँ छथि, तँ किछु गोटे अपन सुविधाओ सँ दिन चुनने छथि। जँ हम अपन गप्प करी, तँ, हम जखन सोचि कय किछु लिखय बैसैत छी, हमरा छुट्टीक दिन- रवि वा राष्ट्रीय छुट्टी वा अवकाशक दिन सब सँ सुभितगर बूझि पड़ैत अछि। छुट्टी आ पलखतिक दिनक अतिरिक्त जखन हम अर्द्धनिद्रा मे रहैत छी हमर चिंतन सहजता सँ जागि उठैत अछि। ओहन स्थिति मे जँ चिंतन पर नींद भारी पड़ल, तँ चिंतन अवचेतन मे घोर मट्ठा भ' कय सब किछु बिसरि जाइत अछि। किन्तु, जँ नींद पर चिंतन भारी पड़ल, तँ, उठि बैसैत छी, आ लिखय लागि जाइत छी। कखनो काल लिखबाक विचार आ लेख सबहक विचार-विन्दु हमरा भोरुका वा संझुका टहलानक काल फुरैत अछि। अस्तु,टहलानक बाद जखने लिखबाक फुरसति भेटैत अछि विचार-विन्दु केँ टीपि लैत छी। किन्तु, कोनो लेख वा भूमिका एके बैसार मे लिखा जेतैक वा एके बैसार मे 'फाइनल कॉपी' बनि जेतैक से कहब हमरा लेल असंभव अछि। हम ओहुना स्वभाव सँ अपना केँ 'compulsive editor'— जनिका एके लेख केँ अनेक बेर पढ़ब अनिवार्य बूझि पड़ैत छनि—क कोटि मे रखैत छी। उपर सँ, अनेक बेर हम अपन लेख केँ,प्रकाशन सँ पूर्व, मित्र-बन्धु लग peer-review ले सेहो पठबैत छियनि; एहि सँ लेख केर परिमार्जन भ' जाइछ। एहना स्थिति मे हम भूमिका वा लेख लिखबा लेल मुहूर्त वा दिन कोना तका सकैत छी।

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य मे विद्यापतिक प्रासंगिकता

समानो सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य पयबाले वैचारिक भिन्नता जनतंत्रक रीति थिकैक। किन्तु,उद्देश्य केँ पयबाले सामाजिक सौहार्द्र आवश्यक छैक। एहन समाज जाहि मे सब केँ होइक जे ई समाज आ देश अपन थिक, आदर्श समाज थिक। तथापि, तात्कालिक राजनैतिक वा व्यक्तिगत लाभ लेल, व्यक्ति, व्यक्ति समूह वा राजनीतिक दल अनेको बेर एहन गतिविधि आरम्भ करैत छथि वा गतिविधि केँ बढ़ावा दैत छथि जाहि सँ सामाजिक सद्भाव केँ ठेस पहुँचैत छैक। अपना प्रति भेल नव वा पुरान अन्यायक बोध कतेक बेर एहि गतिविधिक औचित्य जकाँ प्रस्तुत कयल जाइछ। मुदा, समाजक तात्कालिक आ दूरगामी अहित तँ सब केँ देखबा मे अबिते छैक।

इतिहास विदित अछि, यूनानी-तुर्क-मंगोल-अफगान आक्रमणकारी आर्थिक लाभ आ धर्मप्रचार लेल भारत आयल छल। समाजपर ओकर प्रभाव सर्वविदित अछि। इतिहासक ओही कालखंड मे मिथिला सेहो आक्रमणक शिकार भेल, आ आहत भेल। विद्यापति ठाकुरक राजा एहि ऐतिहासिक प्रताड़नाक शिकार भेल रहथि। किन्तु, कालजयी कवि आ शास्त्रकारक रूप मे जखन विद्यापति पुरुष-परीक्षा लिखय बैसैत छथि, तखन यवन-जाति केँ ओ केवल मनुष्यक रूप मे चित्रित करैत छथि। आ पीड़ित यवन केँ आश्रय द' अपन राज्य आ प्राणक आहूति देबाक घटना केँ ओ राजाक पुरुषार्थक प्रमाणक रूप मे प्रस्तुत करैत छथि। हमरा जनैत, एहि मे अजुका विखंडित होइत समाजक हेतु विद्यापतिक कालजयी संदेश निहित अछि। 'दानवीरक कथा' पुरुष-परीक्षाक तेसर कथा थिक जाहि मे राजा हम्बिर देव आ यवन सुल्तान अलाउद्दीन आ ओकर प्रधान सेनापति महिमा साहीक कथा अछि :

यमुनाक किनेर पर योगिनीपुर नामक स्थान मे अलाउद्दीन नामक एक टा मुसलमान सुल्तान रहैत छल। कोनो एक दिन अलाउद्दीन अपन प्रधान सेनापति महिमा साही सँ असंतुष्ट भ' गेल। सुल्तानक स्वभाव सँ परिचित महिमा साही सोचलक जे गुप्तचर, साँप आ राजाक व्यवहारक कोनो ठेकान नहि। कारण, राजा बिनु सोच विचारहुक अचानक प्राण हरि सकैछ। अस्तु, महिमा साही प्राण रक्षाक हेतु सपरिवार

समीपक राजा हम्बिर देवक शरण मे आबि प्रार्थना केलनि, जे सुल्तान अलाउद्दीन अकारण हमर प्राण लेबाक हेतु आतुर छथि। अस्तु, हम अहाँक शरण मे आयल छी। अस्तु, अहाँ जँ हमरा हमर प्राण रक्षाक वचन दी तँ बेस, अन्यथा हम कतहु अंतय चल जाइ। महिमा साहीक एहि प्रार्थना पर दयालु राजा हम्बिर कहलथिन, 'अहाँ जा धरि हमर शरण मे छी, यमराजहु अहाँक कोनो अहित नहि कए सकताह। तेँ, निर्भय भ' एतय रहू।' किन्तु, शीघ्रे जखन सुल्तान अलाउद्दीन केँ, महिमा साहीक राजा हम्बिर देवक शरण मे हयबाक सूचना भेटलैक, ओ क्रोध मे सोझे राजा हम्बिर देवक किला पर आक्रमण क' देलक। किन्तु,राजाक किला एहन दुर्भेद्य रहनि जे निरंतर तीन वर्षक अवधि तक युद्ध चलैत रहल। अलाउद्दीनक सेना मरैत-खपैत आधा भ' गेलैक। किन्तु, सुल्तान अलाउद्दीन किला पर विजय नहि पाबि सकल आ अन्ततः सुल्तान निराश भय आपस हेबाक निर्णय क' लेलक। एही समय एक टा नव गप्प भ' गेलैक; राजा हम्बिर देवक दू गोट असंतुष्ट मंत्री, रायमल्ल आ रामपाल, राजाक शत्रु सुल्तान, अलाउद्दीन लग गेलाह आ ओकरा सँ हम्बिर देवक किलाक गोपनीय वस्तुस्थितिक सूचना देबाक निवेदन करैत कहलथिन, 'दुर्गक स्थिति नीक नहि छैक। ओतय भोजनक भयानक अभाव हेबा पर छैक। अस्तु, शीघ्रे अहाँ विजयी हयब। तेँ, अहाँ आपस जेबाक विचार छोड़ि दी।' एहि पर अलाउद्दीन खूब संतुष्ट भेल आ मंत्री लोकनि केँ उचित पारितोषिक दए विदा केलक। संगहि, बढ़ल मनोबलक स्थिति मे ओ तुरत अपन दूत केँ राजा लग पठौलक आ संदेश देलकनि जे 'एखनहुँ जँ अहाँ महिमा साही केँ हमरा लग सुपुर्द क' दी तँ हम आक्रमणक विचार छोड़ि देब। अन्यथा, महिमा शाही तँ मरबे करत काल्हि भोरे अहाँक किला सेहो भूमिसात भ' जायत!' दयालु राजा हम्बिर देब, 'दूत केँ अबध्य बूझि ओकरा तँ किछु नोकसान नहि केलखिन, किन्तु, शरणागत महिमा साही केँ शत्रुक हाथ देब अस्वीकार कइए देलखिन, ओ दूत केर माध्यम सँ सुल्तान केँ सूचना देलखिन जे ओ काल्हि भोरे राजाक आक्रमण लेल प्रस्तुत रहय। ई घटना महिमा साही लेल विस्मयकारी छलैक। किन्तु, राजा अपन निश्चय पर दृढ़ रहथि। तथापि, ओ अपन सभासद लोकनि केँ एकत्र कय अपन सेनापति यज देव केँ कहलथिन, 'हम शरणागतक रक्षाक हेतु कृत-संकल्प छी, आ काल्हि भोरे सुलतान पर आक्रमण करब। किन्तु, अहाँ लोकनि मे सँ जँ केओ एहि युद्ध केँ निरर्थक बूझैत होइ, तँ, एतय सँ अंतय छल जाइ। राजाक सभासद लोकनि एक स्वर मे कहलथिन, अपने एहि यवनक प्रति दयाभावें रण मे अपन प्राण उत्सर्ग करय चाहैत छी। अस्तु, अपने निर्दोष छी। हमरा लोकनि अपनहि सँ पालित भए रण मे अग्रसर, अपने केँ छोड़ि कोना कय कापुरुष-सन व्यवहार करब! अस्तु, काल्हि भोरे हमरा लोकनि शत्रुपर प्रहार करब। किन्तु, अपने एहि यवन

केँ कतहु अंतय पठा दिऐक। कारण,जकर अपने रक्षा करय चाहैत छियैक, तकरे रक्षा नहि भ' सकतैक तँ युद्ध निरर्थक भ' जायत। एहि पर महिमा साही बजलाह, 'हे राजा, अपने हमरा-सन विदेशी केँ अलाउद्दीनक हाथें सौंपि दी आ अपन स्त्री-पुत्र आ राज्यक नाश सँ बची। अपने हमरा-सन विदेशी ले एहन हानि किएक सहब।' हम्बिर देव कहलथिन, 'हे यवन, जे अमर कीर्ति एहि नाशवान शरीर सँ संभव छैक, कोन पुरुष तकर त्याग करत। हँ, जँ, अहाँ चाही, तँ अहाँक हेतु जे स्थान सुरक्षित प्रतीत हो, अहाँक सुरक्षा ले हम अहाँके सपरिवार कतहु ओतय पठा दी।' मुसलमान महिमा साही बाजल, 'हे राजा, काल्हि भोर युद्ध मे शत्रुक समक्ष सब सँ आगाँ हमहीं रहब। मुदा, हमर परिवार केँ चाही तँ अपने कतहु सुरक्षित स्थान पर पठा सकैत छियनि।' मुदा, महिमा साहीक परिवारक केओ अंतय जायब स्वीकार नहि केलक। दोसर दिन घमासान युद्ध भेल। आ अंततः, दयालुराजा हम्बिर देव शरणागत यवन, महिमा साहीक हेतु सर्वस्व न्यौछावर कय अमर-कीर्ति अर्जित केलनि।

हमरा जनैत, जाहि कथा मे, विद्यापति ठाकुर, हिंदू राजा द्वारा शरणागत आक्रमणकारी मुसलमान केँ आश्रय दए अपन राज्य आ प्राणक आहूति देबाक घटना केँ राजाक पुरुषार्थक प्रमाणक रूप मे प्रस्तुत कयने छथि, ओहि कथा मे सन्निहित संदेश केँ स्पष्ट करबाक हेतु आओर कोनो व्याख्याक आवश्यकता नहि। कारण, आजुक विखंडित होइत समाजक हेतु एहि कथा मे निहित विद्यापतिक कालजयी संदेश स्पष्ट अछि।

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा सँ दू गोट रोचक कथा

विद्यापति अपन पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ मे कथाक माध्यम सँ कतेको प्रकारक मनुष्यक उदाहरण देने छथिन। ओही मे सँ एतय दू गोटेक दू टा रोचक कथा कहैत छी। एहि दू गोटे मे सँ एक गोटे पढ़ल-लिखल रहथि। मुदा, हुनका बुद्धि नहि रहनि। दोसर, रहथि क्षुद्र-बुद्धि, किन्तु, चालाक। आब दुनूक कथा सुनू :

एक टा बकलेल पण्डित

कौशाम्बी नामक नगर मे एक टा देवधर नामक ज्योतिषी रहैत छलाह। हुनका शान्तिधर नामक एक टा बेटा रहनि। शान्तिधर मंदबुद्धि छलाह। तथापि, देवधर बहुत दिन धरि कठिन परिश्रम सँ शांतिधर केँ ज्योतिष-विद्या पढ़ओलनि। अन्ततः जखन सब किछु शान्तिधर केँ रटल भ' गेलनि तँ देवधर अपन बेटा केँ राजाक दरबार ल' गेलाह। राजा देवधर केँ देखिते पुछलखिन, 'हँ, कहू, अहाँक बेटा की सब सिखने छथि?' देवधर बजलाह, 'हे! राजा, शान्तिधर ज्योतिष सिखने छथि। तैँ, ओहि संबंधी जे कोनो समस्या अपने देबनि ई तकर समाधान क' सकैत छथि। आइ जँ ई अपने केँ सन्तुष्ट क' देलनि, तँ, आइ हिनक शिक्षाक उद्देश्य पूरा भ' जेतनि।'

राजा केँ कौतूहल भेलनि। ओ अपन हाथक सोनाक अंगूठी मुट्ठी मे मूनि लेलनि आ शान्तिधर सँ पुछलखिन, 'कहू हमर मुट्ठी मे की अछि?' शान्तिधर अपन हाथ मे खड़ी लय भूमि पर लिखि किछु गणना केलनि आ कहलखिन 'अपनेक हाथ मे ने जन्तु अछि, ने फल। अपनेक हाथ मे कोनो खनिज अछि।' राजा परम प्रसन्न भेलाह। सोचलनि, ई कहैत तँ ठीक छथि। सोना खानहिसँ तँ निकलैत छैक। कहलखिन, 'ठीक।' शान्तिधर आगू बजलाह, 'अपनेक हाथ मे जे किछु अछि से भरिगर आ गोलाकार अछि।' राजाक कौतूहल बढ़लनि। ओ बालक केँ चाबासी दैत कहलखिन, 'वाह! आगू कहू।' राजाक प्रशंसासँ प्रसन्नता मे शान्तिधर उन्मत्त भ' गेलाह। सोचलनि, बाजी मारि लेल। आ जोश मे कहलखिन आब तँ हम तुरते कहि देब अपनेक हाथ

मे की अछि, आ बाजि उठलाह, 'अपनेक हाथ मे जांतक ऊपरका पट्टा अछि!' राजा हँसय लगलाह आ देवधर केँ कहलखिन, 'अहाँक पुत्र ज्योतिष अवश्य रटने छथि, किन्तु, हिनका बुद्धि नहि छनि।' हताश देवधर, शान्तिधर केँ ल' कय आपस भ' गेलाह।[1]

एक टा चालाक चोर

काञ्ची नामक नगर मे सुप्रताप नामक राजा रहथि। एक दिन हुनक सिपाही सब चारि टा चोर केँ पकड़ि दण्ड लेल हुनका सामने अनलक। चारू चोर सब मिलिकय एक टा समृद्ध व्यापारीक घर मे चोरि केने छल। फलत: राजा चारू केँ तुरत मृत्युदण्डक आदेश द' देलखिन। सिपाही सब राजाक आदेशक पालन करैत तीन टा चोर केँ तुरत सुल्फा घोंपि मारि देलक। जखन चारिम चोरक दण्डक समय अयबाक भेलै, ठीक ओकर पहिने, चोर मनहि मन सोचलक, भले मृत्युक द्वारि पर किएक नहि होइ, प्राण बचबाक युक्ति तँ लगेबेक चाही। युक्ति जँ सफल भेल तँ उत्तम, अन्यथा, मरब तँ अछिए। अस्तु, ओ बचबाक हेतु एक टा युक्ति सोचलक। तेँ, जखन सिपाही सब ओकरा दण्ड देबाले तैयार भेलैक तँ चोर कहय लगलैक, 'कनेक थम्हू। हमरा राजा केँ किछु अति आवश्यक सूचना देबाक अछि। सोचियौक, जखन अहाँ लोकनि हमरा फाँसी दए देब तखन ओ गुप्त सूचना हमरहि संग चल जायत, आ एहन महत्वपूर्ण गप्प केओ बूझि नहि पाओत। तेँ, अहाँ लोकनि कनेक बिलमि जाइ, जाहि सँ हम ई रहस्य राजा केँ कहि दियनि आ ई ज्ञान संसार सँ विलुप्त हेबा सँ बचि जाइक।' सिपाही चोर केँ जोर सँ डंटैत कहलकैक, 'गुंडा कहीं के! हमरे सब संग चतुराई!' चोर चालाक तँ छले, हिम्मत केलक आ सिपाही सब केँ दमसि कय कहलकैक, 'सुनू। अहाँ लोकनि राजाक काज मे बाधा देबनि?' सिपाही सब चुप्प भ' गेल। सिपाही सब केँ चुप्प देखि, चोरक हिम्मत बढ़लैक। कहलकैक, 'एक टा गप्प आओर। संयोग सँ जँ ई काजक गप्प अहाँ लोकनिक माध्यम सँ राजा केँ भेटलनि, तँ, कोन ठेकान, अहूँ लोकनि केँ किछु इनाम भेटय।' गप्प सिपाही सब केँ जंचलैक। अत:, सिपाही सब चोर केँ राजाक सामने ल' गेल। राजा केँ गप्प सुनि जिज्ञासा भेलनि। सामने ठाढ़ चोर केँ लक्ष्य कय कहलखिन, 'कह', की कहैत छह?' चोर बाजल, 'सरकार, हम माटि मे सरिसबक दाना-सन-सन, छोट-छोट सोनाक बीआ बाग कय एहन गाछ लगबय जनैत छी जकर फूल अगबे सोनाक होइत छैक। एवं प्रकारे हम सरिसबक दानाक आकारक प्रत्येक सोनाक बीआ सँ एक पैसाक बराबरि वजन केँ सोनाक फूल उपजा सकैत छी।' राजा साकांक्ष भेलाह।

'अच्छा? सत्त कहैत छह?'—राजा पुछलखिन

'अपनेक सामने फूसि के बाजत, सरकार'—चोर बाजल—'आ जँ हमर कहल फूसि साबित भेल तँ एमहर मास बीतत ओमहर हमहूँ मरिए जायब। सबठाम अपनेक न्याय आ दयाक चर्चा तँ हेबे करत।' एहि पर राजा चोर केँ अपन करतब देखेबाक अनुमति द' देलखिन।

अपन करतब देखेबा लेल चोर सेहो सोनारक सहायता सँ सरिसबक दानाक आकारक थोड़ेक सोनाक बीआ गढ़बौलक। ओ पछाति राजदरबारक अन्त:पुर मे नहयबाक कुण्डक समीपे सोनाक गाछ लगयबाक हेतु एक टा छोट-सन किआरी सेहो तैयार केलक आ राजाक आगू जा कय अर्ज केलकनि, 'सरकार खेत आ बीआ तैयार अछि। आब अपने कोनो उपयुक्त व्यक्ति केँ सोनाक बीआ बाग करबाक हेतु नियुक्त करी।' एहि पर राजा पुछलथिन, 'ई काज तों अपने किएक नहि करैत छह'। चोर हँसय लागल। कहलकनि, 'सरकार जँ हमरा बाग केने सोनाक गाछ जनमितैक तँ हम एहने निर्धन रहितहुँ आ चोरिए करितहुँ! एहि बीआक बाग करबाक हेतु तँ एहन लोक चाही जे कहिओ कोनो चोरि नहि केने हो। तेँ, सरकार अपनहि किएक नहि ई बीआ बाग करी।' राजा सोच मे पड़ि गेलाह। कहलखिन, 'मुदा हम तँ एक बेर एक टा साधु केँ देबाक हेतु, अपन पिता सँ नुकाकय, हुनकर किछु टाका चोरओने रहियनि'। 'तखन, मंत्री लोकनि ई काज करथु', चोर बाजल। मंत्री लोकनि एक दम असहमत होइत कहैत गेलखिन,'हमरा लोकनि सरकारक अनेक काज करैत छी। हमरा लोकनि सँ कखन की गलती होइछ कहब असंभव। हमरा सब ई नहि कय सकैत छी।' 'तखन मुख्य न्यायाधीश ई काज करथु' चोर बाजल। 'नहि, हम एकबेर माय सँ चोराकय मधुर खेने छी।' मुख्य न्यायाधीश प्रतिवाद केलखिन। एहि पर चोर हँसय लागल। ओ बाजल, 'सरकार अपने सब गोटे चोरि केने छी, तखन हमरे टा चोरि लेल फाँसी लागय से उचित थिकैक?' एहि पर राजा सेहो हँसय लगलाह आ कहलखिन, 'एहि चोरक फाँसीक सजा माफ भेल। मंत्री लोकनि, ई चोर क्षुद्र-बुद्धि अछि, तथापि ई अछि बेजोड़ विदूषक। आइ सँ ई हमरहि लग रहत आ समय-समय पर अपन हास्य-विनोदसँ हमरा हँसबैत रहत।'[2]

---

1. & 2. Grierson GA. The Test of A Man being the Purusha-Pariksha of Vidyapati Thakkura, 1935; London: The Royal Asiatic Society pp 65-6 & 120-22.

तिरुवल्लुवर आ किरणजी

आइ 'किरण' जयंती थिक। तेँ किरणजीक स्मरण हयब स्वाभाविक। किन्तु, जयंतीए दिन टा किएक, किरण जी आनहु दिन मन पड़ैत छथि। मुदा, विगत कतेक वर्ष सँ हम किरण जी केँ मिथिला सँ बाहर, भारतक आन कीर्तिपुरुष सबहक संग मिलान करैत रहलहुँ-ए। एक टा एहन अमर कवि जे हमरा सतत् किरणजीक स्मरण करबैत रहैत छथि ओ थिकाह संत कवि तिरुवल्लुवर। तिरुवल्लुवर कतेक दिन पहिने भेल छलाह से कहब कठिन। किरणजी हेबनिक थिकाह। तथापि, एहि तुलना मे हमरा किछु आपत्तिजनक नहि बूझि पड़ैत अछि।

किन्तु, की किरणजीक काव्य-साहित्य मे तिरुवल्लुवरक काव्य सदृश कोनो एहन तत्व छनि जे हुनका तिरुवल्लुवरक संग जोड़ैत छनि? एहि लेख मे हम एतबे तकबाले प्रस्तुत छी। हँ, एतबा आरम्भहि मे हम कहय चाहब, एहि लेखक माध्यम सँ ने हम किरणजी केँ तिरुवल्लुवर प्रमाणित करय चाहैत छी, आ ने तिरुवल्लुवर केँ किरण। एक गोटे संत थिकाह, दोसर गोटे बीसम शताब्दीक वैद्य-शिक्षक-गृहस्थ-साहित्यकार। तथापि, जँ दुनू गोटे केँ एक टा किछु एक दोसरा केँ समकक्ष ठाढ़ करैत अछि ओ थिक दुनूक चिंतनक स्पष्टता, ठाँहि-पठाँहि कथ्य, आ कालजयी एवं सार्वलौकिक स्वरूप। दुनूक बीचक इएह गुण हमरा हिनका लोकनिक बीचक आओर समानता तकबाले प्रेरित केलक। अस्तु, पहिने तिरुवल्लुवर सँ कनेक परिचय-पात करी; किरणजीक परिचय एतय आवश्यक नहि।

'कुरल' नामक कालजयी कृतिक रचयिता तमिल आदि कवि तिरुवल्लुर, दक्षिण भारत मे संत केर विशेषण सँ विभूषित छथि, हिंदू वा जैन एहि पर सब एकमत नहि। बहुतो गोटे हिनका अनीश्वरवादी मानैत छथिन। तेँ, जँ, कदाचित् तिरुवल्लुवर सत्यत: नास्तिक छलाह, तँ, किरणजी सँ भैयारी हएब असंभव नहि। सर्वविदित अछि, किरणजीक काव्य मे सरल भाषा आ मानव-जीवन सँ सम्बद्ध विषयपर हुनक उक्ति भेटत। किन्तु, किरणजी औपचारिक रूपें कोनो सूक्ति-सुभाषित प्रकाशित केने छथि, कि नहि, से हम नहि कहि सकैत छी। तथापि, समाजमे

सब जाति-धर्मक लोक, आ सब व्यवसायक नागरिक मे समन्वय, अन्यायक प्रति प्रखर उद्घोष, परम्पराक भंजन, आ नव सोच केँ स्थापित करबाक दुर्दान्त आग्रह किरण जीक परिचय थिक, से सर्वविदित अछि। ओना कहबी, फकड़ाक प्रति किरणजीक आकर्षण आ बाध-बोन मे हुनका द्वारा बीछल काव्य सर्वविदिते अछि। तिरुवल्लुवर तँ दू-दू पांतीक प्रभावोत्पादक उक्ति लेल प्रसिद्ध छथिए। किरणजी जाति-पांति, वर्ण-भेद, धनिक गरीब भेदक विरोधी रहथि, से सर्वविदित अछि: प्रमाण चाही तँ सुनू:

'गायक वर्ण छइ होइत कैल, हांसा,
गहुमना, चरक, सिलेब, कारी,गोल चितकाबर, तामसन लाल
परंच सबथिक गाय समान रूप सँ
आदर स्नेहक बेर मे
.....।
रंग थिक प्रकृतिक देल, दिनकरक किरणक खेल ..।

(पराशर,1988, पृष्ठ, 7)

कुरल मे सेहो जाति, धर्म, सम्प्रदायक चर्चा नहि छैक। मानवीय गुण केँ तिरुवल्लुवर सर्वोपरि आ वंश-कुल सँ ऊपर मानैत छथि। विश्वास नहि हो, तँ तिरुवल्लुवरे सँ सुनू :

गुणक खान, जीव सँ प्रीति
ब्राह्मण थिकाह वएह विभूति : कुरल, 30
ज्ञानी, उत्तम जन्मे भल नीच
जनम सँ ऊँच अज्ञानी नहि नीक : कुरल, 30

बरखाक मादे तिरुवल्लुवर कहैत छथि :

दै अछि सबतरि जीवन दान
बरखा निश्चय थिक अमृत समान : कुरल 11

आब किरण जी सँ सुनू :

अन्ने थिक प्राण, अन्ने थिक भगवान
करू परिश्रम धरती कोड़ू
अन्न खूब उपजाउ
बरखा पानि के घेड़िक' राखू
पौटी विरचि पटाउ पराशर, 1988, पृष्ठ 2
.....।

किरण जीक गप्प तँ सूनि लेल। आब जँ तिरुवल्लुर केँ सुनी तँ विश्वास

भए जायत, जे तिरुवल्लुर केँ सेहो कृषिक व्यावहारिक पक्षक ज्ञान छलनि।

देखिऔक :

जोती माटि सुखाबी खूब,
भले खाद नहि उपजा पूर : कुरल, 1037
पूरा ढाकी जोती थोड़,
कमा, पानि सँ ताकुत जोर : कुरल, 1038

आगू सुनू : पुरुषार्थक मादे तिरुवल्लुवर कहैत छथि :

उर्जावान स्वत: धनवान
आओर सबहिं छथि वृक्ष समान कुरल, 600
रूसओ भाग्य, परिश्रम देत
बोनि कमाइक निश्चय भेंट कुरल, 619
करथि पराजित भाग्यक दोष
हारि ने मानथि श्रम संयोग कुरल, 620

किरण सँ सुनू :

दाढ़ी-मोछ न पुरुषक लच्छन
.....।
बान्हि नदीकेर दुस्तर धारा, ढाहि पहाड़क सिखर अपारा
मनुखक गति निरबाध करक हित करय बाट नव सिरजन...।
नाथि बाघ-केसरि-मतंग के दांत तोड़ि बिखधर भुजंग केँ
बस मे करय, रहय नित करइत, मानब रिपुक निकन्नन।

—विजेता विद्यापति,1978, पृष्ठ 37

ततबे नहि, किरण जी जँ 'माटिक महादेव' केँ अपन अंतिम परिणामक स्मरण दियबैत छथिन, तँ, तिरुवल्लुवर निर्धनताक कारण भिक्षाटनक बाध्यता सँ एतेक आहत होइत छथि, जे ईश्वर केँ श्राप दए बैसैत छथिन :

ईश्वर स्वयं मांगथि भीख आ होथु नाश
जँ केओ जीवय भीखक आस। कुरल : 1062

मुदा, हुनका एतबे सँ सन्तोष नहि होइत छनि। ईश्वरक मनमाना व्यवहार सँ तिरुवल्लुवर एतेक क्षुब्ध होइत छथि जे ओ ईश्वरक तुलना नीच धरि सँ क' बैसैत छथि।

अस्तु, किरण आ तिरुवल्लुवर मे अनेक समानता छनि से तँ निर्विवाद। किन्तु, तकर अन्वेषण केर आवश्यकता छैक। तेँ, एहि लेख केँ विशद विवेचनाक सिनोप्सिस बुझू। अध्येता-अन्वेषी ले ई मात्र विचारक बीया भेल। अन्वेषणक परिणाम क्रमश: भेटत।

किरणजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक अपरिचित पक्ष

2019क अप्रील केँ किरणजीक निधन के एकतीस वर्ष पूरि जेतनि। हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्व मे विद्वान लोकनिक रुचि एखनहुँ छनि, आ लगैत अछि, रहतनि। तथापि, हमरा जनैत, किरणजी सँ सम्बन्धित विषय पर अनुसंधानक नाम पर अनेको बेर बुझले बातक आवृत्ति होइत रहल अछि। सत्यत:, बुझले तथ्य केँ रटब अनुसंधान नहि थिक। अपरिचित विषय केँ ताकि-हेरि बहार करब, वा सुपरिचित विषयपर नव दृष्टिक प्रतिपादन अनुसंधान थिक। आवश्यकता अछि, खोजी प्रवृत्तिक अध्येता लोकनिक, जे किरणजीक जीवन, व्यक्तित्व, कृति आ एहि सबहक मैथिली भाषा आ लेखनपर प्रभाव केँ नव दृष्टिऐँ देखथि।

अनुसंधान मे अनेक समस्या छैक; साधन आ समय मूल समस्या थिक। मुदा, ताहू सँ बेसी पैघ समस्या थिक नव तथ्य केँ प्रकाश मे अनबाक आग्रहक अभाव। किन्तु,आइ लिखि, काल्हिए प्रसिद्धि आ पुरस्कार पयबाक मनोरथ गहन अध्ययनक हेतु पैघ बाधा थिक।

किरणजीक रचनाकाल दीर्घ छलनि। बहुतो रचना हुनक जीवन काल मे छपलनि; दीर्घ जीवनक अवधि मे छपल कृति केँ देखैत लगिते जे किरण जी अपन समकालीन साहित्यकार लोकनिक तुलना मे थोड़ लिखने छथि। किन्तु,बहुतो रचना किरणजीक निधनक पछाति प्रकाश मे आयल। तथापि, हुनक अनेको रचना एखनो अप्रकाशित छनि, से सुनैत छी। एहि मे सँ जे किछु हुनक अपन घर मे छनि,से क्रमश: प्रकाशित भ' रहल छनि। बाँकी बचल रचना आइ ने काल्हि प्रकाश मे अयबे करतनि। किन्तु, एहन रचना जे ओहि परिधि सँ बाहर होइनि तकरा तकबाक आ समेटबाक आवश्यकता छैक। छिड़ियायल कृति सब केँ समेटब किरणक साहित्यिक अवदान केँ पूर्णता प्रदान करतनि। छिड़ियायल किरण साहित्यक संकलनक अतिरिक्त, एहि संक्षिप्त लेख मे हम किछु एहन विन्दु पर विचार करब जे किरण पर अध्ययनक हेतु नव विषय भ' सकैछ।

किरणजी आ काशीनाथ झा

सर्वविदित अछि, किरण जी चारि भाइ रहथि; तीन सोदर आ एक वैमात्रेय। एहि सब मे सँ जेठ, काशीनाथ झा प्रसिद्ध बलदेव जी, सुनैत छी, बहुमुखी प्रतिभाक धनी छलाह। योग्यता सँ काशीनाथ झा वैद्य नहि छलाह। तथापि, साहित्य-सृजन आ वैदागरीक व्यसन दुनू भाइ (काशीनाथ झा आ किरणजी) केँ रहनि। करीब चारि दशक सँ थोड़ जीवन काल मे काशीनाथ झा धुरझार लिखलनि, किन्तु,अपना जीवैत काशीनाथ झाक थोड़बे कृति प्रकाशित भेल रहनि; पुस्तकाकार तँ कोनो नहि। किरणजी एवं काशीनाथ झाक रचना मे समानता वा भिन्नता अनुसंधानक एक टा विन्दु थिक। यद्यपि, किरण जी स्वतन्त्र प्रवृत्तिक लोक रहथि, तथापि, किरणजीक रचनापर काशीनाथ झाक रचना शैलीक किछुओ प्रभाव छनि वा नहि से अनुसंधानक विन्दु थिक।

किरणजीक व्यवसाय

किरणजी शिक्षा सँ वैद्य, वृत्ति सँ शिक्षक आ खेतिहर, प्रवृति सँ आन्दोलनकारी आ साहित्यकार छलाह। ओहि युग मे मैथिल लोकनिक बीच डाक्टरी व्यवसाय हेय बूझल जाइत छल। मैथिल डाक्टर लोकनिक नगण्य संख्याक प्राय: इहो कारण छल। तथापि, किरणजी दरभंगा मेडिकल स्कूल मे नामांकन लेल गेल छलाह आ नामांकन लेल चुनलो गेल छलाह। किन्तु, 'पचास टाकाक उपाय नहि छलनि तेँ नाम नहि लिखा सकलाह' से कहने रहथि। अस्तु, काशी विश्वविद्यालय मे आयुर्वेदक कोर्स मे नाम लिखओलनि आ पछाति कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ डिग्री प्राप्त केलनि। यद्यपि,किरण जीक वैदागरी पढ़बाक पाछू कोन प्रेरणा रहनि से कहब कठिन तथापि एतेक कष्ट आ श्रम सँ उपार्जित डिग्री सँ हासिल वैदागरी व्यवसाय केँ किरणजी किएक छोड़ि देलनि? हँ, सत्तरिक दशक मे अनौपचारिक गप्प-सप्पक क्रम मे हमरा ओ एकबेर कहने रहथि, 'ओहियुग मे मिथिला मे जहिना अत्यंत गरीबी रहैक तहिना रोगक बाढ़ि। जँ कतहु रोगीक चिकित्साले बजाहटि मे जाउ तँ लोक लग डाक्टर केँ फीस मे देबा लेल किछु रहैत नहि छलैक। जँ कोनो रोगी नेनाक हाथ-पयर मे काड़ा-माठा होइक, रोगीक माय-बापक दलान पर गाय-बड़द होइक तँ ओहि सब केँ बेचि चिकित्साक खर्च सधयबाक अतिरिक्त लोकक लग आओर कोनो उपाय नहि। ई हमरा लेल दुखद छल।' संभव छैक, एहना स्थिति मे डाक्टर-वैद्यक गुजर-बसर सेहो कठिन छल होइक। तथापि, समाजक दुखद परिस्थिति मे, स्वेच्छा सँ चुनल व्यवसाय केँ छोड़बाक पाछू किरणजीक कोन व्यथा छलनि? एतबे नहि, वैद्यक रूप मे समाज मे किरणजीक छवि केहन छलनि, से प्राय: आइ धरि प्रकाश मे नहि आयल अछि। ओना हमर माता

ई अवश्य कहने छथि जे,'वैदागरी मे नूनू भाइ (किरणजी) सँ बेसी यश भाइ (काशीनाथ झा) केँ रहनि'। एकर अतिरिक्त जेना कहल, किरणजी वृत्ति सँ शिक्षक रहथि। किन्तु, एक्का-दुक्का तत्कालीन छात्रक संस्मरण केँ जँ छोड़ि दी, तँ, शिक्षकक रूप मे किरणजीक अवदानक पक्ष एखन धरि अछूते अछि। किरणजीक व्यक्तित्वक इहो पक्ष अनुसंधेय थिक।

किरणजीक मानसिकता

सर्वविदित अछि, किरणजीक जीवन-पद्धति अत्यन्त सादा रहनि। धोतीक स्थान पर 'आम-छाप' कपड़ाक 'टुकड़ा', आ कुर्ताक स्थानपर ओही 'आम-छाप' कपड़ाक गोल-गला गंजी किरणजीक 'वर्किंग यूनिफार्म' रहनि, से जे हुनका तहिया देखने छथिन से एखनो कहताह। किरणजी व्यवहार मे सहृदय रहथि; नवतुरिआ लोकनि केँ प्रेरित आ प्रोत्साहित करथिन। किन्तु, सबल, प्रतिष्ठित मठाधीश सब सँ सोझे ढाही लड़बा मे कोनो भय नहि होइनि। परम्परा भंजन, निर्भीकता, आ सत्यक संधानक अतिरिक्त किरणजीक एहि व्यवहारक पाछू कोन मानसिकता रहनि, से विश्लेषणक विषय थिक। ततबे नहि। किरणजी कहने रहथि, एकबेर केओ किरणजी सँ पुछने रहथिन, 'अहाँक योग्यता सुपरिचित अछि, तखन (एम.ए., पी. एच-डी. आदि) परीक्षा पास करबाक कोन काज!' किरणजी कहलथिन, 'से तँ जे बूझैत अछि, से ने। जकरा नहि बूझल छैक, तकरा हेतु तौलि-भजारि देलियैइए।' किरणजीक एहि उक्ति सँ हम दू गोट निष्कर्ष निकालैत छी, एक, परम्पराक भंजक किरणजी व्यावहारिक रहथि। विश्वविद्यालय सेवाक पात्रताक हेतु एम. ए., पी. एच-डी.क डिग्री आवश्यक रहनि। किरणजी, घर-परिवार, व्यवसाय, खेती-बारीक झंझटिक पर्यन्त लक्ष्यबेध केलनि किन्तु सब टा डिग्री पबैत साठिक धक्का लागि गेलनि। पछाति एहि पात्रताक कारण हिनका विश्वविद्यालय सेवाक सेहो अवसर भेटलनि। सर्वविदित अछि, मैथिली-साहित्य-समाज मे जनिका लोकनि सँ किरणजी केँ सैद्धान्तिक मतान्तर रहनि ओ लोकनि बहुत दिन सँ उच्चपदासीन रहथि। तथापि, किरणजी अपन अनेक समकालीन सँ अपना केँ कम बुझबाक तँ गप्प छोड़ू, हुनका लोकनि केँ अपन समकक्षो मानबा लेल तैयार नहि रहथिन। अस्तु, साठिक धक्काक वयस मे डिग्री प्राप्तकय अपन योग्यता केँ अनकर समकक्ष प्रमाणित करबाक आग्रह सेहो किरणजी लक्ष्य मे प्रेरक छल हेतनि, से संभव। ई तँ सर्वविदित अछि, अपन अकाट्य तर्क सँ अपन पक्ष रखबा मे किरणजी बेजोड़ रहथि। अस्तु,जीवनक छठम दशक मे डिग्री लेल पढ़ब-लिखब प्राय: किरणजीक अपन पक्ष रखबाक एक टा विरल आ अनुकरणीय शैली छलनि। विश्वविद्यालय सेवा सँ अर्थ लाभ जे भेलनि, से तँ सर्वापरि।

किरणजीक रचना-संसार सुपरिचित अछि। साहित्यक प्राय: कोनो विधा हिनका सँ छूटल नहि रहनि। ई जाहि विधा मे लिखलनि, परिमाण मे भले थोड़-हो, गुणवत्ता मे सब टा विलक्षण मानल जाइछ। जँ, हिनक काव्य-कृति केँ देखी तँ किरणजीक काव्य-संकलन छपैत-छपैत जीवनक साँझ भ' गेल रहनि। एहि सब संग्रह मे किरणजीक नव कम, पुरान कविता बेसी रहनि। किन्तु, हिनक काव्यकृति 'पराशर' अबैत-अबैत किरणजी प्राय: बिछाओन ध' नेने रहथि। 'पराशर' पर मरणोपरान्त किरणजी केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो भेटलनि। पुस्तक मे सुमनजीक भूमिकाक अतिरिक्त, हमरा जनैत, 'पराशर' पर कोनो गंभीर चर्चा नहि भेल अछि। आ ने एकर दोसर संस्करण छपल अछि। हमरा जनैत 'पराशर' किरण जीक अंतिम आ सर्वोत्कृष्ट (swan song आ magnum opus) कृति थिक। आवश्यकता अछि, किरणजी अवसानक पछाति जनमल पीढ़ी एहि कृति केँ स्वयं पढ़य आ एकर स्वरूप सँ स्वयं परिचित होअय।

किरणजीक जीवनी

समग्रता मे किरणजीक जीवनी स्वयं एक टा अनुसंधानक विन्दु थिक। साहित्य अकादेमी किरणजी पर एक टा मोनोग्राफ छपने अछि। किन्तु, बोनि दएकय जन सँ काज करयबा सँ जेहन काज होइत छैक, ई मोनोग्राफ तेहनो नहि अछि। सत्यत:, साहित्य अकादेमीक पारिश्रमिक केँ वस्तुत: पारिश्रमिको बूझब कठिन; ई रिसर्च ग्रांट तँ नहिए टा थिक। यद्यपि, से विषयान्तर भेल। तथापि, आवश्यकता अछि, खोजी प्रवृत्तिक उहिगर व्यक्ति केँ समुचित साधन उपलब्ध होइनि जाहि सँ किरणजीक जीवनी पर सम्यक दृष्टिक एक टा एहन कृति आबय जे किरण-विषयक शोधार्थी लेल एक टा प्रामाणिक सन्दर्भ-ग्रन्थ प्रमाणित हो। साधन-संपन्न शोध-संस्थान सँ जँ एहि हेतु अर्थक व्यवस्था हो तँ ई शोध नव साहित्यिक अवदान होयत, एकर अतिरिक्त ई शोध, संबंधित शोध-संस्थानक सार्थकता सेहो प्रमाणित करत।

संभव अछि किरणजीक लिखल अनेक छोट-छीन चिट्ठी-पत्री, पुर्जा, पाण्डुलिपि, लेख, प्रकाशित/अप्रकाशित कृति, आ संस्मरण बहुतो लोकक लग आ अनेक व्यक्तिक स्मरण मे छिड़ियायल हो। एहि सब किछु केँ समेटब किरणक समग्र पुनर्मूल्यांकन हेतु अमूल्य साबित भ' सकैत अछि।

मधुपजी हमरा किएक मन पड़ैत छथि

मधुपजी मैथिली साहित्यक विभूति छलाह, से के नहि मानत। मधुपजी मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु बेहाल, प्रथम पीढ़ीक सिपाही छलाह, सेहो निर्विवाद। ओ अपन रचना सँ मैथिली साहित्य केँ ततेक समृद्ध केने छथि जे हुनक प्रशंसा मे बहुतो कहल गेल अछि आ बहुतो कहब बाँकी अछि। मधुपजी केँ हम किरणजीक ओतय देखने अवश्य छियनि, मुदा, हुनका सँ हमरा व्यक्तिगत परिचय तँ नहिएँ छल। मधुप जीक कविता सँ परिचित हेबा सँ पूर्व हम मधुपजीक नाम सँ परिचित भेल रही। कारण साठिक दशक मे ओ सुपरिचित कविक रूप मे प्रतिष्ठित भ' चुकल छलाह, आ मैथिली कवि लोकनिक जँ कतहु चर्चा होइक तँ मधुपजी अग्रगण्य होथि। पछाति, हाइ स्कूलक मैथिली पाठ्य-पुस्तक मे मधुपजी कविता 'घसल अठन्नी' पढ़लहुँ। ओ कविता ततेक सुपरिचित छैक जे कतेको गोटे ओहि कविताक पक्ष -विपक्ष मे अपन अभिमत देने होथि से संभव। मुदा, राजनैतिक विचारधाराक बखेड़ा सँ दूर कविताक भाषा आ मर्मस्पर्शी चरित्र-चित्रणक गप्प हो तँ 'घसल अठन्नी' कविता पढ़ि सहृदय मनुक्खक आँखि मे नोर अवश्य आबि जयतैक। मुदा, हम सोचै छी, मधुप जी हमरा किएक मन पड़ैत छथि? सत्य पूछी तँ मधुपजी हमरा 'घसल अठन्नी'क कारण नहि मन पड़ैत छथि। मधुपजीक स्मरणक असली कारण अछि हुनकर लिखल मैथिली लोकगीत, जे स्वत: हरबाह-चरबाह सँ ल' कय विदेश्वर-कुशेश्वर स्थान जेबावाली किशोरी धरिक कंठ सँ अनायास प्रवाहित होमय लगैत छल। तेँ, मैथिली गीत केँ लोकप्रिय बनेबाले मधुपजी हिंदी सिनेमाक लोकप्रिय गीत सबहक तर्ज पर सेहो गीत सब बनौलनि। ओ संस्कृतक विद्वान छलाह, हुनका महाकाव्य लिखबाक कल्पना आ सामर्थ्य छलनि। तथापि, मधुपजी मैथिली लोकगीत दिस किएक प्रवृत भेलाह। हमरा जनैत, मधुपजी विद्यापतिएक परम्पराक कवि छलाह। हुनका बूझल छलनि, जन-बोनिहार, आइ-माइ लोकनि ने विद्यापतिक पुरुष-परीक्षा पढ़ैत छथि आ ने हुनका लोकनि केँ कीर्तिलता वा कीर्तिपताका सँ कोनो सरोकार छनि। मुदा, महिस पर बैसल महिसबार बिदेश्वरक बाट मे 'कखन हरब

दुख मोर हे भोलानाथ' ओही तन्मयता सँ गबैत अछि जेना कोनो चानन-तिलकधारी पण्डित गबैत छथि। तेँ लोकभाषाक प्रचारक हेतु मधुपजी लोकगीतक लोकप्रिय विधा केँ सेहो संपोषित केलनि। आजुक मिथिलांचल मे दुर्गापूजा-दसमी मे जखन 'मुंह खोल' मुंहबे मे डाल दी' सन-सन वीभत्स गीतक अनवरत अष्टयाम चलैछ, नेपालक मैथिली टीवी चैनल सब पर पंजाबी गीतक तर्जपरक विकट गीत सब सुनैत छी आ मैथिली लोकगीतक दुर्दशा देखैत छी तँ 'राधा-विरह' महाकाव्यक प्रणेता महाकवि क संग-संग, 'पचमेर', 'टटका जिलेबी' आ 'चौंकि चुप्पे'—सन गुटका गीतमाला लिखनिहार लोककवि मधुपजी सहजहि मन पड़ैत छथि।

निनानबेक पूर वयस मे 'शब्द-संधान' लिखबाक योजना करैत गोविन्द झा

(पटना,10.10.2019, श्री गोविन्द झा सँ गप्प-सप्प)

गोविन्द बाबू 100म वर्ष मे प्रवेश कयलनि, से सुनल। ओहिदिन हम पटना मे रही। गोविन्द बाबूक सुपुत्र आ मैथिलीक सुपरिचित साहित्यकार अक्कू जी सँ गप्प भेल। कहलनि, 'आउ'। श्री गोविन्द बाबू सँ सेहो गप्प भेल। विगत बारह वर्ष सँ पटना जाइत-अबैत गोविन्द बाबू सँ भेंट करैत छियनि। करीब चारि बजे अपराह्न गोविन्द बाबूक डेरा जाइत छी। अक्कू जी सोझे गोविन्द बाबूक कोठली मे लए गेलाह। सामने साहित्यकार रमानंद झा 'रमण' जी बैसल रहथि। लग मे अक्कू जीक दौहित्र—शौर्य खेलओनाक साईकिल पर चक्कर लगा रहल छथि। पछिला बेर गोविन्द बाबू सँ भेंट भेल छल तँ ओ ओहि सँ किछुए दिन पूर्व ओ आइ सी यू सँ बहराकय डेरा आयल रहथि। सुनबा मे कष्ट रहनि आ शरीर तँ अस्वस्थ छलनिए। एहि बेर गोविन्द बाबू स्वस्थ छथि। हाले मे आँखिक ऑपरेशन भेल छनि। चेहरा पर मुसुकी छलनि। शरीर सँ स्वस्थ प्रतीत भेलाह। हम कहलियनि, 'अपने एहि बेर प्रसन्न छी आ स्वस्थ लगैत छी।' गोविन्द बाबू मुसुकाइत छथि। हम कहलियनि, 'ऑपरेशन करा लेल, नीक कयल। हम तँ कतेक वर्ष सँ मोतियाविन्दुक ऑपरेशन करा लेबाक हेतु कहैत रही।' गोविन्द बाबू कोठली मे सामनेक देबाल केँ देखबैत कहैत छथि, 'ओतय धरि देखैत छियैक। लग मे एखन साफ नहि।' हम हुनका बुझबैत छियनि, 'आँखि मे लेंस लगओलाक पछाति दूर देखबाले चश्मा भले आवश्यक नहि हो, किन्तु, पढ़बाक हेतु चश्मा लगबहि पड़त; डाक्टर चश्माक नंबर देताह। तखन पढ़ियो सकब। आब दोसरो आँखिक ऑपरेशन करा लेल जाओ। अपने 'पश्येत् वर्ष शरद् शतम्' केँ चरितार्थ कयल।' अक्कू जी हमर समर्थन करैत छथि, 'आँखिक ऑपरेशनक बाद बहुत अंतर आयल छनि। आँखिक रोशनीक कारण डिप्रेशन मे चल गेल रहथि।'

हमरा अपना एहन वृद्ध लोकनिक आँखिक ऑपरेशन करबाक दीर्घकालीन

अनुभव अछि। हम कहलियनि, 'जीवनक अवधि पर दृष्टिक बड़का प्रभाव होइछ, से शास्त्र सम्मत अछि। हम तँ लद्दाख़ मे एक टा वयोवृद्धक दुनू आँखिक ऑपरेशन एके बैसाड़ मे क' देने रहियनि।' गोविन्द बाबू चुपचाप हमर सलाह सुनैत छथि।

रमणजी हमरा सँ पहिनहि आयल रहथि। ओ गोविन्द बाबू सँ आज्ञा लए कय जाइत छथि। आइ श्री गोविन्द बाबूक जन्म दिन थिकनि। गोविन्द बाबू अपनहि मधुरक डिब्बा खोलि एक टा बर्फी मुँह मे लैत स्वादि कय खाइत छथि। कहैत छथि, 'नीक तँ लगैत अछि, किन्तु, अहू मे मनाही छैक।'

हम कहलियनि, 'अपने केँ स्वस्थ आ प्रसन्न देखि बहुत हर्ष होइत अछि।' कहलनि, 'स्वस्थ छी, किन्तु, स्मरण ठीक नहि। तथापि, भूत सब टा स्पष्ट देखबा मे अबैछ। भविष्य अन्धकार लगइए।' हम एकर अर्थ पूछि हुनका मस्तिष्क पर आओर जोर नहि देबय चाहैत छियनि। गोविन्द बाबू आगू कहैत छथि, 'बहुतो गप्प मन पड़ैत अछि। मुदा, लिखबा काल नाम सब स्मरण नहि अबैत अछि। लिखय बैसैत छी, तँ, परिचितो व्यक्तिक नाम मन नहि पड़ैत अछि। बहुत कालक पछाति कोनो-कोनो नाम मन पड़त। लिखैत-लिखैत बीचो मे विस्मरण होबय लगैछ। लिखलो नहि होइछ। कतेक रास वस्तु लिखबाक विचार होइछ, किन्तु, भ' नहि पबैछ।' हमरा आश्चर्य होइत अछि, आ प्रेरितो होइत छी। एखनो हुनकर एक कात मे एक टा पेपर क्लिप मे थोड़ेक फुलस्केप सादा कागज आ तकर पहिल पेज पर करीब आधा पेजपर किछु लिखल राखल छनि। हिनकर सुन्दर लिपि देखबा जोग होइछ। हम सोचैत छी, गोविन्द बाबू जतेक विधा मे आ जतेक परिमाण मे लिखने छथि से ककरो हेतु स्पृहाक विषय भ' सकैछ। किन्तु, ई एखनो लिखबाक सोचैत छथि। किन्तु, भगवान-भगवतीक इच्छा चर्चा नहि करैत छथि। स्व. नीरद चौधरी पंचानबे वर्ष मे लिखैत रहथि तँ ओ तहियाक कीर्तिमान छल। किन्तु, जे गोविन्द बाबू केँ जे जनैत छथिन, तनिका लेल ई आश्चर्य नहि। गोविन्द बाबू लिखबाक अपन अगिला योजनाक गप्प करैत कहैत छथि, 'भाषा विज्ञानक माध्यम सँ इतिहासक chronology क अध्ययन सम्भव छैक। भाषा विज्ञान मे इतिहासक chronology स्थापित करबाक सामर्थ्य छैक; historical linguistics ई कय सकैत अछि। ई भाषाक पारंपरिक अध्ययन सँ सम्भव नहि। कारण, इतिहासक अनेक श्रोत जेना, लोकगाथा, कथा, आ आन साहित्य जे बाहरी जगत केर वर्णन करैछ, ताहि मे कल्पना आ असत्य सेहो मिज्झड़ भ' जाइत छैक। तेँ, हम 'शब्द-संधान' लिखय चाहैत छी।' हम कहैत छियनि, 'अपने लिखय चाहैत छी, आ लीखि नहि पबैत छी, तकरो उपाय छैक। अपने अपन विचार रखिऔक, तकरा voice recording सँ संकलित कयल जा सकैछ। पछाति आनो एहि विषय पर काज कय सकैत छथि।' हमरा मन पड़ैत अछि, शिवशंकर श्रीनिवास स्व.किरणजीक

मुँहे कथा सुनि ओकरा लिपिबद्ध केने रहथि।

गप्प कनेक बदलैत छैक। हमर 'कुरल' मैथिली केर चर्चाक संग हम कहैत छियनि, हम तमिल सिखल। गोविन्द बाबू विषय केँ आगू बढ़बैत छथि। ओ कहैत छथि, 'बहुतो गोटे अनुवाद करैत छथि। मुदा, ओ लोकनि भाषाक तात्कालिक अध्ययन करैत छथि, भाषाक विकासक अध्ययन नहि करैत छथि। सुभद्र झा मैथिलीक अध्ययन कयलनि। मैथिली आ संथालीक बीच बहुतो समानता छैक। किन्तु, सुभद्र बाबू केँ संथालीक ज्ञान नहि रहनि। तेँ, मैथिली आ संथाली भाषाक बीचक संबंध अध्ययन नहि भ' सकल।' गोविन्द बाबू अपन निर्देशन मे सम्पूर्ण भेल मैथिली आ असमियाक तुलनात्मक अध्ययनक चर्चा करैत लगक ताख पर सँ प्रकाशित पोथी केँ निकालि हमरा देखबैत छथि। कहैत छथि, एहि सम्पूर्ण पोथी मे phonetic notations निर्दिष्ट छैक। तमिल आ मैथिलीक बीच समानताक सेहो अध्ययन हेबाक चाही।' हमरा ई गप्प ओ पहिनहुँ कहने रहथि, जहिया हुनका हम अपन 'कुरल मैथिली भावानुवाद' क प्रति देने रहियनि। गप्पक बीच हम तत्काल तमिल—आ मैथिलीक किछु श्रुतिसम-समानार्थक शब्दक उदाहरण दैत छियनि; यथा, माड-माल, ताय-दाई / माय, संकिली-सिकड़ी, किन्न-इनार, एच्चम-ऐंठ, नरी-नढ़िया, आदि। ओ कहैत छथि, 'ई तात्कालिक भेल। एकर chronology क संग अध्ययन हयबाक चाही। हम 1000-2000 वर्ष पुरान, तिरुवल्लुवर केर कुरलकेर तमिल शब्दाबली आ 1855 मे प्रकाशित Rev G U Pope केर Tamil Handbook महक तमिल- अंग्रेजी शब्दकोष केर चर्चा करैत छी। ओहि सँ ओ संतुष्ट होइत छथि आ हमरा 'तमिल आ मैथिली'क बीचक समान शब्द सब तकबाले कहैत छथि। अक्कू जी चकित होइत छथि आ हमरा एहि विषय पर एक टा लेख लिखबा लेल आग्रह करैत छथि। गप्प-सप्पक बदलैत दिशा मे संयोग सँ हमर कथा 'अब्बास अली बताह छथि ?' नामक कथाक चर्चा होइत छैक। गोविन्द बाबू कहने रहथि, 'हम एहन कथा आन कतहु नहि पढ़ने छी।' एहि विषय पर आइ ओ पुन: कहैत छथि, 'मैथिली कथा मे मिथिला सँ बाहरकेर कथानक अयबाक चाही।' अक्कू जी सेहो सहमति व्यक्त करैत छथि। हमर अपन जीवन-यात्राक दू तिहाइ मिथिला सँ बाहरेक अछि। तेँ, हमरा ले मिथिलाक भीतर आ बाहरक अनुभव केँ फुटकायब सहज नहि। तेँ, हम तँ हुनकर विचार सँ सर्वथा सहमत छी।

हम घड़ी पर नजरि दैत छी आ गोविन्द बाबू सँ आ अक्कूजी सँ आज्ञा लैत छी। 'शरद् शतम्' केँ स्पर्श करैत, गोविन्द बाबू क 'शब्द-संधान' लिखबाक योजना सँ प्रेरित होइत छी, चकित नहि। कारण, कोन ठेकान, अगिला समय मे गोविन्द बाबू एहू सँ पैघ कोनो आओर आश्चर्यजनक प्रतिमान स्थापित कए बैसथि! खेल अभी आगे बाँकी है, भाई!

दू टा विन्दु, दू टा विचार

'पेपरक छपाइ एतेक मेंही होइत छैक जे वृद्धले पढ़ब असंभव—पंडित गोविन्द झा'

पटना जाइत छी तँ सुप्रसिद्ध साहित्यकार पंडित गोविन्द झा केँ यदा-कदा भेंट करैत छियनि। एहि बेर हुनका सँ भेंट करय गेलहुँ, तँ,हुनका लाठी हाथें चलैत देखलियनि। हुनकहि शब्द मे, 'आँखि झलफल, हाथ थर-थर, पयर लट-पट...।' सब किछु वृद्धावस्थाक दोष। तथापि गोविन्दबाबूक स्मरण ओहिना स्पष्ट छनि, तर्क-शक्तिक धार एखनहुँ नव पिजाओल चक्कू सँ तेज छनि, आ वाणी सुस्पष्ट छनि। हम अपना संग अपन लिखल किछु कथा सब ल' गेल रही। हमरा गौरव अछि, गोविन्द बाबू हमर कथा संग्रह 'किछु नव गप्प, किछु पुरान गप्प' केर समीक्षा लिखने रहथि आ ओहि संग्रहक कथा 'किछु नव गप्प, किछु पुरान गप्प' केर विशेषत: प्रशंसा केने रहथि। एहू बेर कथाक पांडुलिपि हमरा संगमे छल। पुछलियनि, अपने कही तँ ई (पाण्डुलिपि) अपने लग छोड़ने जाइ।' गोविन्दबाबू कहलनि, झलफल आँखिक दुआरे पढ़ब कम भ' गेल। इन्टरनेट पर पढ़ि लैत छी। हम कथाक पाण्डुलिपिक सॉफ्ट-कॉपी हुनकर लैप-टॉप मे लोड क' देलियनि। गोविन्द बाबू गप्पक क्रम मे कहलनि, 'दुनू आँखिक मे बाम आँखि कनेक बेसी ख़राब अछि, दाहिना सँ काज चलैत अछि। एखनधरि मोतियाविंदुक ऑपरेशन नहि भेल। डाक्टर कहैत छथि, एखन जतबा सूझैत अछि ऑपरेशन सँ ताहि सँ बेसी नहि सूझत। पहिने पेपर -समाचारपत्र मे समय बीति जाइत छल। मुदा, पेपरक छपाइ एतेक मेंही होइत छैक जे पढ़ब असंभव। यद्यपि, पेपर-समाचारपत्र पढ़निहार मे बेसी संख्या बूढ़-बूढ़ानुसेक छनि तथापि पेपर छपाइ काल पेपर-समाचारपत्रक प्रकाशक पेपर पढ़निहारक एहि पैघ वर्ग केँ बिसरि जाइत छथि।'

सत्ये। अमेरिका मे देखने रहियैक, 'रीडर्स डाइजेस्ट' पत्रिका मोट छपाइबाला संस्करण सेहो प्रकाशित करैत अछि। कमजोर आँखिक लोक केँ ताहि सँ पढ़बा मे सुविधा होइत छैक। मुदा, हमरा लोकनि वृद्ध लोकनिक प्रति किएक उदासीन छी!

जीवनक अवधि बढ़तैक तँ देखब-सुनब कम हयब स्वाभाविक छैक। समाज केँ ई नहि बिसरबाक थिक। सोचैत छी, बच्चा, बूढ़, वयस्क, नारी, विकलांग केर खियाल जँ अपन समाज नहि रखतैक तँ आओर कोन उपाय छैक।

'नहीं भी लिखने आता है, सर सबको पास कर देते हैं'

कतबो कानून बनौक, समाज मे परिवर्तन तखने औतैक जखन समाज परिवर्तनले दृढ़संकल्प होयत। अन्यथा, कानून, कानूनक किताबे धरि सीमित रहत। एहने किछु अनुभव हमरा एहि बेरुक पटना यात्रा मे भेल। प्रसन्नताक विषय थिक,एखनुक युग मे सर्वशिक्षाक अभियान जोर पकड़ने छैक। मुदा, ई अभियान लक्ष्य प्राप्ति मे कतेक धरि सफल भ' रहल अछि से बड़का प्रश्न थिक। राज्य सरकार लोकनि बढ़ि-चढ़ि कय अपन-अपन उपलब्धिक गाल बजेबा मे तत्पर छथि। मुदा, चुनावक समयक बड़का-बड़का पोस्टर सरकारी आंकड़ा आ समाजक उपलब्धिक बीचक खाधि केँ पाटि नहि पबैछ। सरकारी प्रचार आ पोस्टरक खर्चा तँ जनता वहन करिते अछि। सरकार केँ आंकड़ाले बेसी किछु करय नहि पड़ैत छैक। स्कूलक एडमिशन, पढ़ाइ, परीक्षा, आ सरकारक उपलब्धिक आंकड़ा सब टा कागजहि पर बनैत छैक। ई गप्प सुनैत तँ छियैक जहाँ-तहाँ, मुदा, पटनाक हालक यात्रा मे सरकारी दावा केँ पुनः ध्वस्त होइत देखलहुँ। पटना मे घर मे काज केनिहारि खबासनी प्रतिदिन अपन बेटी केँ संगे आनि काज मे लगा दैत छलैक, से देखियैक। हमरा बड़ कोनादन लागय। हम कतेक बेर कहलियैक, एना बच्चाक पढ़ाइ कोना चलतैक, एकरा स्कूल जाय दियौक। मुदा, ओ किएक सुनती। खबासनी के बेटी सँ जेठ आओर बेटालोकनि छथिन, मुदा, झाड़ू-बुहारूक काज बेचारी बेटिये करथु। जे किछु। एक दिन ओहि बच्चा केँ, सीता-गीता-कमला-विमला, नाम जे किछु होउक, हम अपना लग सोर केलियैक। कहलियैक, 'चिट्ठी लिखय अबैत छह?' छौड़ी मुसिकी देबय लागल। हम कहलियैक, 'बैसह।' छौड़ी लगमे बैसि गेल। हम रुलदार कागजकेर एक टा पन्ना आ पेन्सिल अनलहुँ आ बच्चा केँ दैत कहलियैक, 'तोहरा कापी किनबाले पचास टाकाक काज छह। मायक नामे चिट्ठी लिखह, पचास रुपैया कापी किनबा ले चाही।' बच्चा तुरत एक पांती मे चिट्ठी समाप्त कय हमरा हाथ मे पकड़ा देलक; सारांश मे लिखल छलैक : 'ममी, कापी खरीदने के लिए पचास रुपया दो' हिज्जेक अशुद्धि तँ छोड़िए दियअ। हम पुछलियैक, 'चिट्ठी नहि लिखय अबैत छह?' बच्चा फेर हँसय लागलि। हम बच्चा केँ लग मे बैसा चिट्ठी लिखबय लगलहुँ। पत्रकेर डिक्टेशन सात-सँ-दस पंक्ति मे समाप्त भ' गेलैक। मुदा, अनगनित अशुद्धि। सातवां वर्गक छात्रा। पत्र धरि लिखय नहि अबैत छैक। हमरा लोकनि केँ पाँचम वर्ग मे आचार्य रामलोचन

शरणकेर 'पत्र-चन्द्रिका'क माध्यमे चिट्ठी लिखब सिखाओल गेल छल। ओहि युग मे प्राथमिक विद्यालय मे सातवां पास—'मिडिल ट्रेंड'—शिक्षक लोकनि कम-सँ-कम भाषा आ गणित मे अवश्ये दक्ष होथि। आइ बी. ए., एम. ए. शिक्षा-मित्र सँ ल' कय स्थायी शिक्षक धरि—मड़ुआक दोबर उपलब्ध छथि। मुदा, ई सातवां वर्गक कन्या अपन मायक नामे पत्र धरि नहि लिखि सकल। स्वाइत सब सर्टिफिकेट आ परिचय पत्र अशुद्ध छपैत छैक। पुछलियैक, 'पढ़ैत नहि छहक? सातम वर्ग मे छह!' छौड़ी फेर हँसय लागलि, लजाइत बाजलि, 'नहीं भी लिखने आता है न, सर सबको पास कर देते हैं!'

हमरा योजनाक सफलता आ सरकारक आँकड़ा दुनूक सत्यता बुझबा योग्य भ' गेल। नहि जानि 100 प्रतिशत स्कूल एनरोलमेंट आ शत-प्रतिशत साक्षरताक आँकड़ा कहिया धरि शत-प्रतिशत शिक्षित नागरिकक लक्ष्य पूर्ण कय सकत।

डा. उमेश झाक भोजपुरी 'गीता भाव प्रकाश'

मातृभाषा-प्रेम स्वाभाविक थिक। किन्तु, आन भाषाक प्रति विद्वेष मातृभाषा-प्रेमक वीभत्स रूप थिक। सत्यत:, एक सँ अधिक भाषा बजबाक -लिखबाक क्षमता गुण आ सशक्तीकरण दुनू थिक। अपन एही क्षमताक कारण भोजपुरी गीताक रचयिता स्व. डा. उमेश झा मैथिल कवि लोकनि मे अपरिचित, किन्तु, अद्वितीय छथि। किएक? से, कनेक रहि कय।

इतिहास विदित अछि, स्वतंत्र भारत मे करीब आधा शताब्दी धरि हिंदी-अंग्रेजीक अतिरिक्त केवल करीब गोड़ बीसेक भाषा केँ संविधानक आठम अनुसूची मे स्थान रहैक। फलत:, आठम अनुसूची सँ बाहर भाषा-भाषी केँ हीनताक बोध हयब स्वाभाविक। ततबे नहि, सरकारी मान्यताक अभाव मे बहुतो भाषा ने अपन क्षेत्र मे शिक्षाक माध्यम छल आ ने ओहि भाषा सब केँ समुचित सरकारी सहायता भेटैत छलैक। एहि सँ मैथिली-सन भाषा केँ जे हानि होइत छलैक से सर्वविदित अछि। तथापि, सरकारी प्रश्रयक अभाव नागरिक भाषा-प्रेम केँ निर्मूल नहि कय सकल। हँ, ओहि समय मे अपन भाषा केँ उचित अधिकार दिअयबाक अभियान मे जुटल बहुतो गोटेक धारणा रहनि - आ से निराधार नहि - जे हिंदीक बोझ मैथिलीक डांड़ तोड़ि रहल छैक; भोजपुरी केँ सरकारी मान्यता भेटतैक तँ मैथिली कमजोर हयत; बज्जिका पृथक भाषा नहि, मैथिलीक भिन्न स्वरूप थिक,आदि।

किन्तु, भाषा- आ साहित्य-प्रेमक एक टा दोसरो पक्ष अछि : भाषा-साहित्यक समर्थक आ विरोधी लोकनिक एहि परस्पर द्वन्द्व आ विद्वेष सँ दूर एक दिस जँ कतेको व्यक्ति अपन स्वत: प्रेरणाक बलें मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा मे सृजन करैत यात्री-नागार्जुन, आरसी प्रसाद सिंह-जकाँ दुनू भाषा मे प्रसिद्ध भेलाह, तँ, दोसर दिस प्रचार आ प्रसिद्धि सँ दूर आन कतेको गोटे मातृभाषाक संग आन पड़ोसी भाषा मे नि:स्वार्थ भावे सृजन करितो विस्मृते रहि गेलाह। एहि दुनू कोटिक साहित्यकारक बीच दोसर कोटिक कवि स्व. डॉ. उमेश झा एहने साहित्यकार छलाह, जनिक भोजपुरी गीता, अपना-सन अपने-टा होइतो अपरिचयक गर्भ मे पड़ल अछि। विश्वास नहि हो, तँ,

गूगल पर भोजपुरी-गीता टाइप करू। पहिल परिणाम मे भोजपुरी भाषाक कोनो वीभत्स गीतक विडियोक लिंक भेटत : गीता रानी सौंग! अस्तु, हमर ई लेख स्व. डॉ. उमेश झा एवं हुनक भोजपुरी गीता आ भोजपुरी सृजन पर केन्द्रित अछि। ज्ञातव्य थिक, डॉ. उमेश झाक दरभंगा-लहेरियासराय परिसर मे करीब पचास वर्ष धरि, स्वास्थ्य सेवा (दरभंगा-लहेरियासराय केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट संघ केर प्रमुख), राजनीति (युवा कांग्रेस केर अध्यक्ष), पत्रकारिता (हिंदी मासिक 'त्रिकाल नूतन भारती'क सम्पादक प्रकाशक आ दरभंगा जिला पत्रकार संघ केर अध्यक्ष), समाज सेवा (दरभंगा स्टेडियम निर्माण समिति) आ शिक्षाक क्षेत्र (लहेरियासराय पब्लिक स्कूल एवं JMIT* दरभंगाक संस्थापक सदस्य), एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानीक रूप मे सक्रिय रहथि।

ततबे नहि, ओ अवाम मे अपन आवास परिसरहिं मे रमानाथ जन पुस्तकालय क स्थापना सेहो केने रहथि। दुर्भाग्यवश, कमलाक बाढ़ि आ ग्रामीण लोकनिक उदासीनताक कारण ई सुन्दर संस्था आइ निर्मूल भ' चुकल अछि।

किन्तु, हुनक मृत्यु लगभग बीस वर्ष पछातियो हुनक प्रकाशित आ अप्रकाशित रचना सब ओहिना पड़ल अछि।

दरभंगा जिलाक अवाम ग्राम निवासी स्व. डॉ उमेश झाक जन्म विगत शताब्दीक तेसर दशक मे हिनक मातृक, तत्कालीन चम्पारण जिलाक ओझा-बरबा गाओं मे भेल रहनि। अपन मातृकहिक समीप मच्छरगांवा नामक स्थान मे मिडिल स्कूल धरिक शिक्षाक पछाति हाइ स्कूलक शिक्षाक हेतु डॉ. उमेश झा तहियाक दरभंगा जिलाक मधेपुर हाइ स्कूल मे किछु दिन पढ़ने छलाह। किन्तु, पारिवारिक कारण आ स्वतंत्रता संग्राम मे सहभागिताक कारण ओतय हिनक शिक्षा पूर्ण नहि भ' सकलनि। तहियाक मिथिलांचल मे आर्थिक विपन्नता घर-घर मे डेरा जमओने छल। अस्तु, जकरा जतबा ऊहि आ अवगति छलैक, जीविका तकैत छल। डॉ. उमेश झा सेहो मेडिकल व्यवसायक बाट धेलनि आ चालीस आ पचासक दशक मे लहेरियासराय परिसर मे पहिने प्रसिद्ध फिजिशियन डॉ. भवनाथ मिश्र आ पछाति सर्जन डॉ. कपिलदेव प्रसादक सहायकक रूप मे जीविकोपार्जन आ समाजसेवा दुनू केलनि आ समाजक आदर पओलनि। पछाति, ओत्तहि भारत फार्मेसी नामक प्रतिष्ठान चलबैत, पूर्ववत आजीवन समाज सेवा सँ जुड़ल रहलाह।

डॉ. उमेश झा केँ नान्हिए टा सँ कवित्व आ सामाजिक चेतना दुनू रहनि। जकर प्रमाण नेना लोकनिक हेतु हिनक रचल, वर्णमाला पर आधारित मैथिली पद सब

---

* जगन्नाथ मिश्र इन्स्टिच्यूट ऑफ टेक्नोलोजी

हुनक कतेको पड़ोसी आ परिवारजन केँ सुनल हेतनि। युवावस्था मे अपन गामक समवयस्क सब मे साक्षरताक अभियान हुनकर सामाजिक चेतनाक ज्वलंत उदहारण छल। हुनक चटिसारक साक्षर व्यक्तिसब मे ओ आजीवन 'मास्टरे साहेब' छलाह। अवामक नब्बे सँ ऊपर हरिदास आब ओहि चटिसारक अंतिम जीवित सदस्य छथि।

आब एहि लेखकेर मूल विषय-बहुभाषाक सहअस्तित्व पर आबी। स्व. उमेश झाक माता स्व. गंगावती देवीक मातृभाषा भोजपुरी रहनि। किन्तु, ओ छोटे वयस मे बियाहि मिथिलांचल आबि गेल छलीह। अस्तु, क्रमशः ओ मैथिली केँ अपनबैत मैथिली-भाषी भए गेलीह। किन्तु, बाल्यावस्था मे लागल माइक भाषाक लसेढ़, पछाति अपन प्राथमिक शिक्षाक अवधि मे भोजपुरी प्रेमक रूप लेलक आ मैथिली-भोजपुरी दुनू स्व. उमेश झाक मातृभाषा भ' गेल; यद्यपि, हुनका अपन माताक संग भोजपुरी मे गप्प करैत हमरा लोकनि कहियो सुनने नहि छियनि। तथापि, जीवन पर्यंत स्व. उमेश झा अपन भोजपुरी-प्रेम केँ 'तूफान का दिया'-जकाँ जोगा कय रखने रहलाह। हुनक भोजपुरी-प्रेम हुनक मृत्यु (2000 ई) सँ किछुए दिन पूर्व फलीभूत भेलनि जखन ओ श्रीमद्भगवद्गीताक भोजपुरी अनुवाद, 'गीता भाव प्रकाश'क नामे प्रकाशित कयलनि। जहाँ धरि स्मरण अछि, हम करीब तीस वर्ष धरि स्व. उमेश झा केँ भोजपुरी-गीता पर काज करैत देखने छियनि। अनुवादक पद्यकेर लय आ तुक केँ परिमार्जित करबाक हेतु ओ प्रतिदिन अहल भोरे गीताक अनुवाद केँ ल' कय अपन लहेरियासराय आवासक बरामदा पर बैसि गीताक सस्वर पाठ करैत छलाह। जेंकि, हुनक आवासक ओ बरामदा बाटक कातहि रहनि, तेँ, ई दृश्य बहुतो केँ देखल हेतनि,से सम्भव। संयोग सँ स्व. उमेश झा माइक भाषा (भोजपुरी), मातृभाषा (मैथिली) आ राष्ट्रभाषा (हिंदी) प्रति क प्रेमक बीच कोनहु द्वन्द्वकेर अनुभव नहि भेलनि। एकर प्रमाण थिक तीनू भाषा मे हिनक समान योगदान। सम्भव अछि, एहि तथ्य सँ बहुतो अभिज्ञ होथि। जँ एकदिस ई भोजपुरी गीताक रचना कयलनि, तँ, दोसर दिस भर्तृहरिक नीति, शृंगार आ वैराग्य शतककेर मैथिली अनुवाद मैथिलीक पीड़ी पर हिनक अर्पण थिक। दुखक विषय जे हिनक मृत्युक एतेक दिनक पछातिओ ई कृतिसब अप्रकाशिते अछि। एकर अतिरिक्त प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंहक जीवनपर आधारित लघु काव्य कृति 'वीर कुंवर सिंह' एवं भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधीक प्रशस्ति मे रचित 'भारत की महान बेटी' राष्ट्रभाषा मे हिनक योगदान थिक, जे सत्तरि दशक मे प्रकाशित भेल छल। ज्ञातव्य थिक, एहि दू प्रकाशित कृतिक अतिरिक्त हिंदी मे हिनक आओर अनेको कृति एखनहुँ अप्रकाशित छनि। ततबे नहि, एहू सँ बेसी दुखद विषय सुनू। हम कौतूहलवश ई तकबाक प्रयास कयल जे स्व. उमेश झाक गीता भाव प्रकाश सँ भिन्न

आन कोनो गीता भोजपुरी मे छैक, कि नहि। एखनुक युग मे ई सब गप्प एखुनका सर्वज्ञ गूगल केँ छोड़ि ककरा पुछबनि। अस्तु, हम 'गूगल सर्च पेज' पर भोजपुरी गीता सर्च कयल तँ परिणाम मे गीता तँ नहि भेटल, किन्तु, क्षण मात्र मे सम्पूर्ण गूगल पेज वीभत्स 'भोजपुरी गीत' सब सँ भरि गेल! हमरा अपन प्रश्नक उत्तर भेटि गेल: एक, भोजपुरी मे 'गीता भाव प्रकाश'क अतिरिक्त श्रीमद्भगवद्गीताक दोसर अनुवाद नहि छैक; दू, भोजपुरी मे गीताक अनुवाद छपलो छैक तकर अनुमान, जनसाधारणक तँ गप्प छोड़ू, 'गूगल' बाबा धरि केँ नहि छनि!

भोजपुरी गीताक संबंध मे स्व. उमेश झा कहथिन, 'महिसक पीठ पर बैसि महिस चरबैत महिसबारहु केँ जँ मोन हेतैक, तँ, ई गीता ओ पढ़ि, आ बूझि लेत।' दुखद थिक, हुनकर (भोजपुरी) गीता भाव प्रकाश प्रचारक अभाव मे, एहन आनो कतेक ग्रन्थ जकाँ विस्मृत पड़ल अछि। किन्तु, भाषा साहित्यक जीवन मे ई समय बहुत नहि। ककरा कहिया कोन विस्मृत कृति नव आविष्कार बूझि पड़ैक आ बिसरल ग्रन्थ स्वत: प्रकाश मे आबि चमत्कृत भ' जाय।

हमरा जनैत, मैथिली-हिंदी-भोजपुरी मे स्व. उमेश झाक समान साहित्यिक योगदान केवल हुनक राष्ट्रीय दृष्टिक द्योतके टा नहि, पड़ोसी भाषा साहित्यक बीचक परस्पर विद्वेषक विरुद्ध प्रखर उद्घोष थिक! दुखद अछि, हुनक गांओ मे एहि स्वतंत्रता-सेनानी आ साहित्यिक मूक साधकक आइ कोनो स्मारक नहि अछि।

माताक अविस्मरणीय स्पर्श

महाभारतक कथा मे अभिमन्युक प्रसंग मे गर्भस्थ शिशुक अनुभवक कथा रहैक तँ लोक केँ हठे विश्वास नहि होइक। आब आधुनिक विज्ञान कहैत छैक, गर्भस्थ शिशु आ माताक बीच मूक सम्प्रेषण चलैत रहैत छैक, तँ लोक केँ विश्वास होमय लगलैक अछि। मुदा, ई दुनू गप्प मे भले जे सत्यता होइक, हमरा लगै नेनपन मे हम सुतले-सुतल माता सँ बहुत किछु सिखने रही।

घर परिवारक नंग-चंग मे माय-बाप केँ भोरे उठय पड़इ छलैक आ हमरा लोकनि घसमोड़ने पड़ल रहैत छलहुँ। मुदा, भोरे- भोर जे श्लोक सब कान मे पड़ैत छल से कहिया आ कोना अनायास कंठाग्र भ' गेल से नहि जानि। मुदा, नेनपन मे सुनल श्लोक सब एखनो तहिना स्मरण अछि जेना काल्हिये सिखने होइ :

गंगा गीता गायित्री गोविन्द गरुड़ध्वज:
गकारादिं स्मरेनित्यं ग्लानिस्तस्य न जायते...

जवाकुशुम संका सँ काश्यपेयं महाद्युतिम
तमोरिंसर्व पापघ्नं प्रणतोसि दिवाकरम्
आदि, आदि... ।
फेर जाड़क भोर मे शुरु होइ पराती।
'माधव आब न विलासक बेर ..... ।

कहियो उठाबथि, 'उठो लाल आँखें खोलो, पानी लायी हूँ मुख धो लो'

नहि जानि, ओहि युग मे हिंदीक ई पद कतय सँ सिखने रहथि। हँ, एतबा अवश्य जे घर मे बिहारी कविक 'बिहारी सतसई', मैथिली शरण गुप्त केर 'जयद्रथ वध' आ तुलसी आ चंदा झाक रामायण तँ अवश्ये रहैक।

पिता पंडित रहथिन। भाइ लोकनि पढ़ल लिखल; एक गोटे तँ 'धौत लब्ध-प्रतिष्ठ पंडित' सेहो। तेँ, विद्याक संपर्क तँ जन्मे सँ रहबे करनि, धीयापुता अनुशासन सँ रहय आ पढ़ि-लिखि आगू बढ़य तकर दुर्दांत आग्रह सेहो छलनि। इएह थिक

माताक, हमर आरंभिक स्मृति।

किन्तु, माता हमरा किएक मन पड़ैत छथि, जखन हम अपनहुँ वयसाहु भ' चुकल छी। आब माता-पिता दिवंगत भ' चुकल छथि। हुनका लोकनिक कोनो मांग वा दवाब नहि। जे किछु मंगलनि नहि मुदा, अपना जे देबाक इच्छा छल से आब अपूरे रहत। आब से अनुभव भेल। आब बुझबा मे आयल, माता-पिता-नेनाक संबंधक विविध आयाम केहन होइत छैक से तखने बूझि पड़त जखन अपने माता-पिता भ' जाइ। पहिने किछु बुझबा मे नहि अबैत छैक। हमरालोकनि बूझैत छी, माता-पिताक ज्ञान, हुनका लोकनिक शिक्षा आ परिवेशे धरि सीमित छनि। मुदा, सत्य ई छैक जे जीवनक अनुभव माता-पिता केँ शिक्षा आ परिवेशक परिधिक बहुत आगू, वृहत्तर संसारक दिव्य दृष्टि सँ संपोषित केने रहैत छनि। औपचारिक शिक्षाक अभाव मनुष्यक अनुभवक विस्तार केँ बान्हि नहि पबैत छैक। ततबे नहि, माता-पिता, जन्म सँ कैशोर्य धरि संतानक प्रवृत्ति आ स्वभावक प्रत्येक फलकक तेहन अनावृत्त स्वरूप सँ परिचित रहैत छथि, जे संतानक अंतर मे मुड़ियारि देबामे हुनका लोकनि केँ एको क्षण नहि लगैत छनि। तेँ, आइ लगैत अछि हमरा लोकनि केहन अमरुख रही, आ माता-पिता हमरा लोकनिक अनेक व्यवहार पर मनहि मन कतेक हँसैत छल हेताह वा विस्मित होइत छल हेताह!

हमर पिता स्व. तारानाथ झा : साधारण लोक, असाधारण विचार

जनसाधारणक जीवनी नहि लिखल जाइछ। लिखल जेतैक तँ पढ़तैक के? मुदा, साधारणो लोक मे असाधारण गुण आ विचार हयब आश्चर्य नहि। एहन गुण आ विचार कतेक बेर अपनहु परिवार मे देखबैक। मुदा, तकरा के लिखत, के कान-बात देतैक। ओना तँ अपन परिवार मे संगे-संग रहैत, लोक केँ बेसी काल परिवारजन मे गुण सँ बेसी अवगुणे देखबा मे अबैत छैक; खासक लोक जेना-जेना वयसाहु-बूढ़ होमय लगैछ, अनकर नजरि मे ओकर दोषक संख्या ओहिना बढ़य लगैछ, जेना, पुरान गाछक सीलक गिरह आ धोधरि बेसी जगजियार होमय लगैछ। तखन इहो सत्य जे अपन परिवारक प्रशंसा मे आत्मप्रशंसाक गंध तँ आबिए जाइत छैक; आ प्रशंसा मे अतिशयोक्तिक भय सेहो रहैत छैक। माने, ओ वस्तुनिष्ठ नहि भेल। तथापि, एतय हम अपन पिताक चर्चा करय चाहैत छी। एहि वर्ष हुनक मृत्युक ओतबे वर्ष भेलनिए जतबा दिन हमरा डाक्टर बनना भेल-करीब 40 वर्ष।

ई गप्प हमर मेडिकल कालेज जीवनक अवधिक थिक। हमरा लोकनि 1973 ईसवी मे दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे भर्ती भेल रही। ओही वर्ष हम कॉलेजक ओल्ड हॉस्टल मे डेरा लेल। प्राय: 20 × 20 फुट केर कमरा। चारि टा कौट-खाट, चारि टा टेबुल- रैक कॉम्बो, चारि टा खिड़की, एक टा दरवाजा, आ चारि टा विद्यार्थी— कीर्तिनाथ झा, विजय कुमार सिन्हा, सैयद मुसर्रत हुसैन, आ सतीश कुमार दास। ओहि युग मे, जहिया मेडिकल कालेजहुँ मे जिला-जवारी आ जाति ताकि-ताकि कय विद्यार्थी सब रूममेट केर मिलान करैत छल, तहिया ई व्यवहार क्रांतिकारी नहि, तँ, आधुनिक अवश्य छलैक। जे किछु।

हम जखन हॉस्टल मे रहय लगलहुँ, छठि - चौड़चन मे गाम सँ सनेस ल' कय दादा जखन दरभंगा आबथि तँ होस्टलो आबथि। अपन युग मे व्यवसायें दादा जमींदारक तहसीलदार अर्थात revenue clerk रहथि। माने, अपना युगक सामान्य

शिक्षित, तथापि, प्रतिष्ठित। औपचारिक शिक्षा तँ कमे छल हेतनि। विचार-व्यवहार आ नेम-नियम सेहो अपन युगक अनुकूल रहनि। नेनपन मे हमरा लोकनि दादा सँ डेराइत अवश्य रही, मुदा, हुनक स्वभाव सरल रहनि; क्रोध ले नामी छलखिन अवश्य। तेँ नेनपन मे हमरा लोकनि दादाक संग बैसि कय गप्प करितहुँ तकर ने लोक केँ पलखति रहैक, ने घर मे तकर परिपाटी रहैक। तथापि, मेडिकल कॉलेज अबैत - अबैत हमरा दादा सँ धाख कनेक छूटय लागल छल। मुदा, तकर पछाति दादा रहबे कहाँ केलाह; इंटर्नशिप समाप्त भेले छल कि दादा तेहन रोग-ग्रस्त भेलाह जे तीन मासक भीतरे चलि गेलाह।

आब गप्प पर आबी। एकबेर एहने पाबनि-तिहारक पछातिक कोनो अवसर पर दादा ओल्ड - हॉस्टल आयल छलाह। हम पुछलियनि, हमर कोठली मे एक टा मुसलमानो छथि। (ओहि युग मे गाम-घर मे मुसलमान लोकनि गाम पर आबथि अवश्य मुदा, ओसारापर वा इनारक चबूतरापर चढ़बाक परिपाटी नहि रहैक)। दादा कहलनि, कोनो बात नहि। हमरा कनेक हिम्मत बढ़ल। हम कहलियनि, दादा, कहियो काल हमरा लोकनि एके थारी मे खाइयो लैत छियैक। दादा कहलनि, की हेतैक। अहाँक दोस्त थिकाह ने!

आइ सोचैत छियैक, तँ आँखि मे नोर आबि जाइत अछि। समाजक साधारण मनुक्ख, दादाक, केहन असाधारण विचार रहनि!

नेनपनक स्मृति

नेनपन केर सब सँ पुरान स्मृति? कहब मोसकिल अछि। मुदा जँ चिर अतीत मे भसिआइ, तँ सब सँ पुरान आ भयावन स्मृति कमलाक बाढ़ि हयत। चारू दिस पसरल पानि, त्राहि-त्राहि करैत मनुक्ख, रंग-बिरंगक कीड़ा-मकोड़ा-साँप-बीछ आ असक्क माल-जाल। ने जयबाक बाट, ने खयबाक अफरात अन्न, ने जरयबा ले जारनि, आ ने रहबाले निचू चार। मुदा, संतोष एतबे जे गाम मे सबहक हाल मोटा-मोटी एके रंग रहैक। तथापि, सब केँ तँ अपने जानक चिंता, अपने धीयापुताक बेगरता। दिन भयावह लगै, आ राति पहाड़। ककरो टाटक घर भसि जाइ, तँ ककरो भीत खसि पड़ैक। ककरो भीतक तर माल-जाल मरि जाइ आ पतिया लगैक, तँ, केओ अपनहि अपंग भ' जाय।

तैपर सँ लागल जजात दहा जाइ, पाकल आम लोक तोड़ि नहि पाबय। रेलक पटरी बही जाइ, बान्ह भासि जाइ। सब कतौक बाट बन्न भ' जाइ। लोक पड़एबो करत तँ कतय? इएह थिक हमर सब सँ पुरान स्मृति जे एखन धरि मानस पटल पर शिलालेख-जकाँ पड़ल अछि।

सब सँ सुखद स्मृति? पोखरि मे भरि मोन चुभकब, गाछी मे भट- भट खसैत पाकल आम बीछब- चोभा मारब। लताम,जामुक गाछ पर चढ़ब, बाड़ीक गुलाबखाश आमक डारिपर मचकी झूलब। छैठ-चौरचनक पकबान खायब, पंचमी-आर्द्राक खीर सरपेटब, आ सरिसब बाला माछक झोर सुरकब।

ठनका सँ डर होइत छल आ ताश- पचीसी सँ दूर रहैत छलहुँ। अनका पढ़ाएब नीक लागैत छल मुदा, लाल-बहिन माय केँ शिकायत करथिन, तै सँ साकांक्ष रहैत छलहुँ।

दरबज्जा पर गाय छली, मुदा मरखाहि। दूध नहिए, तरहुद ढेर। दादा बेसी काल बाहर रहैत छलाह। हुनका सँ डेराइत बहुत रही, तेँ नीके लागै।

अन्हरिया पक्ष मे चोरहोक बड्डु हल्ला होइ, राति मे डरे सकदम्म भ' कय सूती आ भोरे निःश्वास लैत उठी।

पढ़ैक जिज्ञासा अत्यंत छल, मुदा, गाम मे शिक्षित लोकक संख्या बड्डु कम रहै; बाल-वर्गक गणित पढ़ओनिहार धरि केओ नहि। जीबू* आ शिबू** भाइ सबसँ लग मे आ सुलभ शिक्षक छलाह। स्कूल मे मास्टर सेहो बुझाबथि। स्कूल जयबा काल गाछी सब मे सब केँ भूत-प्रेतक डर होइ। गामक चारू कात तँ गाछी-कलम छलैहे। ताहि पर सँ लकड़सुंघा बाबाजीक भय। संगी-साथी मे छर्पा (स्व. नारायण चौधरी), नथुनी, राजिन्द्र (ठाकुर), दुखी (मंडल), ठकनी (प्रभा कुमारी), मिथिलेश कुमारी, राम दाइ आ, अपन लाल-बहिन (दिवंगता शीला देवी) छलीह। खेलयबाक खेलौना मे कनैलक बीया, काचक गोली- गोलीक मनाही रहैक, आ गेंद। दौड़-धूप, कबड्डी-कुश्ती सेहो होइक, मुदा हम ताहि सब सँ दूर रही, माय कहथि ई कमजोर छथि, पेट कहियो ठीक नहि रहै छनि, डंड़ाडोरि हरदम डांड़ सँ खसैत रहैत छनि। कोना नहि होइत, संतुलित आहार शब्द स्कूल मे सुनने नहि रहिऐक। स्वास्थ्य-विज्ञानक ककरो ज्ञान नहि रहै। टीकाक नाम पर चेचक केर टीका होइ जाहि मे एकेटा रोटरी-लांसेट सँ हेल्थ-वर्कर भरि स्कूलक नेना केँ पाचि देथिन। हैजाक टीका ले केओ आबथि त चांगला चटिया सब स्कूल सँ भागि जाय, की त सुई सँ ज्वर भ' जायत।

बहुत दिन भ' गेलै, बहुत लोक मरि गेल, बहुत गप्प बिसरि गेल। मुदा बहुतो चित्र स्मृति-पटल पर ओहिना अछि।

---

* स्व. रेवती रमण झा

** श्री रोहिणी रमण झा

हमरा गाम किएक मन पड़ैत अछि

एखनुक युग मे बहुतो लोक मे एक टा व्याधि देखि रहल छी: जे गाम मे छथि, से गामक परिस्थिति सँ क्षुब्ध छथि, आ जे गाम सँ बाहर छथि से गाम केँ मन पाड़इत nostalgia मे डूबल छथि। गौरीनाथक फेस बुक पोस्ट सेहो एकर चर्च केलक अछि। अस्तु, एहि रोगक चिकित्साले एतय हम तीन टा विचार बिन्दु पर विचार करय चाहैत छी :

1. हमरा गाम कोना मन पड़ैत अछि।

2. गाम सँ हम किएक बहरयलहुँ।

3. गामक वर्तमान परिस्थिति केहन अछि ? आ वर्तमान परिस्थिति कोना सुधरि सकैत अछि।

हमर स्मृतिक गाम ने लड्डू थिक आ ने करैला। हमर स्मृतिक गाम तीत मधुर दुनू अछि। जँ, सुदूर नेनपन मे जाइ तँ गामक सब सँ अधिक दुखद स्मृति अछि आधा गामक भूखले पेट सूतब। नांगट आ रोगाह नेनासब, आ सब कथूक किल्लत। किन्तु, सामाजिक सौहार्द्र आ सब केर हृदय मे एक दोसराक दुख-सुख, आफत-आसमानी मे सहानुभूति तहिया समाजक संजीवनी रहैक। एकर एक-दू टा उदाहरण देब : मुहर्रम मे हिंदू बच्चा सब सेहो 'जंगी' बनैत छल आ जखन टोल पर बाटें ताजियाक जुलूस जाइत छलैक, तँ टोल परहक माउगि-मेहरि सब ताजियाक पयर धोइत छलि। हाल मे गामक ई सौहार्द्र कनेक कमजोर भेलैए। गामक जे मुसलमान नागरिक हमरा लोकनिक खेतक बटेदार रहथि से हमरा लोकनिक माता पिता केँ काका वा काकी-जकाँ संबोधित करैत रहथिन। एक टा आओर उदाहरण : हमरा गामक अब्दुल रहीम तुर्क मुसलमान छलाह। जोग-टोन आ भूत-प्रेत भगयबाक कला मे समाज मे अपन धाख छलनि; हम एतय एहि सभक सत्य-असत्यक तर्क पर नहि जायब। हमर माता अब्दुल रहीम सँ उपकृत छलीह; डाक्टर-वैद्य विहीन गाओं मे भगता-ओझा गुणीक काज ककरा ने होइत छलैक। अस्तु, अब्दुल रहीम जहिया कहियो हमरा लोकनि सँ किछु माँगय आबथि, खाली हाथ नहि जाथि। एहि संबंध मे बहुत

रास असंतुलन रहैक। किंतु, से भिन्न गप्प। ततबे नहि, समाजक नीचाक तबका केँ सेहो एक टा आदर आ सामाजिक स्थान रहैक। जेना, कलरी नामक चमाइनि गाम भरिक 'मिड वाइफ' छलीह। हमरा लोकनि सात भाइ-बहिनक जन्म हुनकहि हाथेँ भेल छल, से सुनैत छी। तेँ, कलरी सेहो हमरा माताले आदरक पात्र छलीह। अर्थात् सामाजिक संरचनाक गुण-दोषक बावजूद समाज मे सभक अपन-अपन प्रधानता, रोल वा प्रतिष्ठा रहैक। आब ओ संस्था कोना अछि से जे गाम मे छथि, से कहताह। हमरा तँ गाम छोड़ला पचास वर्ष भ' गेल। ताहि दिन गाम घर मे स्कूल कालेजक कमी, स्वास्थ्य सेवाक अभाव अवश्य रहैक। किंतु, हमर दृष्टिएँ, जे स्कूल रहैक तकर स्तर आजुक स्तर सँ नीक रहैक; हमरा सभक भविष्यक आधारशिला तँ ओही स्कूल मे पड़ल छल। हँ, तहिया संचार व्यवस्था सब दृष्टिएँ लचर रहैक। भ्रष्टाचार तहियो छलैक। हम आठम वर्ग मे रही। योग्यता-सह-निर्धनता छात्रवृत्तिले बी. डी. ओ. सँ आय-प्रमाणपत्र लेबाक छल। मनीगाछी ब्लॉक गेल रही। बी. डी. ओ. प्रमाण-पत्र देलनि। किंतु, बी. डी. ओ.क ठप्पा लगेबाले बी. डी. ओ.क चानन-ठोपधारी क्लर्क डेढ़ टाका नेने छलाह से मोन अछि। उजान मिडिल स्कूल आ झंझारपुरक टिबड़ेवाल स्कूल मे पढ़ने छी। तहियाक शिक्षक लोकनि एखनुक कोनो प्राइवेट स्कूलक शिक्षक सब सँ बेसी दक्ष आ बेसी जिम्मेदार रहथि, से निर्विवाद। हँ, ओहि युग मे छोट-छोट मुद्दा पर गाम घर मे झगड़ा-झंझट भ' जाइक। आरि-धूर, माल-मवेशी, खेत-खरिहान वैमनस्यक मूल कारण होइक। आबहु जे गाम अछि, मतांतर तँ होइते हेतैक।

हम गाम सँ किएक बहरयलहुँ तकर उत्तर मे एक पांति पर्याप्त अछि; शिक्षाक संधान आ जीविकाक बाध्यता। किंतु, गाम सँ एखनहुँ जुड़ल अवश्य छी। घर अछि आ साल मे एक बेर गाम जाइत छी। किंतु, एहि हेतु प्रति वर्ष घरक मरम्मति-चूना-गेरु मे टाका खर्च होइत अछि। आमदनी कोनो नहि। खेत खरिहान अछि नहि। किंतु, जनिका पहिने खेत रहनि से गाहकि तकने घुरैत छथि। किंतु, से भिन्न गप्प भेल।

सारांश मे, गामक एखुनका परिस्थिति पहिने सँ अनेक अर्थ मे नीक अछि; भुखमरीक समस्याक निदान काफी हद धरि भ' गेलैए। कारण, लाखो लोक जीविकाले गाम छोड़ने अछि आ सरकारी सहायता सेहो भेटैत छैक। स्वास्थ्य सेवा मे पूर्णत: तँ नहि, किंतु, काफी सुधार भेलैये; टाका देनहुँ लोकक प्राण बचैत छैक। मोबाइल फोनकेर प्रसार आ फोर-लेन सड़क संचारक क्षेत्र मे क्रांतिकारी परिवर्तन थिक। शिक्षाक स्तर खराब छैक; एहि मे सुधार समाजक सर्वोपरि प्राथमिकता हेबाक चाही। शिक्षा मुक्तिक असली मार्ग थिकैक, से आब सब बुझैत अछि।

परिस्थिति मे सुधार कोना हेतैक? हमरा दृष्टिएँ एकर दुइ टा उपाय छैक।

एक, समाज मे अधिकारक प्रति जागरुकता आ अपन अधिकार पयबाक दुर्दांत आग्रह। दू, कानूनक प्रति निष्ठा। जतय कोनो विकसित देश मे जायब, आर्थिक परिस्थितिक अतिरिक्त विकासशील आ विकसित देशक बीच सब सँ पैघ अंतर एके टा देखबैक, कानूनक पालन आ कानूनी अधिकारक प्रति नागरिकक जागरुकता ओहि समाज सबहक सशक्तीकरणक आधारशिला थिकैक। जहिया सब केँ अपन अधिकार भेटि जेतैक आ अपन अधिकार मँगबा मे ककरो संकोच वा भय नहि हयतैक तहिया गाम वा शहर एक रंग भ' जायत। किंतु, एहि सभक अछैतो जँ गाम मे लोक केँ पेट भरबाक हेतु जीविकाक अवसर नहि भेटतैक, तँ, लोकक पुस्तैनी घर मे ताला लगले रहतैक, ढहैत घर-आँगन मे भाँग उपजिते रहतैक। मात्र गामक मोहे कतेक गोटे घर बनाओत आ वर्ष-वर्ष ओकर मरम्मति कराओत। ताहि पर जे पीढ़ी गाम नहि देखलक तकरा गाम सँ कोन लगाव। तेँ, गाम केँ जिआबय चाहैत छी, तँ, सफल शहरी लोकनि रिटायर्ड भेलापर गाम घूरि चलू। गाम मे घर बनाउ। स्कूल-कालेज, स्वास्थ्य व्यवस्था, आ वाणिज्य मे निवेश करू, रोजगार ताकू नहि, गाम मे रोजगारक अवसरक जोगाड़ करू आ सब सँ बेसी भ्रष्टाचार सँ लड़िकय नागरिक केँ हुनका लोकनिक अधिकार दिअयबा मे हुनक सहभागी बनू। एहि सब मे जाति-धर्म-सम्प्रदाय सभक बोध केँ मेटाबय पड़त। बड़ भारी गप्प ने? हँ, तँ, कनिएक प्रयास सँ गाम नहि जियत। कनिएक धानक बगिया नहि बनत।

मिथिलांचलक शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त अछि

अवाम 2019 : एक टा कोलाज

प्रतिवर्ष दुर्गापूजा मे अपन गाम, अवाम, यात्रा मे स्थानीय ग्रामीण सबहक आँखिक जाँच आ चिकित्सा हमर एक टा प्रमुख उद्देश्य रहैत अछि। पछिला वर्ष एहि अभियान मे पिंडारूछ सेहो गेल रही। एहि बेरुका बाढ़ि सड़क यातायात केँ बहुतो ठाम बाधित केने छैक, तेँ गामहिं छी। आइ भोर मे हमर ग्रामीण, आ महादेव पूरन टिबड़ेवाल हाइ स्कूल, झंझारपुर मे हमरा सँ दू वर्ष आगूक तहियाक छात्र आ आजुक सीनियर सिटिजन श्री मायानन्द झा हमरा ओतय आँखि देखबय आयल छथि। हम पुछिलियनि, 'गामक की हाल?

'हालत ई जे..' हमर कुर्ता-पायजामा पोशाक केँ लक्ष्य करैत कहलनि, 'गाम मे जँ एखन दसो बीघा जमीनक मालिक छी, तँ, एहन कुर्ता-पायजामा नहि पहिरि सकैत छी!'

'कारण?'

'सरकारी नीति। एखन गाम मे खेतिहर मजदूरक दिन भरिक न्यूनतम मजदूरी छैक 275/ 300 टाका। माने, सरकारी दर पर एतबा टाका मे 75 किलो चाउर-गहूम भेटैत छैक। तेँ, एक तँ एतय खेत मे जन देबाले लोक नहि छैक, आ जे अछि तकरा काज करबाक बाध्यता नहि छैक। सब बाहर चल गेल अछि।'

खेती पर आयल पराभवक हुनकर ई निदान आ तार्किकता पर मतभेद संभव। किन्तु, खेती पर पराभव छैक, ताहि पर केंद्र सरकार केँ छोड़ि, एतय सब सहमत अछि। एहि बेरुका बाढ़ि मे तँ धानक बीया सेहो डूबि गेलैक। बाढ़ि घटला धरि जँ किछु बीया बंचलो रहैक, तँ, बड्डु महग। ताहिपर आन गाम सँ बीया गाड़ी पर लादि कय आनू। ताहू मे एहि गामक सोनाक टुकड़ा—'सोनमा चौरी' एहि बाढ़ि मे चौर मे परिवर्तित भ' गेलै। नवका बड़ी लाइन पानि केँ बहय नहि देलकैक।

किन्तु, गाम परिस्थितिपर सरकारी हस्तक्षेपक सकारात्मक परिणाम सेहो भेलैये। स्व. बौकू कामति हमरा लोकनिक दरभंगा मेडिकल कालेजक दिनक सेवक छलाह,

हॉस्टलक गार्ड। हुनकर पत्नी पोखरभिंडावाली हमरा सबहक भेंट करय आयल छथि। पुछलियनि, 'राशन भेटैत अछि?'

'हँ'

'आ वृद्धावस्था पेंशन?'

'सेहो भेटैए। तीनमास पर मिस-कॉल अबैत छैक। बैंक सँ टाका लए अबैत छी।'

'केओ टाका सेहो मंगितो अछि?' 'नहि।' बाढ़िक सहायता मे सेहो सोझे सबहक खाता मे छौ-छौ हजार टाका एलैये। एक टा गौआं कहलनि, 'एहि गाम मे करीब 297 गोटेक बैंक खाता मे इंदिरा आवास योजनाक टाका एलैये।' से आनो कहलनि। लोक सब केँ गैसक कनेक्सन आ गैस चूल्हा सेहो भेटलैए। गाम मे दू टा गैस एजेंसी सेहो खूजल अछि आ गैस भेटितो छैक। ई क्रांति थिकैक! डिजिटल बैंकिंग बिचौलिया केँ दूध महक माँछी-जकाँ निकालि फेकलक अछि। सरकारी प्रयास सँ गौआं केँ सरकारी योजनाक लाभ सोझे भेटि रहल छैक, से सब मानैये। किन्तु, किछु भ्रष्ट आचरण एखनो छैक। एक टा ग्रामीण कहलनि, 'राशनक चाउर-गहूम पर डीलर एक रुपया प्रति किलो उपर सँ लैत छैक आ पंद्रह किलो अन्न मे एक किलो अन्न काटि लैत छैक। मुदा, चाउर-गहूम उत्तम रहैत छैक।' ई बड़का परिवर्तन थिक। केवल स्वास्थ्य-सेवाक दृष्टिएँ गाओं बेलल्ला अछि।

* * *

गाओं मे सार्वजनिक शिक्षा ध्वस्त अछि

नाम : स्वेता कुमारी, वर्ग दशम्। एम.पी.टी. हाइ स्कूल, झंझारपुर मे पढ़ैत छथि। पढ़बाकाल आँखि दुखाइत छनि। एम पी टी हाइ स्कूल, झंझारपुरक नाम सुनि हमरा एकाएक एहि कन्या सँ जुड़ावक अनुभव भेल; हमहूँ ओत्तहि मैट्रिक धरि पढ़ने छी।

'हेडमास्टर के छथि?'

'चुप्प!'

आँखि जंचयबाले प्रतीक्षा मे बैसलि पितामही गप्प केँ उपरे लोकि लेलनि।'की कहत! स्कूल जाइ छै? नहि पढ़ैए।' हमरा गप्प बुझबा मे आबि गेल; ई कन्या स्कूल मे नाम लिखौने मात्र छथि। पछाति एक टा हाइ स्कूल-टीचर सँ गप्प भेल। कहलनि, 'नवम आ दशम वर्ग मे कन्या सब केँ प्रतिवर्ष 1800 रुपैया स्कॉलरशिप भेटैत छैक। साल मे नैपकिन अलाउंसक 300 सौ रुपैया सेहो भेटैत छैक। ताहि ले सब केओ स्कूल मे नाम लिखौने अछि। स्कूल केओ नहि जाइत छैक।'

'तखन तँ शिक्षाक बड़ हानि होइत छैक?'

'हँ। किन्तु, सरकारी स्कूल केँ तकर कोन परबाहि। केवल सरकारी अनुदान

पर आश्रित स्कूल सब मे विद्यार्थी अबैत छैक आ पढ़ाइओ होइत छैक। कारण, ओहि सब स्कूल सँ जतबे विद्यार्थी दसवां मे उत्तीर्ण होइत छैक, ओतबे केँ नवां वर्गक वृत्ति सेहो भेटैत छैक।'

'आ विद्यार्थीक हेतु उपस्थितिक न्यूनतम प्रतिशतक बाध्यता नहि छैक?'

'ताहि हेतु ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर प्रति विद्यार्थी स्कूल सब सँ बिनु 10 टाका असूलने उपस्थिति केँ सत्यापित नहि करैत छथिन!'

अर्थात् सक्षम गार्डियन अपन नेना केँ प्राइवेट स्कूल मे पढ़बैत छथिन, आ सरकारी स्कूलक होसगर विद्यार्थी ट्यूशन पढ़ि परीक्षाक तैयारी करैत छथि। ई अन्याय थिक! नहि जानि, समाज केँ की भ' गेलैये! लगैत अछि, धन्य पहिलुका समय, नहि तँ हमरा लोकनि तँ मूर्खे रहि गेल रहितहुँ।

*　　*　　*

प्रवेश : राकेश कुमार झा, वर्ग : बी. ए., एक्स. वाई. जी. कालेज, भैरवस्थान (मधुबनी)। ई बालक संबंध मे हमर भातिज थिकाह।

'की सब पढ़ैत छी?'

'इतिहास आ सोशियोलॉजी।'

'रोज कालेज साइकिल सँ जाइत छी? बड्ड दूर छैक।'

विद्यार्थी गुम्म भ' जाइत छथि। कनेक रहि कय कहैत छथि 'हप्ता मे एक दू दिन जाइत छी।'

'आ पढ़ाइ?'

'नहि होइ छैक। .....। केवल एक दू टा विद्यार्थी अबै छैक।'

'तखन जनता कालेज, झंझारपुर मे किएक ने नाम लिखाओल? ओ तँ बड्ड पुरान छैक।'

'ओतहु पढ़ाइ नहि होइत छैक!'

हम क्षुब्ध छी! हमरा वैज्ञानिक-साहित्यकार योगेन्द्र पाठक वियोगीजी उक्ति 'बिनु जड़िक गाछ' मन पड़ि अबैत अछि; मिथिलांचलक शिक्षा 'बिनु जड़िक गाछ' थिक! किन्तु, समाजक की हेतैक!

*　　*　　*

हमर पड़ोसक दू गोट होसगर छात्रक हम गौआं 'बाबा' छियनि। ई दुनू बालक झंझारपुर मे एक टा प्राइवेट स्कूल मे पढ़ैत छथि। एहिबेर सनेस मे हिनका लोकनिले हम वैज्ञानिक-साहित्यकार योगेन्द्र पाठक वियोगीजीक पोथी 'विज्ञानक बतकही' क दुनू खण्ड अनने छियनि। किन्तु, अंग्रेजी माध्यम स्कूल मे पढ़निहार ई बालक लोकनि ने एकरा सरि भए कय पढ़ि सकताह आ ने विषय केँ बूझि सकताह, ताहि पर तँ

हमर ध्यानो नहि गेल। लगैत अछि, मिथिलांचल मे आब मातृभाषा मे शिक्षा असंभव छैक। तैँ, एतहु बिनु जड़िक गाछ–मैथिली मे घुन लगैत प्रतीत भेल। जँ सरकार मैथिली मे प्राथमिक शिक्षा आरम्भो केलक तँ गार्डियन लोकनि अंग्रेजी माध्यम छोड़ि अपन–अपन छात्र केँ मैथिली माध्यम मे पढ़य देथिन, कि नहि से बड़का प्रश्न थिक!

* * *

किन्तु, सुनबा मे आयल गाम सब मे किछु आओर नव–नव परिवर्तन भेलैये। एहि मे दू टा प्रमुख : एक तँ मरल माल–जाल केँ उठओनिहार आब केओ नहि आ ने मरल पशु केँ कतहु फेकबाक स्थान बँचल छैक। तैँ, अपन मरल माल केँ अपने उठबाउ आ अपने खेत मे खाधि खुनि ओकरा गाड़ू। दोसर, गाय पोसब तँ पोसू। किन्तु, बाछा भेल, तँ, तकर कोनो मोल नहि! हम एक गोटे केँ पुछलियनि, 'तखन बच्छा लए कए की करब?'

'बुद्धि–बधिया करू!'

एकर अर्थ अहाँ स्वयं निकालू। हमरा मारि खेबाक अछि!

हमर गाम-अवाम, आ आम

हमर गाम- अवाम गामक नाम अवाम किएक पड़लैक से कहब मोसकिल। किन्तु, एहि तीन अक्षरक शब्दम सँ जँ 'व' हंटा दिऐक तँ 'आम' बँचतैक। आम माने फलक राजा। सत्यत:, जँ अवाम गामक नाम आमक गाम रहितैक तँ कोनो बेजाय नहि। तकर कारणो छैक; हमरा लोकनिक ज्ञान-प्राण मे जेमहर देखिऐक सर्वत्र गाछीए आ कलम-बाग। बस्तीक नाम पर घोदा-माली घर केर छोट-छोट टोल आ चारू कात आमक बाग। अवाम गाम मे जतय बस्ती आ गाछी कलम नहि रहैक, ततय पोखरि सब रहैक। बस्तीक उत्तर नासी रहैक। नासी माने, नदीक छाड़न वा वाहा, जकर संपर्क कमलाक मुख्य धार सँ कटि गेल होइक। बरसात मे इएह नासी पानि सँ भरि जाइत छलैक आ पछाति, ऋतुक अनुकूल नासी अजस्र भेंटक फूलक सरोवर, माछक आ धानक श्रोत भए जाइत छल। सत्यत:, जँ, अवाम कोनो राजाक गढ़ होइतनि, तँ, राजा केँ उत्तर भर सीमाक चिन्ता किछु कम अवश्य होइतनि! मुदा, एखन अवामक आमक गप्प करी।

पछिला शताब्दीक मध्य मे अवाम मे आमक जे गाछी, कलम आ नरै रहैक, ताहि मे सँ कोनो, गाछक आकार-प्रकारक अनुमान सँ, सौ सालसँ कम आयुक कदाचिते छलैक। हमरा लोकनिक माता-पिताओक जीवन काल मे रोपल गाछी कलम सेहो थोड़े रहैक। जतय गाछी-कलमक गाछ कटि गेल रहैक लोक नव गाछ रोपैत छल। ओना गाछी-कलमकेर नाम किछु भू-स्वामीक नाम पर रहनि, तँ, किछु केँ लोक रखबारक नाम सँ चिन्हैत छल। किन्तु, हमरा गामक सबसँ विशाल, आमक बगीचा छल, बड़की नरै। ताहि सँ छोट, किन्तु,चारि सौ गाछक कलम छल, किशोरी झाक कलम, जे एखन धरि बंचल तँ अछि, किन्तु, जमीनपर जनसंख्याक दवाबक कारण आम गाछक नीचा मालिक लोकनि जजात उपजबैत छथि। एहि सँ आमक फड़ब पर की असरि पड़लैक अछि, से कहब कठिन। आन पैघ कलम-गाछी सब मे छल—इंद्रनाथ बाबूक कलम, बौअन ठाकुरक बीजू आ छोट सब मे ठेंगी झा गाछी, आदि। कटलाहा गाछी भोली बाबू गाछी, आ बोनहीगाछी- तहियाक श्मसान-निरंतर

कटैत आ विलुप्त होइत गाछी सबहक इतिहास आ साक्षी छल जाहि मे गाछ तँ रहैक नहि, किन्तु, ओतुका खेतीक नाम गाछीक नाम केँ जोगाकय रखने छल। किन्तु, एहि सब नामित बगीचाक अतिरिक्त अनेक पैघ-पैघ अनामा गाछी-कलम गाओं के बड़का आम्रकुञ्जक बीचक बस्तीक पर्याय बनाकय रखने छल।

अब अवाम गामक गाछी-कलम-नरैक आमक गप्प करी। गाछी-कलम मे कलमी आ सरही दुनू आमक गाछ रहैक। बम्मै, सपेता, जर्दालू, कृष्णभोग, लडुब्बा, कलकतिया मिथिलाक प्रचलित आम थिक, जाहि मे सँ जँ किछु केर नाम वर्ण पर- सपेता सफेदाक अपभ्रंश छल, तँ किछु स्थान सँ जुड़ल, जेना बम्मै, कलकतिया, किछु मनुष्यक नाम सँ, जेना, कृष्णभोग आ फजली, आ किछुक नाम आकार पर आधारित छल, जेना, लडुब्बा आ सजमनिया। तथापि, कलमी आम मे संख्या मे आ लोकप्रियता मे सपेता आ कलकतियाक गाछ बेसी रहैक। सपेता अत्यंत मधुर, गुदगर, पातर खोंइचा आ सोन (fibre) सँ मुक्त। कलकतिया रंग मे गाढ़ हरियर, आकार मे पाँच इंच धरि आ स्वाद मे बेस, अर्थात् साधारण। मुदा, कलकतियाक गुण ई जे कलकतियाक गाछ प्रतिवर्ष थोड़बो फड़बे करत। आन आमक गाछ मे तकर गारंटी नहि। तेँ, जनिका गाछ लगेबाक भूमिक अभाव होइनि से बेसी कलकतिया रोपथि आ 'पाल परहक कलकतिया सपेताक बाप होइछ'* से कहि अनका चुप करथि। ओना,जँ पानि-बिहाड़िक प्रकोप केँ छोड़िओ दी तँ आमक नीक फसल साधारणतया प्रत्येक तेसरे वर्ष पर देखल जाइछ। अवाम गाम मे जर्दालूक गाछ कम रहैक। बेतिया इलाकाक विशिष्ट आम जर्दा एकदम नहि। तथापि, सुपरिचित आमक अलावा किछु गोटे आवेशें अपन गाछी-कलम मे कतिकी, दोफसिला, राढ़ि, चौरबी- काँचे मे मधुर स्वादबला, गुलाबखाश, हाफुस-प्राय: अलफोंसो सेहो लगौने रहथि। मुदा, जहाँ धरि मन पड़ैत अछि हमर गाम मे सिपिया आ शुकुल-सन अंत मे पकैबला आम कतहु नहि रहैक। तथापि, ई सब कलमी- grafted – आम भेल। मुदा, हमरा अनुमान अछि अवाम मे कलमी सँ बेसी सरहीए वा बीजू, अर्थात् बीज वा आंठी सँ जनमल,आमक गाछ बगीचा-अनुपात मे बेसी रहैक। कारण, बूझब असंभव नहि। कलमी आम लगेबा ले आमक कलम कीनू। आ सरही ले तकर आवश्यकता नहि, जे आम पसिन्न पड़ल तकर आंठी रोपि दिऔक। सरही आम वर्ण संकर भेलाक कारण काफी pest-resistant होइत छैक आ फड़ैत बेसी छैक। स्वाद मे सेहो विविधता। तकर चर्चा पुन: हयत।

एहि सबहक बावजूद धनिक सँ गरीब धरि जकरा जतबे भूमि रहनि, दसो

---

* हमर स्वर्गीय अग्रज उदयनाथ झाक अनुसार ई उक्ति स्व. डाक्टर सुभद्र झाक थिकनि।

गाछ नवगछुली अवश्य रोपैत रहथि। भूमि नहि रहैक तँ बास भूमिए मे, घरक आगूए-पाछू गौआं लोकनि गाछ रोपथि, जेना, बंगाल आ दक्षिण भारत मे लोक नारिकेर लगबैत अछि। हमर माता कहथि, 'गाछ लगयबा केँ लोक धर्म बूझैत छल; खास कय आमक गाछ रोपब केँ'। कहथिन, 'वर्षा-ऋतु मे अपन लगाओल गाछक पात पर सँ खसैत पानिक बुन्न, रोपनिहार केँ स्वर्ग मे मधुक रूप मे भेटैत छनि! तेँ, जखन भगवान दत्त** बाबूक बीजू रोपल जाइत रहनि, तँ हुनकर परिवारक बौआसिन लोकनि कहार-सवारी पर चढ़ि कय गाछी धरि आबथि आ खूनल दरी (गड्ढा) मे कनरी (माटि सहित) काटल गाछ द' कय आपस जाथि'.हमरा जनैत,प्राय: उपादेयताक कारण, गाछ रोपब केँ आमक गाछ रोपब सँ, आ प्रकृति-प्रेमक कारण, समाज गाछ रोपब केँ धर्म-पुण्य सँ जोड़ि देने रहैक। आखिर तकर आवश्यकताओ रहैक। जाहि युग मे जतय लोक केँ नगदी आमदनी कम रहैक, लोक जे उपजबैत छल, सएह खाइत छल। सब आदिम समाजहुँ मे इएह गति रहैक। तेँ, देहाती जीवन मे जखन परिवारक समृद्धिक लेखा-जोखा होइत रहैक तँ लोक डीह-डाबर, खेत-पथारक संग गाछी-कलम, बाँस-खड़होरि, जलकर आ पोखरिक गणना अवश्य करथि। कारण, गुजर-बसर ले जे किछु चाही, से वस्तु जतेक कम किनय पड़य, परिवार ओतेक समृद्ध भेल। सतत् (sustainable) अस्तित्व ले ई आवश्यको।

आब आमक स्वादक गप्प करी। भिन्न-भिन्न आमक स्वाद जँ बुझबाक, बुझयबाक एकेटा तरीका छैक—आम गुदगर होइक तँ आमक कतरा मुँह मे दिऔक, आ रसगर होइक तँ मारू चोभा! विश्वास नहि हो तँ आम मे चोभा लगबैत नेनाक मुँह पर संतुष्टि देखिऔक। ओना जतेक आम, ततेक स्वाद। समान नामक कलमी आमक आकार, रंग आ स्वाद मे लगभग सबतरि एकरूपता होइछ। ओना गाछ पुरान भेला सँ वा गाछक जड़ि मे बरसात मे पानि जमा भेला सँ आम मे सोन (fibre) भ' जायब स्वाभाविक बूझल जाइछ। तथापि, किछु स्वाद परिचित आ वर्णन योग्य होइछ, जेना, सुरसुरहा- खयला सँ कंठ मे सुरसुरी लागत; धुमनाहा, माने धूमनक सुगंधिबला। मुदा, ई सब नाम सरही और बीजूए आम ले प्रयुक्त होइत छल। असल मे जेना पहिने कहने छी, स्वादक आ नामक विविधता बीजूए मे भेटत। कारण, स्वाद जँ वर्णसंकरताक कारण, जेनेटिक संरचना, आ प्रकृति—जलवायु-निर्धारित करैछ, तँ नाम मनुष्यक कल्पना, आमक आकार, स्वाद, रंग आ पकबाक मासक सहयोग सँ देल जाइछ। उदाहरणक हेतु आकारक अनुसार नाम—सजमनिया, केरबी (केरा

** भगवान दत्त झा, अवाम, दरभंगाक अंतिम महाराज सर कामेश्वर सिंहक माम लोकनि मे सँ एक रहथिन।

–सन); बरबरिया–सुपड़िया आकार मे छोट; रंग सँ सिनुरिया, पीरी–पियर; स्वाद पर मिश्री भोग, पकबाक मास पर भदैबा,आदि। एकर अतिरिक्त आमक नाम मे नारायण भोग, आ हृदयजुड़ओना सेहो सुनबैक। संभव छैक बड़का बाग सब मे कोन परहक गाछ कोनैला, दू टा मुख्य शाखा बला वृक्ष दूफेंडा सदृश आ किछु अनामा फल सेहो अभरय। ओना समाज मे प्रचलित धारणा रहैक जे मनुष्यक, आमक, धानक, आ गामक नामक गणना नहि भ' सकैछ।

संयोग सँ हमरा लोकनिक जीवन काल मे जनसंख्या आ खेत–खरिहानक बंटवाराक असरि गाछी–कलम आ बगीचा पर सेहो पड़लैए। ई सर्वविदित अछि। एहि मे बंटवाराक अतिरिक्त गाछक काटब आ रोपब मे कमीक योगदान तँ छैके, एहि सब मे गाम सँ युवा वर्गक पलायनक योगदान सेहो छैक। कारण, मनुखे–जकाँ गाछ–वृक्ष केँ सेहो सेवा आ देखभाल चाहियैक। यद्यपि, ई सत्य थिक, आमक गाछ एकबेर पैघ भेलापर बेसी सेवाक मांग नहि करैछ। तथापि, एखनुक युग मे देहात मे बहुतो फड़ैत गाछ कीड़ा–गड़ाड़सँ, आ दिबाड़ (दीमक) क कारण सुखा रहल अछि, से हमर अपन अनुभव कहैत अछि। तैँ, देखभाल चाहबो करी। मुदा, जखन आब नेना–भुटका आ युवक वर्ग आमक उपभोग धरि ले गाम नहि आबि पबैत अछि, तेहना स्थिति मे गाछी–कलमक सेवाले समय निकालब तँ असंभवे। तैँ, परिस्थितिवश गाम आ गाछी–कलम सँ लोकक अपनापन थोड़ भेलैये। पहिलुक युग मे नेना–भुटका आ चेतन आम पकबाक मासक प्रतीक्षा तँ करिते छल, आम सँ संबंधित पूरा ऋतुक अनेक गतिविधि आमक गाछ पर टिकुला अबिते आरंभ भ' जाइत रहैक। जँ चटनी ले लोक टिकुला बिछैत छल तँ महिला लोकनि कांच आमक आमिल–अचार–खटमिट्ठी बनबैत छलीह। एखनो ओहि विन्यासक जँ अलग इतिहास आ वर्तमान छैक, तँ आमक गाछी मे कांच–पाकल आम बिछबाक, आ चोराकय आम बिछबाक रोमांच, आ गाछ सँ लटकैत झूलापर झुलबाक धीयापुताक आनंद हमर पीढ़ीक अनेको व्यक्तिक हेतु बाल्यकालक स्मरणक मधुर धरोहर थिक। ततबे नहि,आमक गाछी, रखबारक मचान,बगबारक खोपड़ी कतेको ऐतिहासिक संबंध, बाल–मनक गोपनीय आनंदक साक्षी बनैत छल, नहि तँ 'आम खयबाक मुँह' आ 'आमक जलखरी'–सन पोथीक रचना कोना होइत। मुदा, एखनो गाछी–कलम तँ छैके, लोक आम खाइतो अछि। तथापि,प्राय:गामक आमक बेसी खपत गाम सँ बाहरे होइछ। हमरो लोकनि केँ खयबा जोकर जे गाछ अछि, मन नहि पड़ैत अछि कहिया खेने रही।

आब तँ मिथिला सँ बाहर रहयबला परवर्ती मैथिलपीढ़ी केँ मिथिलाक आमक विविधताक संस्कृति सँ जोड़ब एक टा कठिन काज थिक। भए सकैत अछि, गाम सब मे सुधरैत आधारभूत संरचना, शिक्षा आ स्वास्थ्यक सुविधा मे सुधार, यातायातक

सुविधा, आ शहरी जीवनक कष्टक कारण फेर लोक गाम दिस आबय आ परिस्थिति बदलैक। किन्तु, निकट भविष्य मे एकर आशा कम। संभव इहो छैक, उत्तरप्रदेश आ आन राज्य-जकाँ पैघ बगीचाबला किसान जँ आमक गाछी-कलम मे फार्म हाउस-सन सुविधाक व्यवस्था करथि, आ मैंगो-टूरिज्मक विकास हो तँ स्थिति बदलय। एहि सँ आर्थिक लाभक आशा तँ छैक, किन्तु,बिना सोच आ आर्थिक निवेश के ई असंभव। एखन तँ एहिना प्रतीत होइत अछि, रॉकेटक गति सँ उड़इत मनुष्यक जीवन मे क्षण भरि बिलमि कय जीवनक सुलभ आनंदक उपभोग ले समय कतय! तेँ, हमरा अपन गाम अवामक आम मन पड़ैत अछि आ एकरा हम लीखि लेल। मिथिलाक आम पर किछु लिखबाक प्रेरणा हमरा स्व. मिहिर कुमार झा, जे स्वतंत्र भारत मे पहिल मैथिल आइ.पी. एस. अफसर, आ हमर श्वसुर डा. शंकर कुमार झाक जेठ भाइ रहथि, सँ भेटल छल। तेँ, ई संस्मरण हुनक प्रति हमर श्रद्धांजलि थिक।

ज्ञातव्य थिक, सदा सँ मिथिलाक जलवायु आमक हेतु अनुकूल अछि। इतिहास विदित अछि, मुगल बादशाह अकबर दरभंगा इलाका मे एक लाख आम गाछक 'लाख बाग' लगबओने रहथि। इहो विदित अछि, आमक बागवानी पुर्तगाली लोकनि भारतहिं सँ दक्षिण अमेरिका, आ मुगल लोकनि पर्सिया धरि ल' गेल छलाह।

गुरुवर स्व. जीव नारायण दास

सनातन काल सँ गुरुक महिमा मे बहुत किछु कहल गेल छैक। सारांश जे मनुष्य केँ आँखि स्वत: भेटैत छैक, किन्तु दृष्टि गुरु दैत छथिन। हमरा लोकनिक बाल्यकाल मे जखन शिक्षा बेच-बिकिनक वस्तु नहि रहैक, समाज मे कुशल गुरुक बड़ सम्मान होइनि। हमरा लोकनिक दलानपर कोनो शिक्षकक डेरा नहि रहनि। हमरा लोकनिकेँ ट्यूशन पढ़बाक ने उपाय छल आ ने ट्यूशन पढ़ब केँ नीक बूझल जाइत छलैक, तेँ, हमरा लोकनि पूर्णतया स्कूलक शिक्षकपर निर्भर रहैत छलहुँ। तेँ, जे किछु सीखल, जे किछु गुनल सब टा गुरुएक देन थिक। स्कूली शिक्षाक एगारह वर्ष मे कतेको शिक्षक भेटलाह। सब सँ किछु ने किछु सिखलहुँ। किन्तु, कांच वयस आ जिज्ञासु मन:स्थिति मे जे शिक्षक विद्यार्थी मे जिज्ञासा जगेबा मे सफल होइत छथि आ विद्यार्थीक जिज्ञासाक समाधान करैत छथि, ओएह शिक्षक छात्रक आदरक पात्र होइत छथि। एहन शिक्षक केँ छात्र कोना बिसरि सकत। गुरुवर जीव नारायण दास एक टा एहने व्यक्तित्व छलाह।

1967 ईसवी मे जहिया हम महादेव-पूरण टिबड़ेवाल उच्च माध्यमिक विद्यालय, झंझारपुर मे आठवां वर्ग मे नाम लिखओने रही, सिमरा निवासी स्व. जीव नारायण दास ओतय प्रधानाध्यापक रहथि। कद आ बान्ह मे मध्यम, रंग मे पिण्डश्याम,व्यवहार मे अनुशासित आ मृदुभाषी, हेड-मास्टर साहेब सबहक प्रिय रहथि। विद्यार्थी सब केँ नेना जकाँ बुझथिन आ पढ़यबा मे सबहक सुधि रहनि। अंग्रेजी साहित्यक गहन अध्ययन रहनि आ मैथिली मे लिखबाक रुचि रहनि। रामनारायण शास्त्री केर लिखल पुस्तक 'भक्त आओर भगवान' केर मैथिली अनुवाद (जीव नारायण दासक) हमरा लग एखनहुँ अछि। हेड मास्टर साहेबक पछाति आओर किछु प्रकाशित भेलनि कि नहि, से बूझल नहि। हेड मास्टर साहेब हमरा लोकनि केँ अंग्रेजी आ मैथिली साहित्य पढ़ाबथि। साहित्य पढ़बैत-पढ़बैत ओ अनायास बाइबिल आ शेक्सपियरक धरि पहुँचि जाथि। देहातक स्कूल मे तहिया कुशल शिक्षक भेटब कठिन रहैक। मुदा, हमरा लोकनिक स्कूल ओहि मामला मे भाग्यशाली छल। जीव नारायण दासक संग

पंडित बनखंडी मिश्र, मदनेश्वर ठाकुर आ महेश्वर सिंह-सन कुशल शिक्षक लोकनि रहथि। हुनके लोकनिक छत्र-छाया मे टिबड़ेवाल स्कूल शिक्षाक क्षेत्र मे सम्पूर्ण इलाका मे सुपरिचित छल।

मुदा, हमरा जीव नारायण दास किएक मन पड़ैत छथि? हमरा जनैत ओकर एके टा कारण छैक : मास्टर-साहेबक जीवने हमरा लोकनि ले आदर्श जीवन पद्धति उदाहरण छल। जे सिखाबथि, सएह करथि। कहब आ करब मे कनेको भेद नहि। मास्टर साहेबक इएह गुण स्कूल छोड़लाक आधा शताब्दीक बाद हमर स्मृति मास्टर साहेब केँ अमर बनौने छनि। हाल मे हमर एक टा कश्मीरी सहकर्मी डा. मदन मोहन एक टा दोहा सुनौलनि :

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ काढ़ै खोट,
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।

हमर हेडमास्टर साहेब, गुरुवर जीव नारायण दासजी, एहने कुम्हार छलाह। सादर नमन।

लंगूर नहितन!

एखनुक युग मे लोक जतेक लेख फेसबुक आ व्हाट्सएप्प पर पढ़ैत अछि पहिलुक युग मे ओतेक जँ शास्त्र पढ़ैत तँ विश्वभरि मे विद्वान आ पंडित लोकनिक बाढ़ि आबि जाइत। दोसर संभावना इहो जे सूचनाक एहन बाढ़ि मे सत्य आ असत्यक भेद करब ओतबे कठिन जतेक समुद्रक पानि मे सँ गंगा-गोदावरीक पानि केँ फुटकायब।

पहिने लोक कहैक, 'केओ कहत कौआ कान ल' कय उड़ि गेल, तँ पहिने अपन कान हंसोथब, कि कौआक पाछू भागब?' मुदा एखन ओहो तर्क बेकार। एक टा टटका उदहारण देखियौक: एक दिन केओ व्हाट्सएप्प पर घोषणा केलनि, 'यूनाइटेड अरब अमीरातक सरकार माफिया सरगना दाउद इब्राहीमक 1500 करोड़ रुपैयाक संपत्ति जब्त केलक।'

दोसर दिन दोसर गोटे बजलाह, 'फलां पार्टीक प्रवक्ता एना कहने छलाह ...'

तेसर दिन ओही पार्टीक प्रवक्ताक घोषणा केलनि, 'दबंग नेताक हाथ मे जँ देशक शासन रहत, तँ, अपराधी लोकनिक इएह हाल हयत।'

चारिम दिन जाधरि आन कोनो स्पष्टीकरण आओत ई मिथ्या, पार्टीक उपलब्धि मे परिगणित भ' गेल। पाँचम दिन जाधरि यूनाइटेड अरब अमीरात सरकारक खंडन आयल, नव समाचारक बाढ़ि मे ईहो खबरि भसिया गेल। ई भेलैक post-truth. माने, सत्यक संधान के करय। मुदा, सामान्य पाठक वा जनता की करय? अहाँ केँ मोन हो तँ सुनू, गुनू आ मोन हो तँ मानू! मुदा, सत्य आ फूसिक ई घोर-मट्ठा बाढ़ि बहिते रहत। तथापि, सूचनाक एहि घोर-मट्ठा मे सत्यकेर संधान सम्भव छैक। किन्तु, ई काज छैक श्रमसाध्य, भयावह, आ पुरस्कार-विहीन।

सत्य पूछी तँ, सूचनाक अधिकारक अधिनियम अयलाक बाद, कतेक गोटे केँ, जे तत्कालीन व्यवस्था सँ हताश छलाह, लगलनि जेना देश मे स्वतंत्रताक दोसर भोर भेलैए। किन्तु, दिनुका इजोत मे चोर सब हठात् बिला तँ नहि गेल। असल मे सशंकितो नहि भेल। बल्कि, जतय जेना जे चलैत छलैक, चलिते रहल। तकर कारणो छैक। होइत अपराध केँ देखि कतेक गोटे अपराधीक हाथ केँ रोकबाक साहस करै-

ए? हत्याक प्रत्यक्षदर्शी कतेक बेर गवाही देबय चाहैत अछि? के जायत कोर्ट-कचहरी? के मोल लेत दुश्मनी? अस्तु, गाँधीजीक बानर सब जकाँ ने अनुचित देखी, ने सुनी, ने बाजी। ई भेल एक टा नैतिक आ दार्शनिक पक्ष। मुदा, व्यावहारिक पक्ष दोसर छैक। अनुचित होइत देखि बाजब, तँ, जीह झीकि लेत। गवाही देबय जायब तँ जानक गाहकि भए जायत। तखन, कल-कुशल आन्हर, बौक, बहिर भेल पड़ल रहू। समाज मे अधिकतर लोक सएह करैत अछि। हमरो लोकनि सएह करैत छी। तथापि, किछु गोटे हिम्मत करैत छथि, Post-truth केँ खिहारबाक, असत्य केँ तकबाक, फूसि केँ नंगरयबाक। एहि काज मे खतरा खूब छैक। किन्तु, सत्यकेर संधान मे जकरा रोमांचक अनुभव होइत छैक, से ओ खतरा मोल लैत अछि, मरितो अछि। मुदा, सरकार बहादुर एक टा आओर सुधार करबाक नेआर मे अछि। माने, सत्यक संधान करैत सत्यार्थी जँ सरकारी जवाब पयबा सँ पहिनहि मरि गेलाह, तँ प्रश्नोत्तर देबाक काजे नहि। माने, सत्यार्थीक अन्त्येष्टिक संग सत्यकेर अन्त्येष्टि सेहो भ' गेल। मुदा, सत्य पूछी तँ सत्यकेर खोजक आवश्यकता छैक। असल मे, सरकारी विभाग, गैर-सरकारी प्रतिष्ठान, आ स्वयंसेवी संस्था, सब केओ अपन-अपन लक्ष्य लए कय चलैत अछि। सब अपन-अपन उपलब्धि सँ गौरवान्वित होइत अछि, आ अपन उपलब्धिक प्रचार करैत अछि। मुदा, प्रचारित उपलब्धि मे सँ कएक टा प्रचार थिकैक, आ कोन सत्य, तकर परीक्षा सँ समाजक उपकार तँ अवश्य हेतैक। सत्य आ आंकड़ाक बीचक खाधिक एक टा उदाहरण लिअय; जिला अंधता निवारण समितिक लक्ष्य आ उपलब्धि। जिला अंधता निवारण समितिक तत्वावधान मे प्रतिवर्ष जिला मे मोतियाविंदुक हजारो ऑपरेशन होइत अछि, से मानि कय चलैत छी। केन्द्र सरकार लाखो रुपैया खर्च करैत अछि। तमिलनाडु मे हमरा लोकनि-सन दर्जनो गैर-सरकारी स्वयंसेवी संस्था एहि अभियानक अन्तर्गत अपन क्षमताक अनुकूल गामे-गाम आँखि जाँचक शिविर लगबैत अछि, ऑपरेशनक योग्य रोगी सबहक चुनाव क' कय अपन गाड़ी मे अपन-अपन मुख्यालय स्थित अस्पताल धरि अनैत अछि आ रोगी सबहक आँखिक ऑपरेशन कइ कय दवाइ-चश्मा सहित द' कय रोगी सब केँ अपन गाड़ी सँ घर धरि पहुँचा अबैत अछि। मुदा, अपना गाम मे (दरभंगा,जिला) हमरा एखन धरि एहन केओ नहि भेटलाह अछि जे कहथि जे सरकार हमर आँखिक मुफ्त ऑपरेशन करओने अछि। मुदा, हमरा नहि विश्वास अछि एहि अभियानक अन्तर्गत बिहार सरकार केन्द्र सँ टाका नहि पबैत अछि। अत:,एतय आंकड़ा आ सत्य केँ दू पलड़ापर राखि भजारबाक आवश्यकता छैक। मुदा, करत के? सरकार तँ एहि ऑडिट केँ आर्थिक मदद नहि देतैक! ई भेल आम सरकारी विभागक उपलब्धिक लेखा-जोखा।

आब एक टा एहन विभागक उपलब्धिक गप्प करी जे सामान्य अर्थ मे उत्पादक नहि बूझल जाइछ। ई विभाग थिक सशस्त्र-सेना। एहि बीच सेनाक उपलब्धि— सर्जिकल स्ट्राइकक खूब प्रचार भेल। सैन्य अभियानक नायक लोकनिक फोटो देखार भेल। हेबनि केर चुनाव मे सरकार, सेना, आ शासक पार्टीक आरि-धूर केँ तोड़इत सेनाक उपलब्धिक केँ पार्टीक उपलब्धिक रूप मे खूब प्रचार भेल। सत्यत:, जनिका सेनाक कार्य-पद्धतिक कनेको अनुभव छनि ओ लोकनि सीमा क्षेत्र मे तैनात सैनिक दिनचर्या जनैत छथि। सीमा क्षेत्र मे प्रतिद्वंद्वी सेना एक दोसराक गतिविधि पर निरंतर नजरि रखैछ, आ दिन-प्रतिदिन आक्रमणक तैयारी आ प्रतिकार दुनू ले प्रस्तुत रहैछ। मुदा, प्रचार सेनाक संस्कृतिक विरुद्ध थिकैक। युद्ध मे सेनाक विजय आ पराजय दुनू राष्ट्र आ जनताक थिकैक। मुदा, बाँहि तँ सरकारे पुजबैत आयल अछि। किन्तु, सेनाक दिन-प्रतिदिनक गतिविधिक वाहवाही लूटब नव थिकैक। आ एकर ऑडिट के करत! जँ केओ सत्यार्थी प्रश्न पूछलखिन तँ ओ भेलाह देश-द्रोही। आ देश-द्रोहक सजाय फांसी थिकैक! ताहि मे लगतैक श्रम आ समय। तँ, टीवीक अखाड़ापर दंगल केनिहार खलीफा लोकनि सत्यार्थी लोकनि केँ ततेक ने पटका देथिन जे सत्यार्थी सन्ना भए जाइत छथि। मुदा, टीवीक खलीफा सब डब्लू-डब्लू-ई (World Wrestling Entertainment) केर पहलवान-जकाँ दंगल खेलाकय घाड़ा-जोड़ी केने हंसैत-खेलैत अपन-अपन घर जाइत छथि। काल्हि फेर भोर हेतैक। फेर ओतैक कोनो समाचार आ साँझुक पहर फेर हेतैक हवाई दंगल, चिकरा-चिकरी, आरोप-प्रत्यारोप। देश मंगतैक जवाब आ जनता अवाक् भेल मुँह तकैत रहत। जा! सब टा गप्प तँ दिल्लीए लूटि लेलक। पटना धरि केर चर्चा नहि भेलैक। तखन, दरभंगा-मधुबनी आ गाम के आओत?

आब एक टा आओर दोसर गप्प कहै छी सोशल मीडियाक उत्कर्षक एहि युग मे एक टा आओर चमत्कार भेलैए। भोर-सांझ नव-नव अनुसन्धान! कला, इतिहास, भूगोलक गप्प तँ छोड़ू, विज्ञानहुँक क्षेत्र मे ई सब ततेक सफल सिद्ध भेल अछि जे आब फेक-न्यूज (मिथ्या-समाचार) केर पंजीकृत वेबसाइट धरि उठि बैसल अछि। पढ़ू फेक आविष्कार। मुदा, समाचार केँ पढ़बा सँ आ सत्य बुझबा सँ पहिनहि समाचार केँ शेयर करू, परिवार-दोस्त-मित्र केँ चारू कात पठाउ जाहि सँ बुझबा जोग होइक जे फलां भाइ, फलां काका जीविते छथि, व्हाट्सएप्प पर! भले, गप्प पढ़ि लोक सोचय, what an ape ! माने, लंगूर नहितन!

आरम्भ मे हमहूँ बनलहुँ व्हाट्सएप्पी। किन्तु, भरि दिन प्रत्येक मैसेजक संग टुंग! टुंग!! टुंग!!!, सुनि दौड़ू। चट सँ फोन उठाउ, पट सँ मेसेज पढ़ू। 400 गुड मोर्निंग, चालीस टा बासि व्यंग आ दर्जनो विडियो-गीत सँ ल' कय रामदेवक योग,

बाबा लोकनिक भोग, नव नव इतिहासकारक विद्वतापूर्ण आविष्कार, आ भाषण। जँ , व्हाट्सएप्प खोलल आ नीक जकाँ पढ़य लगलहु तँ भरिओ दिन जँ ओएह टा पढ़ैत रहलहुँ तँ आन कोनो काज करबाक समय नहि भेटत। जँ, पढ़िते-पढ़िते सीढ़ी उतरलहुँ तँ हाथ पयर टूटत। पढ़ैत-पढ़ैत रोड पार कयल तँ प्राण अपटी खेतमे। मुदा, ओ तँ भेल एक टा गप्प भेल। एक टा आओर समस्या। निरंतर अबैत सूचनाक (!) एहि बाढ़ि मे टेलीफोन रिचार्जक सब टा बैलेंस एकाएक तेना भासि जाइछ जेना बिहाड़ि अयला पर जोड़ल जोगाओल सब किछु अकस्मात् बसातक संग उड़ि जाइछ। किन्तु, एक टा गप्प छैक। हमर टाका बोहाइत हो, तँ, बोहाओ! टेलीफोन कम्पनी तँ बम-बम करैये! देशक आर्थिक व्यवस्था निरंतर सुदृढ़ भए रहल अछि!! हँ, अहाँक पड़ोसी मरलाह वा जीलाह ताहि सँ अहाँ केँ की? अहाँ व्हाट्सएपक परमानन्द मे लागल रहू!

फेसबुक फिजिशियन

इन्टरनेट ज्ञानक अथाह सागर थिक। हाथ मे मोबाइल फोन लेने वा आँखिक आगाँ कम्प्यूटर खोलने मनुक्ख अपन इच्छाक अनुकूल एहि समुद्रक कछेरपर ठाढ़ अछि, समुद्रक ऊपर हेलि रहल अछि, वा मूंगा-मोती-मणिक अन्वेषण मे समुद्र-तल पर गोंता लगा रहल अछि। अर्थात्, यदि कम्प्यूटर सँ परिचित छी, ओकर उपयोग कए सकैत छी, तँ, संसार भरिक ज्ञान अहाँक चुटकी मे अछि, तरहत्थीपर अछि : अहाँ आदि शंकर-जकाँ हस्तामलक छी : तरहत्थीपर राखल आंवला-जकाँ संसार केँ चारू दिस सँ देखि सकैत छी। तथापि, इन्टरनेटक उपलब्धता सँ जहिना ज्ञान प्राप्त करब सुलभ भ' गेलैये, तहिना इन्टरनेटक माध्यम सँ जानि बूझिकय वा अंजान मे असत्य केँ बांटब वा प्रचारित करब अत्यधिक सुलभ भए गेलैये। संयोग सँ एखन इन्टरनेट पर उपलब्ध सूचना केँ, बिनु जंचने, पोथी मे प्रकाशित ज्ञान-जकाँ प्रामाणिकताक दर्जा भेटि रहल छैक। फलत:, हाल मे इन्टरनेट आ सोशल मीडिया सँ जुड़ल आ ओतय उपलब्ध ज्ञान/ अज्ञानक माध्यम सँ अपन आ अनकर रोगक तर्क विहीन चिकित्सा कयनिहार नागरिक लोकनिक एक टा पैघ समूह उत्पन्न भेलैए। फेसबुक, व्हाट्सएप्प-सदृश आओर एहन सोशल-मीडिया एहि आधा-छिधा जानकारीक प्रमुख श्रोत थिक। एहि मीडिया सबपर उपलब्ध जानकारी सँ अपन आ अनकर चिकित्सा कयनिहार एहि self-styled डाक्टरक समुदाय केँ हम फेसबुक फिजिशियन कहैत छियनि। एतय ई बूझब आवश्यक, जे, इन्टरनेटपर चिकित्सा संबंधी, शास्त्र-सम्मत ज्ञानक अनुसार अपन चिकित्सा कयनिहार फेसबुक फिजिशियन नहि थिकाह। एहि लेख मे फेसबुक फिजिशियन पर संक्षिप्त चर्चा करी।

इन्टरनेटपर उपलब्ध ज्ञान वरदान थिक। नहि, तँ हैदराबाद मे घर बैसल छात्र हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा चलाओल कोर्स मे कोना हिस्सा लितथि। तेँ, इन्टरनेट एक टा leveller थिक -इन्टरनेट सँ ज्ञान प्राप्त करबा मे सब समान अछि। एहि दृष्टिएँ फेसबुक फिजिशियन वस्तुत: फेसबुक पर उपलब्ध डाक्टरी ज्ञानक उपयोक्ता थिकाह। ज्ञान प्राप्तिले इन्टरनेट वा फेसबुकक उपयोग मे कोनो दोष नहि, दोष छैक

उपलब्ध जानकारीक प्रामाणिकता मे। कारण, इन्टरनेट जँ शास्त्रक भंडार वा विशाल विश्व पुस्तकालय थिक, तँ, ई विशाल दकचल देबाल सेहो थिक जाहिपर जकरा जे किछु मोन होइछ लीखि जाइछ। किन्तु, लिखल सामग्रीक प्रामाणिकता स्थापित करब असंभव छैक। अस्तु, लिखबाक एहि स्वतंत्रता मे सत्य-असत्य, शास्त्र-सम्मत वा अनवधानक कोनो वर्जना नहि। एहन स्थिति मे पाठक सही-गलत आ उचित आ अनर्गलक बीच भेद कोना करताह। फलत:, इन्टरनेट आ फेसबुकक एहन पाठक, जे उपलब्ध लेखकेर सत्य-असत्यक विवेचना मे असमर्थ छथि, सामग्रीक आँखि मूनि अनुसरण केने अपन आ आ दोसरोक हानिक कारण बनि सकैत छथि। हानिकारक जानकारी मूलत: एहन होइछ जे सामाजिक भ्रांति केँ बल दैछ, रोगीले आसान आ ओकर मनोनुकूल होइछ। माने, जे रोगी केँ भावे, सएह बैद फरमाबय। एही अर्थ मे फेसबुक फिजिशियन अपना आ समाजले खतरा साबित होथि से सम्भव। यद्यपि, सलाह देनिहारक उद्देश्य भले अनका सहायता करब होइनि। तखन, एकर निराकरण की? तेँ कनेक एहू पर विचार करी :

1. इन्टरनेट पर उपलब्ध सब सूचना केँ 'बाबाक वाक्य' आ प्रामाणिक नहि बूझी, आ फेसबुक फिजिशियन सँ बची। मुफ्त मे उपलब्ध ज्ञान शास्त्र-सम्मत आ प्रेरित प्रचार, दुनू भ'सकैछ। डाक्टरी सूचनाक अनेको श्रोत छैक। एकाधिक प्रामाणिक श्रोत केँ ताकि कय पढ़ी आ भ्रामक प्रचार आ सूचना सँ बँची।

2. डाक्टरी विषय मे डाक्टरक सलाह ली : 'नीम हकीम खतरा-ए जान' आइओ सत्य अछि।

3. प्रामाणिक सूचना आ स्वास्थ्य- शिक्षाक आवरण मे छिपल व्यावसायिक प्रचार केँ चिन्ही आ ओहि सँ बँची।

4. सरल उपायक लोभ मे तर्क आ बुद्धिक हनन नहि होमय दिऐक।

अंतत:, अहाँक अपन विवेचना अहाँक सबसँ बड़का बल थिक, से जुनि बिसरी।

•••